॥ श्रीवर्द्धमानस्वामिने नमः ॥

श्रीअंतगडदशांग (अंतकृद्दशांग) सूत्र

हिन्दी अर्थ सहित.

प्रकाशकः—

श्रीखरतरगच्छाधिपति पूज्यपाद श्रीसुखसागरजीमहाराज साहबके समुदाय निवासीनी, प्रसिद्ध आर्यारत्न श्रीमतीलक्ष्मीश्रीजी महाराज साहिबा की सुशिष्या श्रीमती सिंहश्रीजी महाराज साहिबा की विदुषी सुशिष्या श्रीमती प्रेमश्रीजी महाराज तथा शान्तिश्रीजी महाराज के सदुपदेश से फलोधी निवासी सौभाग्य मलजी ढढ्ढा की धर्मपत्नी लक्ष्मी बाई की तरफ से भेट.

वीर सम्वत् २४६२ विक्रम सम्वत् १९९३ सन् १९३६

श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय द्वारा जैन प्रेस, कोटा में मुद्रित

मिलने का पताः—श्रीमती साध्वीजी प्रेमश्रीजी शांतिश्रीजी, ठिकानाः—सरदारपुरा निहाल धर्मशाला मु० फलोधी (जोधपुर)

॥ शुभ सन्देश ॥

अवश्य पढ़ें ! सहायता दें !! ज्ञान दान का बड़ा लाभ लें !!!

श्वेताम्बर जैन समाज में ज्ञान प्रचारक अनेक संस्थाएँ हैं परन्तु उन्होंको दूसरे प्रेसों में ग्रन्थों की छपाई करवाने में अधिक खर्च आदि कारणों से ग्रन्थोंका मूल्य अधिक रहता है, आर्य समाजी और ईसाई लोग निजी प्रेसोंमें छपाई कराकर अल्प मूल्य में अपने २ धर्म ग्रन्थों का प्रचार कररहे हैं, इसी तरहसे श्वेताम्बर जैन समाजभी निजी प्रेसमें ग्रंथ छाप कर अल्प मूल्यमें धार्मिक ग्रंथोंका प्रचार करसके इस-लिये महोपाध्यायजी श्रीसुमतिसागरजी महाराजके उपदेशसे कोटा-छवडा आदि के संघने यहां 'जैन प्रेस' खोला है, ज्ञान प्रचारके साथ २ प्रेसकी बचत परोपकार में खर्च करनेका उद्देश रक्खा गया है, अभी हिंदी भाषा में सूत्रों के प्रकाशन का कार्य शुरु है, श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय की विनती स्वीकार करके जिन २ महानुभावों ने सूत्रों के अनुवाद करने का मन्जूर किया है उन्हों के शुभनाम इस प्रकार हैं:—श्रीमान् जिन चारित्र सूरिजी महाराज ठाणांग, श्रीमज्जिन हरिसागरसूरिजी महाराज उववाई, वीरपुत्र श्रीआनन्द सागरजी म० विपाक व अनुत्तरोववाई, श्रीकवीन्द्रसागरजी म० रायप्रसेनीय, पं०प्र० श्रीसूर्यमलजी म० निरियावली, श्रीमती विनय श्रीजी उपासकदशा, श्रीमती प्रमोदश्रीजी प्रश्नव्याकरण, श्रीमती उमंगश्रीजी कल्याणश्रीजी जीवाभिगम, श्रीमती वल्लभश्रीजी समवायांग, श्रीमती बुद्धि श्रीजी ज्ञाताजी और श्रीयुत-ताराचंद जैन ने उत्तराध्ययनजी का अनुवाद करने का मन्जूर किया है तथा आचारांग, सूयगडांग,

जम्बूद्वीपपन्नत्ति, नंदीजी और अनुयोगद्वार आदि के लिये पत्र व्यवहार हो रहा है। इसमें कल्पसूत्र, दशवैकालिक, पर्वकथा संग्रहः, विपाक, अनुत्तरोववाई और अंतगडदशा छपचुके हैं और उववाई, उपासकदशा ज्ञाताजी आदि छपरहे हैं तथा अन्य सूत्रों को छपाने का व ५०० जगह अमूल्य भेट देने का प्रबन्ध हो रहा है।

इस उद्देशकी पूर्त्ति के लिये १५०००) का सहायता फण्डकी योजना की है उसमें उपदेश देकर सहायता दिलवाने वालों के शुभनाम ये है— श्रीमज्जिन हरिसागरसूरिजी महाराज तथा श्रीकवीन्द्रसागरजी म० के उपदेशसे सहायताफण्डमें १५००), उववाईमें १०००) और इन्ही महाराजो के उपदेश से भागलपुर निवासी श्रीमान् राय बहादुर बाबूजी सुखराज रायजी की तरफ से रायप्रशेनीयमें ११००) तथा नाथनगर निवासी श्रीमान् बाबूजी रायकुमारसिंह जी की तरफ से ७००) किसी भी सूत्र के लिये, श्रीमंगलसागरजी म० के उपदेश से १००) विपाकमें, श्रीमती साध्वीजी चन्दन श्रीजीके उ० से २००), श्रीमती जतनश्रीजी के उ० से २००), श्रीमती प्रतापश्रीजी के उ० से १००), श्रीमती दयाश्रीजी के उ० से १००), श्रीमती प्रमोदश्रीजी के उ० से १००), श्रीमती देवश्रीजी के उ० से १००), श्रीमती प्रेमश्रीजी के उपदेशसे १००) सहायताफंडमें, २००) विपाक सूत्र में व ४००) अंतगड दशा में, श्रीमती ज्ञानश्रीजी वल्लभश्रीजी के उ० से २००), श्रीमती गुणश्रीजी के उ० से १००), श्रीमती कनकश्रीजी के उ० से ६०), श्रीमती विनयश्रीजी के उ० से २००) उपासक दशा में, १००) सहायता फंड मे, श्रीमती रत्नश्रीजी के उ० से १००) श्रीमान् दीवान बहादुर सेठ केशरी सिंहजी १००) और श्रीयुत–जुगराजजी सांड की कोशीश से इन्दौर से १००) इस प्रकार भर गये हैं और मुंबई, कलकत्ता, बीकानेर आदिमें भरानेका प्रयत्न शुरू है इसमें से बहुत सी रकम सेठ जी के यहाँ आकर जमा हो चुकी है और बाकी आने वाली है

इसका विशेष विवरण दूसरे सूत्र में छापा जायेगा। इन अनुवादक महाशयों को और सहायदाता उपदेशक महाशयों को हम बारम्बार धन्यवाद देते हुए बड़ा उपकार मानते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी सूत्रों के अनुवाद में तथा सहायता फण्डमें यथोचित सहायता देकर ज्ञान दान के लाभ के भागी बनें और हमारे उत्साह को बढ़ाते रहें।

मिति चैत्र शुदी १ सम्वत् १९९३
तारीख २४ मार्च सन् १९३६

निवेदकः—चन्दनमल रीखबदास लूणिया सेक्रेटरी
श्री हिन्दी जैनागम प्रकाशक सुमति कार्यालय जैन प्रेस, कोटा

॥ ॐ श्रीवर्द्धमानस्वामिने नमः ॥

श्रीअंतगडदसा (अंतकृद्दशा) सूत्र हिंदी अर्थ सहित.



टीकाकार श्रीअभयदेवसूरिजी महाराजने 'अंतकृद्दशा' का ऐसा अर्थ किया है कि 'अंत' यानी चार गतिरूप संसारमें जन्म-मरणादि परिभ्रमण करने रूप भवका अंत जिन्हों ने किया है वे अंतकृत कहे जाते हैं अर्थात् इस भवमें उत्कृष्ट शुद्ध तप-संयमका आराधन करके अंतसमयमें क्षपकश्रेणिमें चढकर शुक्ल ध्यानसे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय ये चार घनघाति कर्मों का क्षय करके केवल ज्ञान, केवल दर्शन प्राप्तकर उसी समय नामकर्म, गौत्रकर्म, वेदनीयकर्म और आयुकर्म ये चार शेष अघातिये कर्मोंका सर्वथा क्षय करके मुक्तिमें पंहुचे. इस प्रकार जिन्हों ने संसारका अंत करादिया है वे अंतकृत कहे गये हैं। इस सूत्रमें आठ वर्ग (विभाग) हैं, प्रथम वर्गमें दश अध्ययन कहे हैं, इसमें भवका अंत करने वाले अंतकृत केवलियों के दश अध्ययन होनेसे इस सूत्रका नाम अंतकृतदशा (अंतगड दसा) कहा है।

॥ प्रथम वर्गका पहला अध्ययन ॥

मूल– ते णं काले णं ते णं समए णं चंपानामं नगरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, वन्नओ ।

अर्थ—उसकाल में (चौथे आरे में), उससमय में (इस सूत्रकी प्रथम व्याख्या करते समय में) चंपा नामकी नगरी थी, उसके बाहर ईशान कोण में पूर्णभद्र नामका चैत्य था, उसका वर्णन 'ज्ञाताधर्मकथा' अथवा 'उववाई' सूत्रानुसार समझ लेना ।

मूल– ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मे समोसरिए, परिसा निग्गया जाव पडिगया ।

अर्थ–उसकाल उससमयमें आर्यश्रीसुधर्मास्वामी पूर्णभद्र चैत्यमें समवसरे (आकर विराजे), उन्हांको वंदना करने के लिये नगरीमें से पर्षदा निकली (लोगोंका समुदाय निकला), यावत् धर्मदेशना सुनकर लोग पीछे अपने २ घर पहुंचे.

मूल– ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मस्स अंतेवासी अज्जजंबू जाव पज्जुवासाति, एवं वयासी– जइ णं भंते ! समणेणं आदिकरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, अट्ठमस्स णं भंते अंगस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ।

अर्थ-उसकाल उससमय में आर्यश्रीसुधर्मास्वामी के अंतेवासी (पासमें रहने वाले शिष्य) आर्यश्रीजम्बूस्वामी यावत् गुरुकी सेवा करते हुए इस प्रकार बोले हे भगवन्! श्रमण भगवान् धर्मकी आदि (अपने २ शासन की प्रवृत्ति) करने वाले यावत् सिद्धिपद (मुक्ति) को पाये हुए, श्रीमहावीरस्वामीने 'उपासकदशा' नामक सातवें अंगका जो अर्थ आपने बतलाया वैसा कहा है. तो अब हे भगवन्! 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंगका श्रमण भगवान् यावत् सिद्धिपद को पाए हुए श्रीमहावीरस्वामीने कैसा अर्थ कहा है वो वर्णन करिये.

मूल-एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पन्नत्ता।

अर्थ—सुधर्मास्वामी अपने शिष्यको कहते हैं कि हे जम्बू! इस प्रकार निश्चयसे श्रमण भगवान् यावत् मुक्तिको पाये हुए श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंगके आठ वर्ग कहे हैं.

मूल-जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अट्ठ वग्गा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते! वग्गस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता?।

अर्थ—हे भगवन्! यदि श्रमण भगवान् यावत् मुक्तिमें विराजे हुए श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंगके आठ वर्ग कहे हैं तो हे भगवन्! 'अन्तगडदसा' के पहले वर्गके श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि प्राप्त

श्रीमहावीरस्वामीने कितने अध्ययन कहे हैं ?.

मूल—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—

गोयम १ समुद्द २ सागर ३, गंभीरे ४ चेव होइ थिमिते ६ य ।
अयले ६ कंपिल्ले ७ खलु, अक्खोभ ८ पसेणती ९ विण्हू १० ॥ १ ॥

अर्थ—हे जम्बू ! इसप्रकार निश्चयसे श्रमण भगवान् यावत् सिद्धगति पाये हुए श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगड-दसा' नामक आठवें अंगके प्रथम वर्ग में दश अध्ययन कहे हैं, वे ये हैं:—१ गौतम, २ समुद्र, ३ सागर, ४ गंभीर, ५ स्तिमित, ६ अचल, ७ कांपिल्य, ८ अक्षोभ, ९ प्रसेन और १० विष्णु. इन दश कुमारों के नामसे दश अध्ययन कहे हैं ।

मूल— जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ— हे भगवन् ! श्रमण भगवन् यावत् अष्टकर्म रहित होकर सिद्ध हुए ऐसे श्रीमहावीरस्वामीने 'अंतगड

दसा' नामक आठवें अंगके पहले वर्ग में दश अध्ययन कहे हैं, तो अब हे भगवन्! 'अंतगडदसा' के पहले अध्ययन का श्रमण भगवान् यावत् सिद्धिगति को पाये हुए श्रीमहावीरस्वामीने किस प्रकार का अर्थ कहा है, वह प्रकाशित करिये.

मूल– एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वारवतीणामं नगरी होत्था, दुवासजोयणायामा नवजोअणवित्थिण्णा धणवइमतिनिम्माया चामीकरपागारा नाणामणिपंचवन्नकविसीसगमंडिया सुरम्मा अलका पुरिसंकासा पमुदितपक्कीलिया पच्चक्खं देवलोगभूया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय हे जम्बू! उसकाल उस समय द्वारिका नामकी नगरी थी, वह बारह योजन लम्बी, नव योजन चौड़ी थी, जिसको कुबेर देवने अपनी बुद्धि से (देवशक्ति से) बनाई थी, वह स्वर्ण का प्रकार (किला) वाली, विविध प्रकार के पांच रंग के मणिमय कांगरों से सुशोभित, मनोहर, अलका नामकी (देवलोक में) कुबेर की नगरी के जैसी सुंदर थी, वहां के निवासी मनुष्य हर्ष वाले तथा क्रीड़ा करने वाले होने से वह नगरी भी हर्ष वाली और क्रीड़ावाली, प्रत्यक्ष स्वर्ग समान, दर्शकों को प्रसन्नता कारक, देखने योग्य, अभिरूप अर्थात् मनोहर रूपवाली और प्रतिरूप अर्थात् देखने वालों को उसकी मनोहरता देखते हुए परिश्रम मालूम न हो ऐसी रमणीक लगती थी.

मूल– तिसे णं वारवतीनयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं रेवतते नामं पव्वते होत्था,

तत्थ णं रेवतते पव्वते नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, वन्नओ, सुरप्पिए नामं जक्खायतणे होत्था, पोराणे, से णं एगेणं वणसंडेणं परिक्खित्ते, असोगवर पायवे.

अर्थ—उस द्वारिका नगरी के बाहर उत्तर और पूर्व दिशा के बीच की दिशा में अर्थात् ईशान कोंण में रैवतक (गिरनार) नामक पर्वत है उस पर्वत के ऊपर नन्दनवन नामक उद्यान था, उसका वर्णन कहना. उस उद्यान में सुरप्रिय नामक यक्षायतन (चैत्य) था, वह प्राचीन अर्थात् बहुत वर्षों का बना हुआ था, उसके चारों तरफ एक वनखंड था, उसके मध्यभाग में अशोक नामक श्रेष्ट वृक्ष था।

तत्थ णं बारवतीनयरीए कण्हे णामं वासुदेवे राया परिवसाति, महता रायवन्नओ।

अर्थ—उस द्वारिका नगरी में श्रीकृष्ण नामक वासुदेव राजा राज्य करतेथे। वे हिमवंत पर्वत के समान बड़े, मलयाचल, मंदराचल और महेन्द्र के जैसे सारभूत थे इत्यादि राजाका वर्णन 'ज्ञाता' सूत्रके प्रथम अध्ययन में मेघकुमार के राज्याभिषेकके अधिकर में बतलाये मुजब समझ लेना।

मूल—से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पचण्हं महावीराणं, पज्जुन्नपामोक्खाणं अध्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं, महसेणपामोक्खाणं

छप्पण्णाए बलवगसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाते वीरसाहस्सीणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं रायसाहस्सीणं, रुप्पिणिपामोक्खाणं सोलसण्हं देविसाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं ईसर जाव सत्थवाहाणं बारवतीए नयरीए अद्धभरहस्स य समत्थस्स आहेवच्चं जाव विहरति ।

अर्थ—कृष्ण वासुदेव उस द्वारिका नगरी में समुद्रविजयजी वगैरह दश दशार्ह *, बलदेव वगैरह पांच महायुद्धवीर, प्रद्युम्न वगैरह साडे तीन क्रोड कुमार, सांब वगैरह साठ हजार दुर्दांत (जीते न जांय ऐसे उद्धत) कुमार, महासेन वगैरह छप्पन्न हजार बलवान् पुरुष, वीरसेन वगैरह इक्कीस हजार वीर पुरुष, उग्रसेन वगैरह सोलह हजार मुकुटबद्ध राजा, रुक्मणि वगैरह सोलह हजार राणियें, अनंगसेना वगैरह कई हजार गणिकायें, तथा दूसरे भी बहुतसे सामान्य राजा, युवराज, श्रेष्ठी, इभ्य, यावत् सार्थवाह वगैरह सम्पूर्ण द्वारिका नगरी के तथा अर्ध भरतक्षेत्र के आधिपतिपना स्वामीपना पालन करते हुए रहते थे ।

---

*समुद्र विजय १, अक्षोभ २, स्तिमित ३, सागर ४, हिमवान ५, अचल ६, धरण ७, पूरण ८, अभिचन्द्र ९ और वसुदेव १०, ये दश दशार्ह बड़े शूरवीर पूजा के योग्य उत्तम पुरुष थे।

मूल– तत्थ णं बारवतीए अंधगवण्ही णामं राया परिवसति, महता हिमवंत, वअन्नो.

अर्थ—उस द्वारिका नगरी में अंधकवृष्णि नामक बडे यादवराज निवास करते थे, वे हिमवंत पर्वत वगैरह के जैसे सारभूत थे, उनका वर्णन करना।

मूल– तस्स णं अंधकवण्हिस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्था, वन्नओ।

अर्थ—अंधकवृष्णि राजा के धारिणी नामक राणी थी, उनका वर्णन कहना।

मूल– तते णं सा धारिणी देवी अन्नदा कदाइं तंसि तारिसगंसि सयाणिज्जंसि एवं जहा महब्बले। "सुमिणदंसणकहणा, जम्मं बालत्तणं कलाओ य। जोव्वणपाणिग्गहणं, कंता पासायभोगा य ॥१॥" नवरं गोयमो नामेणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगादिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, अट्ठट्ठओ दाओ।

अर्थ—वह धारिणी राणी एक समय श्रेष्ठ, सुन्दर और कोमल शय्या पर सोइ हुई थी, जिस प्रकार 'भगवती' सूत्र में 'महाबल' कुमार का अधिकार कहा है, उसी प्रकार यहाँ पर भी मूल गाथा में कहे अनुसार जानना, अर्थात् स्वप्न-दर्शन–स्वप्न में सिंह का देखना, कथन–राजा से स्वप्न का फल पूछना, पुत्र का जन्म होना, उसकी बाल्यावस्था,

कलाओं का अभ्यास, यौवन प्राप्ति, पाणि ग्रहणका महोत्सव, स्त्रियोंके साथ महलों में काम भोग वगैरह सब 'महाबल' कुमार की तरह समझ लेना। इसमें विशेष यह है कि धारिणीरानी के पुत्र का नाम गौतम कुमार रखने में आया था और उनके पिताने राजाओं की आठ कन्याओं के साथ एक ही दिन में पाणि ग्रहण कराया था तब उन कन्याओं के पिताओं ने आठ २ स्वर्ण कोटि वगैरह का दान-डायजा में दिया था।

मूल-ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठनेमी आदिकरे जाव विहरति, चउव्विहा देवा आगया, कण्हे वि णिग्गए।

अर्थ—उसकाल उससमय में अरिहन्त भगवान् अरिष्टनेमि धर्म की आदि करने वाले वगैरह विशेषण युक्त यावत् मुक्ति की इच्छा वाले द्वारिका नगरी के नंदनवन नामक उद्यान में समवसरे और तप-संयम में आत्मभावना करते हुए रहने लगे, उस समय वहां पर चार प्रकार के देव, देवी और महाराजा श्रीकृष्ण वासुदेव भी भगवान् को वंदना करने आये, वंदना करके धर्म देशना सुनने लगे।

मूल-तते णं तस्स गोयमस्स कुमारस्स जहा मेहे तहा णिग्गते, धम्मं सोच्चा जं नवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, देवाणुप्पिया णं अंतिए पव्वयामि, एवं जहा मेहे जाव अणगारे जाते जाव

इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरति ।

अर्थ—उस के बाद वह गौतम कुमार भगवान् का आगमन सुनकर, ज्ञाता सूत्रानुसार मेघ कुमार की तरह बडी धूमधाम से वंदना करने के लिये भगवान् के पास आया, विधि पूर्वक वंदना नमस्कार करके धर्म देशना श्रमण कर प्रतिबोध पाया, इस में विशेष यह है कि उन्हों ने भगवान् से कहा "हे देवानुप्रिय ! मैं अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर फिर आप देवानुप्रिय के पास दीक्षा अंगीकार करूं" इत्यादि मेघकुमार की तरह यावत् उनसे दीक्षा ग्रहण की; इरियासमिति आदि अष्ट प्रवचन माता सहित यावत् इस निर्ग्रन्थ प्रवचन को आगे कर विचरण करने लगे ।

मूल—तते णं से गोयमे अणगारे अन्नदा कयाइ अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरति ।

अर्थ—उस के बाद गौतम अणगारने एक समय अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् के तथाप्रकार के स्थविर मुनिओं के पास सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया, अभ्यास कर उपवास, बेला वगैरह बहुत तप करते हुए यावत् अपनी आत्मा को तप-संयम में भावन करते हुए रहने लगे ।

मूल— ते अरिहा अरिट्ठनेमी अन्नदा कदाइ बारवतीतो नंदणवणातो पडिनिक्खमति बहिया जणवयवि-

हारं विहरति ।

अर्थ—उसके बाद वे अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् एक समय द्वारिका नगरी के नंदनवन नामक उद्यान से विहार कर बाहर के देशों में विचरने लगे।

मूल—तते णं से गोयमे अणगारे अन्नदा कदाई जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरेत्तए। एवं जहा खंदओ तहा बारस भिक्खुपडिमाओ फासेति, फासित्ता गुणरयणं पि तवोकम्मं तहेव फासेति निरवसेसं, जहा खंदतो तहा चिंतेति, तहा आपुच्छति, तहा थेरेहिं सार्द्धं सेत्तुंजे दुरूहति, मासियाए संलेहणाए बारस वरिसाइं परियाए जाव सिद्धे। (सू० १)

अर्थ—इसके बाद जहां पर अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् विराजे हुए थे वहां पर एक समय गौतम अणगार आये, आकर अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् की तीन वार प्रदक्षिणा करके वंदना की नमस्कार किया,

वंदना नमस्कार करके हाथ जोडकर इस प्रकार बोले हे भगवन्! मैं इच्छा करता हूँ यदि आप आज्ञा प्रदान करें तो एक मास की (एक महीना वगैरह की बारह) भिक्षु प्रतिमाओं को अंगीकार करके मैं विचरूं। तब भगवान् ने वैसा करने की आज्ञा दी। इस प्रकार स्कंदक मुनि की तरह गौतम अणगारने बारह भिक्षु प्रतिमाओं को वहन किया, वहन करके गुणरत्न संवत्सर नामक तप भी उसी प्रकार संपूर्ण आराधन किया। फिर एक समय स्कंदक मुनिकी तरह गौतम अनगारने अनशन करने का विचार किया, उसी प्रकार भगवान् से पूछकर आज्ञा लेकर और उसी प्रकार स्थविर मुनियों के साथ शत्रुंजय गिरि ऊपर चढ़े, एक मास की संलेखना (अनशन) कर, बारह वर्ष की चारित्र पर्याय पालन कर, यावत् सिद्धि पद को पाये। यहां पर गौतम अणगार का सब अधिकार 'भगवती' सूत्र में बतलाये हुए स्कंदक मुनि के चरित्र की तरह जान लेना चाहिये। विशेष यह है यहां पर जो भिक्षु प्रतिमाएँ कही हैं उनका स्वरूप इस प्रकार है:—पहली प्रतिमा में एक मास तक एकान्तरे उपवास, दूसरी प्रतिमामें दो मास तक दो दो उपवास, तीसरी प्रतिमा में तीन मास तक तीन २ उपवास, चौथी प्रतिमा में चार मास तक चार २ उपवास, पांचवीं प्रतिमा में पांच मास तक पांच २ उपवास, छट्ठी में छः मास तक छ २ उपवास, सातवीं में सात मास तक सात २ उपवास, आठवीं प्रतिमा सात अहोरात्रि की, नववीं सात अहोरात्रि की, दशमीं सात अहोरात्रि की, ग्यारहवीं एक अहोरात्रि की और बारहवीं एकरात्रि की। इन प्रतिमाओं का विशेष स्वरूप "दशाश्रुत स्कंध" सूत्र में से जाम लेना।

अब गुणरत्न संवत्सर तपका स्वरूप कहते हैं:—इसमें पाहिले महीने में हमेशा एकांतरे उपवास करना (यानी पंद्रह उपवास और पंद्रह पारणे), दिन में उत्कटुक (गाय दुहने जैसा) आसन कर सूर्य की तरफ मूंह करके रहना और रात्रि में खुले शरीर वीरासन से रहना और दूसरे महीने में छट्ठ २ तप करना, तीसरे महीने में अट्ठम २ तप करना, इस प्रकार एक २ मास में एक २ उपवास बढ़ाते २ सोलवें मास में चौतीस भक्त यानी सोलह सोलह उपवास करने, दूसरी सब विधि प्रथम मास की तरह जानना। ।सू० १।

मूल—एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं पढमस्स वग्गस्स पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नते ॥ १ ॥

अर्थ—इस प्रकार निश्चय करके हे जंबू! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि गति को पाये हुये श्री महावीर स्वामी ने अंतगडदसा नामक आठवें अंग के प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह (ऊपर कहा हुआ) भाव प्रकाशित किया है।

॥ इति प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

मूल—एवं जहा गोयमो तहा सेसा, वण्हि पिया धारिणी माता समुद्दे २ सागरे ३ गंभीरे ४ थिमिये ५ अयले ६ कंपिल्ले ७ अक्खोभे ८ पसेणती ९ विण्हुए १० एए एगगमा। पढमो वग्गो दस अज्झयणा पन्नत्ता (सू२)

अर्थ—इसी तरह जिस प्रकार गौतम अनगार का अध्ययन कहा, उसी प्रकार शेष बाकी के नव अध्ययन भी कहने। अंधकवृष्णि पिता, धारिणी माता, पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं:-दूसरा समुद्र, तीसरा सागर, चौथा गम्भीर पांचवाँ स्तिमित, छट्ठा अचल, सातवाँ कपिल, आठवाँ अक्षोभ, नववाँ प्रसेन और दसवाँ विष्णु, इन कुमारों के नाम के अध्ययन सर्व एक ही गमा वाले (समान अधिकार वाले) हैं। इस प्रकार पहले वर्ग में दस अध्ययन कहे गये हैं।

॥ इति प्रथम वर्ग के दस अध्ययन समाप्त ॥

॥ अथ दूसरा वर्ग ॥



मूल—जइ णं भंते ! दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ।

अर्थ—श्रीजम्बू स्वामी श्रीसुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! श्रीमहावीर भगवान् ने पहले वर्ग का अर्थ आपने कहा वैसा कहा है; अब दूसरे वर्ग का उत्क्षेप (प्रस्तावना) कहो अर्थात् हे गुरु देव ! श्रमण भगवान्

श्रीमहावीरस्वामीने आठवें अंग के दूसरे वर्ग का कैसा अर्थ कहाहै सो प्रकाशित करो ?

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं बारवतीए णगरीए वण्हि पिया धारिणी माता-अक्खोभ १ सागरे २ खलु, समुद्द ३ हिमवंत ४ अचलनामे ५ य। धरणे ६ य पूरणे ७ वि य, अभिचंदे ८ चेव अट्ठमए ॥ १ ॥

अर्थः—सुधर्म स्वामी कहते हैं कि हे जम्बू! उसकाल उससमय में द्वारिका नामक नगरी थी, उसमें पूर्वोक्त अंधकवृष्णि नामक पिता, धारिणी माता जिन के आठ पुत्रों के नामसे अलग २ आठ अध्ययन इस दूसरे वर्ग में श्रमण भगवान् महावीरस्वामी ने कहे हैं। उन्होंके नाम इस प्रकार हैं:-पहला अक्षोभ, दूसरा सागर, तीसरा समुद्र, चौथा हिमवंत, पांचवाँ अचल, छट्टा धरण, सातवाँ पूरण और आठवाँ अभिचन्द्र।

मूल—जहा पढमो वग्गो तहा सव्वे अट्ठ अज्झयणा, गुणरयणतवोकम्मं सोलसवासाइं परियाओ, सेत्तुंजे मासियाए संलेहणाए सिद्धि (सू० ३)

अर्थ—जिस तरह प्रथम वर्ग कहा, उसी तरह इस दूसरे वर्ग के सब आठों अध्ययन कहने चाहिये। इन

आठों कुमारों ने बारह भिक्षु प्रतिमाओं को वहन की, गुण रत्न संवत्सर नामक तप भी किया और सालह २ वर्ष चारित्र पर्याय पालन करके एक २ महीने की संलेखना (अनशन) कर शत्रुंजय तीर्थ के ऊपर सिद्धि पद पाया।

॥ इति दूसरे वर्ग के आठ अध्ययन समाप्त ॥

॥ अथ तीसरा वर्ग ॥

मूल—जइ णं भंते ! तच्चस्स उक्खेवओ।

अर्थ—हे भगवन्! श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने 'अंतगडदसा' नामक आठवें अंग के दूसरे वर्ग का आपने बतलाया वैसा अर्थ कहा। अब तीसरे वर्ग का भगवान् ने कैसा भाव प्ररूपण किया है वह बतलाइये ?

मूल—एवं खलु जंबू! तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—अणीयसेणे १, अणंतसेणे २, अणिहय ३, विऊ ४, द्वेजसे ५, सत्तुसणे ६, सारणे ७, गए ८, सुमुहे ९, दुम्मुहे १०, कूवए ११, दारुए १२, अणादिट्ठी १३।

अर्थ—श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं कि इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने अंतगडदसा के तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन कहे हैं, वे ये हैं:-पहला अनिकसेन, दूसरा अनंतसेन, तीसरा अनिहत, चौथा रिपु, पांचवाँ देवसेन, छट्ठा शत्रुसेन, सातवाँ सारण, आठवाँ गजसुकुमाल, नववाँ सुमुख, दसवाँ दुर्मुख, ग्यारहवाँ कूपक, बारहवाँ दारूक और तेरहवाँ अनादृष्टि, इन तेरह कुमारों के नाम से तेरह अध्ययन कहे हैं।

मूल— जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अंतगडदसाणं तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, तच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स अंतगडदसाणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—हे गुरु देव ! यदि श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्रीमहावीर स्वामी ने अंतगडदसा के तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन कहे हैं तो अंतगडदसा के तीसरे वर्ग में पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है ?

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं भद्दिलपुरे नामं नगरे होत्था, वन्नओ । तस्स णं भद्दिलपुरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सिरिवणे नामं उज्जाणे होत्था, वन्नओ । जितसत्तु राया ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! उस काल उस समय में भद्दिलपुर नामक नगर था। उस नगरका वर्णन करना। उस भद्दिलपुर नगर के बाहर उत्तर और पूर्व दिशा के बीच अर्थात् ईशान कोंण में श्रीवन नामक उद्यान

था। उस उद्यान का वर्णन करना। उस भद्दिलपुर नगर में जितशत्रु नामक राजा राज्य करता था। उस का भी वणर्न कर देना।

मूल—तत्थ णं भद्दिलपुरे नयरे नागे नामं गाहावइ होत्था अड्ढे।

अर्थ—उसी भद्दिलपुर नगर में समृद्धिवान् और प्रसिद्ध नाग नामक गाथापति सेठ रहता था।

मूल—तस्स णं नागस्स गाहावतिस्स सुलसा नामं भारिया होत्था, सुमाला जाव सुरूवा।

अर्थ—उस नाग नामक गाथापति के सुकोमल, रूप-लावण्ययुक्त, अतिसुन्दर और पतिव्रता सुलसा नाम की स्त्री थी।

मूल—तस्स णं नागस्स गाहावतिस्स पुत्ते सुलसाए भारियाए अत्तए अणीयसेणे नाम कुमार होत्था, सुमाले जाव सुरूवे पंच धाइपरिक्खित्ते, तं जहा—खीरधाइ जहा दढपइन्ने जाव गिरिकंदरमल्लीणेव चंपग—वरपायवे सुहंसुहेणं परिवड्ढाति।

अर्थ—उस नाग नामक गाथापति सेठ का पुत्र और सुलसा नामक पत्नि का आत्मज अनिकसेन नामक कुमार था, वह सुकुमार, सुन्दर और पुण्यशाली था जिस का पालन पोषण पांचधात्रीमाताओं द्वारा होता था,

वह बतलाते हैं:-पहली क्षीर धात्री-दूध पिलाने वाली, दूसरी मंजन धात्री-स्नान कराने वाली, तीसरी मंडन धात्री-अलंकार पहनाने वाली, चौथी क्रीड़ापन धात्री-क्रीड़ा कराने वाली और पांचवी अंक धात्री-गोद में बिठा कर खिलाने वाली। जिस प्रकार 'राय प्रशेनीय' सूत्र में बतलाये हुए 'दृढ़ प्रतिज्ञ' की तरह यहां पर भी सब कहना चाहिये, यावत् पर्वत की गुफा में रहे हुए श्रेष्ठ चंपक के वृक्ष की तरह सुख से वह कुमार बढ़ने लगा।

मूल-तते णं तं अणियसं कुमारं सातिरेगअट्ठवासजायं अम्मापियरो कलायरिय जाव भोगसमत्थे जाते यावि होत्था।

अर्थ—इसके बाद वह अनिकसेन कुमार जब आठ वर्ष से अधिक आयु का हुआ तब उसके माता-पिता ने कलाचार्य के पास भेज कर कलाओं का अध्ययन कराया, अनुक्रम से यावत् वह भोग भोगने के लिये समर्थ हुआ।

मूल-तते णं तं अणियसं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाणेत्ता अम्मापियरो सरिसियाणं जाव (सरिसव्वयाणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं सरिसेहिंतो कुलेहिंतो आणिल्लियाणं) बत्तीसाए इब्भवरकन्नगाणं एगादिवसे पाणिं गेण्हावेंति।

अर्थ—उसके बाद अनिकसेन कुमार को बाल्यावस्था से मुक्त जानकर उस के माता-पिता ने समान वय-वाली, लावण्य, रूप, यौवन और गुण में समान और समान कुलों में से प्राप्त की हुई बड़े धनाढ्य सेठियों की बत्तीस उत्तम कन्याओं के साथ एकही दिन में कुमार का पाणि ग्रहण करवाया।

मूल–तते णं से नागे गाहावइ अणीयस्स कुमारस्स इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयति, तं जहा बत्तीसं हिरन्नकोडीओ जहा महब्बलस्स जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ।

अर्थ—उस के बाद उस नाग गाथापति ने अनिकसेन कुमार को प्रीति दान दिया, वह इस प्रकार है :— बत्तीस स्वर्ण कोटि वगैरह जिस प्रकार 'भगवती सूत्र' में महाबल कुमार के अधिकार में कहा है, उसी प्रकार यहां पर भी सब कहना। यावत् श्रेष्ठ महलपर रहकर मृदंग के मस्तक फूटते न हों? इस प्रकार संगीत वगैरह पूर्वक बत्तीस स्त्रियोंके साथ पांचों इन्द्रियों के भोगों को भोगने लगा।

मूल–ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठनेमी जाव समोसढे, सिरिवणे उज्जाणे जहा जाव विहरति, परिसा णिग्गया।

अर्थ-उस काल उस समय में अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् यावत् श्रीवन नामक उद्यान में पधारे और ठहरने के लिये यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करके वहां विराजे तब भगवान् को वंदना करने के लिये नगरमें से पर्षदा निकली।

मूल—तते णं तस्स अणीयसेणस्स तं जहा गोयमे तहा नवरं समाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जाति, वीसं वासातिं परियाओ, सेसं तहेव जाव सेत्तुंजे पव्वते मासियाए संलेहणाए जाव सिद्धे।

अर्थः—उसके बाद अनिकसेन कुमार को भगवान् के आगमन की खबर होते ही वह भगवान् को वंदना करने के लिये गया, भगवान् की धर्म देशना सुनी वगैरह जिस प्रकार पहले गौतम कुमार का अधिकार कहा है, उसी प्रकार यहां पर भी सब कहना। विशेष यह कि इन्होंने दीक्षा लेकर सामायिक वगैरह चौदह पूर्वों का अभ्यास किया, वीस वर्ष चारित्र पर्याय का पालन किया। शेष जीवन वृतान्त उसी प्रकार कहना। यावत् शत्रुंजय तीर्थ ऊपर एक-महीने की संलेखना (अनशन) कर सिद्धि पद को पाया।

मूल—एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स पढमज्झणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने

आठवें अंग अंतगडदसा के तीसरे वर्ग के पहले अध्ययन का यह अर्थ कहा है।

मूल— एवं जहा अणीयसेणे एवं सेसा वि अणंतसेणे जाव सत्तुसेणे छ अज्झयणा एक्कगमा, बत्तीसओ दाओ, वीसंवासा परियातो, चोद्दसपुव्वा, सेतुंजे सिद्धा ॥ छट्ठमज्झयणं सम्मत्तं ॥ (सू० ४)

अर्थः—इस प्रकार जैसे अनिकसेन कुमार मुनि का अधिकार कहा, उसी प्रकार शेष अनंतसेन, अनिहत, रिपुसेन, देवसेन और शत्रुसेन तक के छः अध्ययन एक ही समान जान लेना। सबको बत्तीस २ कन्यायें, बत्तीस २ कोटि का दहेज दिया था तथा छओं मुनिओंने बीस वर्षका चारित्र पर्याय पालन किया, चौदह पूर्वोंका अभ्यास किया और शत्रुंजय गिरि ऊपर सिद्धि प्राप्त की, वगैरह सब अधिकार समान जान लेना। सूचनाः— ये छओं कुमार वसुदेवजी तथा देवकी देवी के पुत्र थे परन्तु सुलसा ने इन का पालन पोषण किया था। इसका विशेष खुलासा 'गजसुकुमाल' के आठवें अध्ययन में सूत्रकार ने बतलाया है, वहां से समझ लेना।

॥ इति छ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ६ ॥

मूल—तेणं काले णं ते णं समए णं बारवतीए नयरीए जहा पढमे नवरं वसुदेवे राया, धारिणी देवी, सीहो सुमिणे, सारणे कुमारे, पन्नासतो दाओ, चोद्दसपुव्वा, वीसंवासा परियातो, सेसं जहा गोयमस्स जाव

सेत्तुंजे सिद्धे ॥ (सू०५) सत्तममज्झयणं सम्मत्तं ॥ ७ ॥

अर्थः—उस काल उस समय में द्वारिका नामक नगरी थी, वगैरह जिस प्रकार प्रथम अध्ययन में कहा, उसी प्रकार कहना, विशेष यह है कि – वसुदेव राजा, धारिणी देवी, स्वप्न में सिंह का दर्शन, सारण नामक कुमार का जन्म, पचास स्त्री, पचास क्रोड़ का दहेज, दीक्षा, चौदह पूर्वोंका अभ्यास, वीस वर्ष का चारित्र पर्याय, शेष सब वृतान्त गौतम कुमार मुनि की तरह कहना यावत् शत्रुंजय सिद्धि पद को प्राप्त हुए (सू० ५)

॥ इति सप्तम अध्ययन समाप्त ॥ ७ ॥

मूल —जइ णं भंते उक्खेवओ अट्ठमस्स ।

अर्थः— जम्बू स्वामी, श्री सुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे गुरु देव ! श्री महावीर स्वामीने सातवें अध्ययन का ऐसा अर्थ कहा तो अब आठवें गजसुकुमाल के अध्ययन का कैसा अर्थ कहा है सो बतलाइये ?

मूल— एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं बारवतीए नयरीए जहा पढमे जाव अरहा अरिट्ठनेमी सामी समोसढे ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! उस काल उस समय में द्वारिका नामक नगरी थी, वगैरह जैसा प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन में कहा है, उसी प्रकार इस अध्ययन में भी जान लेना, परंतु विशेष यह है कि वसुदेव राजा, देवकी देवी इत्यादि यावत् अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् समोवसरे ।

मूल——ते णं काले णं ते णं समए णं अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासि छ अणगारा भायरो सहोदरा होत्था, सरिसया सरित्तया सरिव्वया नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासा सिरिवच्छंकियवच्छा कुसुम-कुंडलभद्दलया नलकुव्वरसमाणा ।

अर्थः—उस काल उस समय में अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के शिष्य छः अणगार बन्धु सहोदर एक ही माता से उत्पन्न हुए थे, वे देखने वालों को रूप में समान मालूम होते थे। उनकी चमड़ी का रंग समान था। अवस्था में भी समान दीखते थे। काला कमल, भेंस का सींग, गली का रंग और अलसी के पुष्प क समान शरीर की प्रभा वाले थे। उनका वक्षःस्थल श्री वत्स (श्री वच्छ) से अंकित था। धतूरे के पुष्प के समान आकृति वाले, कानोंके आभूषणों से सुशोभित थे। यह विशेषण उनकी बाल्यावस्था के आधार पर कहा है, ऐसा कई आचार्यों का कथन है और दूसरे आचार्य कहते हैं कि पुष्प के गर्भ के समान सुकोमल थे तथा कुवेर के

पुत्र नल और कूबर के समान थे यह विशेषण लोकरूढी से दिया है, क्योंकि देवों के पुत्र होते ही नहीं।

मूल — तते णं ते छ अणगारा जं चेव दिवसं मुंडा भवेत्ता अगाराओ अणगरियं पव्वातिया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामो णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवकम्मसंजमेणं तवसा अप्पाणं भावे माणे विहरित्तए।

अर्थ—उसके बाद वे छओं साधु जिस दिन से गृहस्थावास छोड़ कर मुंड होकर अणगार हुए, उसी दिन अरिहंत अरिष्ठनमि भगवान् को वंदना कर, नमस्कार किया। वंदना–नमस्कार करके इस प्रकार बोले, हे भगवान्! हम इच्छा करत हैं कि आपकी आज्ञा प्राप्त कर जीवन पर्यन्त निरंतर छट्ठ २ तप कर्म करके तप संयम म आत्मा को भावन करते हुए विचरते रहें।

मूलः—अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह।

अर्थ—भगवान् ने फरमाया, हे देवानुप्रियो! तुमको सुख हो वैसा करो, इस कार्य में विलंब मत करो।

मूल— तते णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा जावजीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरेंति

अर्थः—उसके वाद छ अणगार अरिहन्त अरिष्ठनेमि भगवान् की आज्ञा पाकर जीवन पर्यन्त छट्ठ २ की तपश्चर्या करते हुए विचरने लगे।

मूल—तते णं ते छ अणगारा अन्नया कयाइं छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, जह—गोयमो जाव इच्छामो णं छट्ठक्खमणस्स पारणए तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा तिहिं संघाडएहिं वारवतीए नगरीए जाव अडित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया !।

अर्थ—उसके वाद उन छओं अणगारोंने एक समय छट्ठ तप के पारणे के दिन पहली पौरसी में सज्झाय की, जिस प्रकार गौतम स्वामी के गौचरी जाने का अधिकार है, उसी माफिक सब कहना, यावत् हम इच्छा करते हैं कि छट्ठ तप के पारणे के लिये आपकी आज्ञा पाकर हम तीन सिंघाटक (दो २ के तीन समुदाय) करके द्वारिका नगरी में पर्यटन करें, तब भगवान् ने कहा, हे देवानुप्रियो ! तुम अपनी इच्छानुसार सुख उत्पन्न हो वैसा करो।

मूल—तते णं ते छ अणगारा अरहया अरिट्ठनेमिणा अब्भणुण्णाया समाणा अरह अरिट्ठनेमिं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ सहसंबवणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता तिहिं संघाडएहिं अतुरियं जाव अडंति।

अर्थः- उसके बाद उन छओं अणगारोंने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञा पाकर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना-नमस्कार करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से और सहस्राम्रवन (हजारों आंबों के वृक्षों का बाग) से बाहर निकले। बाहर निकल कर दो २ के तीन सिंघाड़े होकर चपलता रहित शान्ति से द्वारिका नगरी में आहार के लिये पर्यटन करने लगे।

मूल—तत्थ णं एगे संघाडए वारवतीए नगरीए उच्चनियमाज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे अडमाणे वसुदेवस्स रन्नो देवतीए देवीए गेहे अणुपविट्ठे।

अर्थ—इनमें से एक सिंघाड़ा ने द्वारिकानगरी में ऊंच, नीच और मध्यम कुलों में (बड़े, छोटे और साधारण गृहों में) आहार पानी के लिये पर्यटन करते २ वसुदेव राजा की देवकी नामक राणी के घर में प्रवेश किया।

मूल—तते णं सा देवती देवी ते अणगारे एज्जमाणे पासति, पासेत्ता हट्ठ तुट्ठ जाव हियया आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठ पयाइं तिक्खुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरए तेणेव उवागया, सीहकेसराणं मोयगाणं थालं भरेति, भरित्ता ते अणगारे पडिलाभेति पडिलाभित्ता वंदति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता पडिविसज्जेति।

अर्थ—उस वक्त देवकीदेवी ने दो अणगारों (साधुओं) को आते हुए देखा। देखकर हृष्ट, तुष्ट अर्थात् हृदय में आनन्द पाती हुई आसन से खड़ी होगई। खड़ी होकर सात आठ पावंडे उनके सामने जाकर तीनवार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वंदना की, नमस्कार किया। वंदना-नमस्कार कर जहां भोजनगृह था वहां आई, आकर सिंहकेशरिया मोदकों का थाल भरा और दोनों साधुओं को वहोराये, वहोरा कर वंदना की, नमस्कार किया। तत्पश्चात् उन्हें वहां से विदा किया।

मूल—तदाणंतरं च णं दोच्चे संघाडए वारवतीए उच्च जाव विसज्जेति।

अर्थः-उसके बाद दूसरा सिंघाड़ा द्वारिका नगरी में ऊंच, नीच वगैरह के घरों में भ्रमण करता हुआ देवकी देवी के घर गया। उनको भी उसी प्रकार भक्ति से सिंहकेसरिया मोदक वहोरा कर विदा किया।

मूल—तदाणंतरं चं णं तच्चे संघाडए वारवतीए नगरीए उच्च नीय जाव पडिलाभेति, पडिलाभित्ता एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे वारवतीए नगरीए नवजोयणविच्छिण्णाए पच्चक्ख-देवलोगभूताए समणा निग्गंथा उच्चणीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति? जन्नं ताइं चेव कुलाइं भत्त पाणाए भुज्जो भुज्जो अणुप्पविसंति?।

अर्थ—उसके बाद तीसरा सिंघाड़ा भी द्वारिका नगरी में ऊंच, नीच और मध्यम गृहों में भ्रमण करता हुआ देवकी देवी के महल में आया। देवकी ने उनको भी मोदक वहोरा दिये। वहोरा कर इस प्रकार बोली, हे देवानुप्रियो! क्या इस नव योजन के विस्तार वाली तथा प्रत्यक्ष देवलोक के समान कृष्णवासुदेव की इस द्वारिका नगरी में श्रमण निर्ग्रन्थों (साधुओं) को ऊंच, नीच घरों में पर्यटन करने पर भी आहार-पाणी मिलता नहीं कि जिससे एकके एक ही घर में भिक्षा के लिये पुनः पुनः प्रवेश करते हैं?।

मूल—तते णं ते अणगारा देवतिं देवीं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे वारवतीए नगरीए जाव देवलोगभूयाए समणा निग्गंथा उच्चनीय जाव अडमाणा भत्तपाणं णो लभंति, नो चेव णं ताइं ताइं कुलाइं दोच्चं पि तच्चं पि भत्तपाणाए अणुपविसंति।

अर्थ—यह सुन कर उन साधुओं ने देवकी देवी से इस प्रकार कहा:—हे देवनुप्रिया! कृष्ण वासुदेव की यावत् देवलोक के समान इस द्वारिका नगरी में श्रमण निर्ग्रन्थों (साधुओं) को ऊंच, नीच, मध्यम गृहों में यावत् अनुक्रम से पर्यटन करते हुए भी, आहार पानी नहीं मिलता यह बात नहीं है, मिलता है, इस वास्ते एक के एक ही घर में एक वार, दो वार और तीसरी वार वारंवार आहार के लिये नहीं आते हैं।

मूल—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे भद्दिलपुरे नगरे नागस्स गाहावइस्स पुत्ता सुलसाए भारियाए अत्तया छ भायरो सहोदरा सरिसया जाव नलकुव्वरसमाणा अरअहो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोचा संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मुंडा जाव पव्वइया ।

अर्थः—परन्तु इस प्रकार निश्चय करके हे देवानुप्रिया ! भद्दिलपुर नगर में नाग नामक गाथापति सेठ के पुत्र तथा उनकी सुलसा नामक स्त्री के आत्मज हम छओं सहोदर भाई एक जैसे यावत् नल-कूबर के समान हैं। अनुक्रम से हम छओं ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास धर्म देशना सुन कर संसार के भय से उद्वेग पाया तथा जन्म मरण से भय उत्पन्न हुआ, इसलिये मुंड होकर यावत् दीक्षा अंगीकार की है ।

मूल— तते णं अम्हे जं चेव दिवसं पव्वतिया तं चेव दिवसं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदामो नमंसामो, वंदित्ता नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हामो—इच्छामो णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा जाव अहासुहं देवाणुप्पिया।

अर्थः—उसके बाद हमने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर इस प्रकार का अभिग्रह ग्रहण किया । हे भगवन् ! हम इच्छा करते हैं कि

आपकी आज्ञा पाकर छट्ठ २ की तपश्चर्या कर विहार करें, वगैरह यावत् भगवान् ने हम से कहाः– हे देवानुप्रियो! जिसमें तुम्हें सुख उत्पन्न हो वह इच्छानुसार करो।

मूल— तते णं अम्हे अरहतो अब्भणुण्णाया समाणा जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरामो, तं अम्हे अज्ज छट्ठक्खमणपारणयांसि पढमाए पोरिसिए जाव अडमाणा तव गेहं अणुप्पविट्ठा, तं नो खलु देवाणुप्पिए! ते चेव णं अम्हे, अम्हे णं अन्ने, देवतिं देविं एवं वदंति, वादित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगया।

अर्थः— उसके बाद हम आरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञा पाकर, जीवनपर्यन्त छट्ठ २ (दो २ उपवास) की तपश्चर्या कर विहार करते हैं, इससे हमने आज छट्ठ तप के पारणे के दिन पहली पोरसी में सज्झाय की, यावत् सज्झाय करके भगवान् की आज्ञा प्राप्त कर आहार के लिये द्वारिका नगरी में भ्रमण करते हुए तुम्हारे घर में आये हैं। इसलिये हे देवानुप्रिया! तुम्हारे घर में जो पहले आये थे, वो हम नहीं हैं, हम तो दूसरे हैं, इस प्रकार दोनों साधुओं ने देवकी देवी से कहा। कह कर जिस दिशा से आये थे, उसी दिशा में वापिस चले गये।

मूल—तते णं तीसे देवतीए देवीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने– एवं खलु अहं पोला–सपुरे नगरे अतिमुत्तेणं कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिता–तुमं णं देवाणुप्पिए अट्ठ पुत्ते पयातिस्सासि सारि–

सए जाव नलकुव्वरसमाणे, नो चेव णं भरहे वासे अन्नाओवि अम्मयाओ तारिसए पुत्ते पयाइस्संति, तं नं मिच्छा, इमं नं पच्चक्खमेव दिस्सति भरहे वासे अन्नाओ वि अम्मताओ वि सरिसए जाव पुत्ते पयायाओ, तं गच्छामि णं अरहं अरिट्ठनेमिं, वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता इमं च णं एयारूवं वागरणं पुच्छिस्सा-मीतिकट्टु, एवं संपेहेति, संपेहित्ता कोडुंबियपुरिसा सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—लहुकरणप्पवरं जाव उव-ट्ठवेंति, जहा देवाणंदा जाव पज्जुवासति ।

अर्थः—उसके बाद उस देवकी देवी को इस प्रकार का अध्यवसाय विचार उत्पन्न हुआ कि इस प्रकार निश्चय करके मेरे को पोलासपुर नामक नगर में अतिमुक्त नामक कुमार मुनिने बाल्यावस्था में कहा था कि हे देवानुप्रिया ! तूं एकसरीखे यावत् नल-कूवर के समान आठ पुत्रों को जन्म देगी और इस भारतवर्ष में तेरे समान दूसरी कोई भी माता ऐसे पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकेगी । ऐसा उन मुनि का वचन मिथ्या हुआ, क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष ही दीख-रहा है कि इस भारतवर्ष में दूसरी माता ने भी एक समान यावत् ऐसे पुत्र उत्पन्न किये हैं । इसलिये मैं अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास जाकर वंदना नमस्कार करूं । वंदना नमस्कार करके इस प्रकार के प्रश्न को पूछूं । इस प्रकार उस देवकी देवी ने विचार किया, विचार करने के बाद कौटुंबिक (आज्ञाकारी) पुरुषों को बुलाये, बुला

कर इस प्रकार कहा:- शीघ्र चलने वाला, श्रेष्ठ वगैरह विशेषण युक्त धर्मवाहन (सवारी बैठने का रथ) लाओ। तब वे पुरुष उसी प्रकार का वाहन लाये और जिस प्रकार 'भगवती' सूत्र में श्री महावीर स्वामी की प्रथम माता 'देवानंदा' ब्राह्मणी भगवान् महावीर स्वामी के पास वंदना करने को गई थी, उसी प्रकार देवकी देवी भी अरिष्ठनेमि भगवान् के पास जाकर तीन प्रदक्षिणा करके वंदना नमस्कार कर यावत् भगवान् की सेवा करने लगी।

मूल—तते णं ते अरहा अरिट्ठनेमी देवतिं देविं एवं वयासी- से नूणं तव देवती ! इमे छ अणगारे पासेत्ता अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था – एवं खलु अहं पोलासपुरे नगरे अइमुत्तेणं तं चेव जाव णिग्गच्छासि, णिग्गच्छित्ता जेणेव ममं अंतियं हव्वमागया से नूणं देवती ! अत्थे समट्ठे ? हंता अत्थि।

अर्थ:—उसके बाद उन अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने देवकी देवी से इस प्रकार कहा:- हे देवकी ! तुमको इन छओं साधुओं को देख कर इस प्रकार का विचार यावत् उत्पन्न हुआ कि-इस प्रकार निश्चय करके मुझे 'पोलास पुर' नगर में 'अतिमुक्तक' नामक साधु ने कहा था कि तुम्हारे एक समान रूपवाले आठ पुत्र होंगे, यह मुनि का वचन असत्य क्यों हुआ ? ऐसा मुझसे पूछने के लिये यावत् तुम घर से निकली हो, निकल कर शीघ्र तुम मेरे पास आई हो तो निश्चय से हे देवकी ! यह मैं कहता हूं कि वह बात सच्ची है ? देवकी ने कहा:—हे प्रभु ! आपने कहा वैसा ही है।

मूल—एवं खलु देवाणुप्पिए ! ते णं काले णं ते णं समए णं भद्दिलपुरे नगरे नागे नामं गाहावइ परिवसति अड्ढे, तस्स णं नागस्स गाहावइस्स सुलसा नामं भारिया होत्था, सा सुलसा गाहावइणी बालत्तणे चेव निमित्तिएणं वागरिता— एस णं दारिया णिंदू भविस्सति ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय से हे देवानुप्रिया ! उस काल उस समय में भद्दिलपुर नामक नगर था, उसमें नाग नामक गाथापति सेठ निवास करता था, वह समृद्धिवान् था, उस नाग नामक गाथापति की सुलसा नामक स्त्री थी। जब सुलसा गाथापतिनी बाल्यावस्था में थी, तब एक निमित्तिये (सामुद्रिक शास्त्र जानकार) ने उससे कहा था कि यह सुलसा कन्या निंदू (मृतवत्सा) यानी मृतक पुत्रों को उत्पन्न करने वाली होगी।

मूल—तते णं सा सुलसा बालप्पभितिं चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था, हरिणेगमेसिस्स पडिमं करेति, करित्ता कल्लाकल्लिं ण्हाता जाव पायच्छित्ता उल्लपडसाडया महरिहं पुप्फच्चणं करेति, करित्ता जानुपायपडिया पणामं करेति, ततो पच्छा आहारेति वा नीहारेति वा वरति वा ।

अर्थः—उसके बाद वह सुलसा बाल्यावस्था से ही लेकर हरिणेगमेषी नामक देवकी भक्ता होगई, जिससे उसने हरिणेगमेषी-देवकी प्रतिमा करवाई, करवा कर हमेशा प्रातः काल में स्नान करती, यावत् प्रायश्चित्त करके

पीछे गीलीसाड़ी को पहन कर बड़ों के योग्य अथवा अधिक मूल्य वाली उनकी पुष्पों से पूजा करती, पूजा करने के बाद गोडों को पृथ्वी पर नमाकर प्रणाम करती उसके बाद खुद आहार – निहार करती थी और उसके कुछ समय व्यतीत होजाने के बाद उसने पाणिग्रहण किया ।

मूल—तते णं तीसे सुलसाए गाहावइणीए भत्तिबहुमाणसुस्सूसाए हरिणेगमेसीदेवे आराहिते यावि होत्था

अर्थः—उसके बाद उस सुलसा की भक्ति, बहुमान और सेवा से हरिणेगमेषी देव आराधन हुआ अर्थात् प्रसन्न हुआ और आकर बोलाः–तेरा मृतवत्सा का निकाचित कर्म छुट नहीं सकता परन्तु देवकी देवी के जन्म ते हुए छ पुत्र लाकर तेरेको दूँगा उनका पालन-पोषण व पाणिग्रहण आदि करके पुत्र सुखका मनोर्थ पूरा करना ।

मूल–तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए गाहावइणीए अणुकंपणट्ठयाए सुलसं गाहावतिंणिं तुमं च दो वि समउउयाओ करेति, तते णं तुब्भे दो वि सममेव गब्भे गिण्हह, सममेव गब्भे परिवहह, सममेव दारए पयायह ।

अर्थः—उसके बाद उस हरिणेगमेषी देव ने सुलसा के ऊपर दया करने से वह और तू अर्थात् तुम दोनों एक ही समय में रजस्वला हुई, उससे तुम दोनों ही साथ २ गर्भ धारण करने लगी, साथ ही साथ गर्भ की रक्षा करने लगी और साथ ही साथ पुत्र को जन्म देने लगी ।

मूल—तते णं सा सुलसा गाहावतिणी विणिहायमावन्ने दारए पयाइति, तते णं से हरिणेगमेसी देवे सुलसाए अणुकंपणट्ठाए विणिहायमावण्णए दारए करयलसंपुडेणं गेण्हति, गेण्हित्ता तव अंतियं साहरति, साहरित्ता तं समयं च णं तुमं पि णवण्हं मासाणं सुकुमालदारए पसवसि, जे वि य णं देवाणुप्पिए! तव पुत्ता ते वि य तव अंतियाओ करयलसंपुडेणं गेण्हति, गेण्हित्ता सुलसाए गाहावइणीए अंतिए साहरति, तं तव चेव णं देवइ! एए पुत्ता णो चेव सुलसाए गाहावइणीए।

अर्थः—इस तरह गर्भावस्था पूरी होने से वह सुलसा मृत पुत्रों को जन्म देती, उस समय सुलसा पर की दया के लिये वह हरिणेगमेषी देव यहां आकर उसके मृत पुत्रों को दोनों हाथों में ग्रहण करता, ग्रहण करके संहरण करके तेरे पास लाता। उसी समय तेरे भी गर्भावस्था के नौ मास पूर्ण होने पर तू भी सुकुमार पुत्रों को जन्म देती। तब हे देवानुप्रिया! जो तेरे पुत्र थे उनको तेरे पास से दोनों हाथों में ग्रहण करके सुलसा के पास लेजाकर रख देता। इस कारण से हे देवकी! यह तेरे पुत्र हैं परंतु सुलसा के नहीं।

मूल—तते णं सा देवइ देवी अरअहो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छति, उवा—

गच्छित्ता ते छप्पि अणगारा वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता आगतपण्हुता पप्फुयलोयणा कंचुयपडिक्खित्तया दरियवलयबाहा धाराहयकदंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा ते छप्पि अणगारे अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी पेहमाणी सुचिरं निरिक्खति, निरिक्खित्ता, वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमि तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करित्ता वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणं दुरूहति, दुरूहित्ता जेणेव वारवतीणगरी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वारवतिं नगरिं अणुप्पविसति अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मियओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव सए वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयति।

अर्थ—उसके बाद देवकी देवी ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से यह वृत्तान्त सुन कर हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट यावत् हृदय में आनन्द पाती हुई, अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना कर नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके जहां पर वे छओं साधु थे वहां आई, आकर उन छओं साधुओं को वंदना की, नमस्कार किया।

वंदना नमस्कार करते समय अतीवहर्ष के कारण इसके स्तनों में से दूध की धारा बहने लगी, नेत्र प्रफुल्लित होकर आनन्द के आँसुओं से नेत्र भर गये। अधिक हर्ष होने से शरीर फूल गया, शरीर के अवयव फूल जाने से कंचुकी टूट गई, हर्ष से रोमांच खडे होने से उसके हाथ में पहने हुए कड़े टूट गये, मेघ की जलधारा से सींचे हुए कदम्ब के पुष्प की तरह उसके शरीर पर रोमराजी विकस्वर होगये। इस प्रकार हर्षाती हुई वह देवकी देवी उन छओं साधुओं को अनिमेष (स्थिर) दृष्टि से देखती देखती बहुत समय तक देखती रही, देख कर उनको वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके जहां पर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहां आई। आकर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान को तीन वक्त दक्षिण तरफ से शुरू कर भगवान् के चौतरफ घूम करके दक्षिण तरफ आनेरूप प्रदक्षिणा की। फिर वंदना की, नमस्कार किया। वंदना-नमस्कार करके उसी धार्मिक वाहन पर चढकर जहां द्वारिका नगरी थी वहां आई। आकर द्वारिका नगरीमें प्रवेश किया। प्रवेश करके जहां अपना घर था और उपस्थान शाला (सभा मंडप) था वहां आई। आकरके श्रेष्ठ धार्मिक वाहन (रथ) में से नीचे उतरी, नीचे उतर कर जहां अपना निवास गृह था तथा जहां अपनी शय्या थी। वहां आई, वहां आकर अपनी शय्या पर बैठ गई।

मूल—तते णं तीसे देवइए देवीए अयं (एयारूवे) अब्भत्थिए (चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे) समुप्पन्ने-एवं खलु अहं सरिसए जाव नलकुब्बरसमाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्त- ॥३८॥

णए समुप्पन्ने, एस वि य णं कण्हे वासुदेवे छण्हं छण्हं मासाणं ममं अंतियं पायवंदते हव्वमागच्छति, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जासिं मण्णे णियगकुच्छिसंभूतयाइं थणदुद्धलुद्धयाइं महुरसमुल्लावयाइं मंमण-पजंपियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं मुद्धयाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगि णिवेसियाइं देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिते, अहं नं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना एत्तो एक्कतरमपि न पत्ता ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति ।

अर्थ—उसके बाद उस देवकी देवी को इस प्रकार का अध्यात्मिक अर्थात् आत्माश्रित यानी चिन्तवन किया हुआ, स्मरणरूप, प्रार्थित यानी अभिलाषा किया हुआ, मनमें संकल्प उत्पन्न हुआ कि इस प्रकार निश्चय करके मैंने एक सरीखे यावत् नल–कूबर जैसे सात पुत्रों को जन्म दिया परन्तु इनमें से मैंने एक की भी बाल्यावस्था देखी नहीं अर्थात् इनमें से किसी एक का भी पालण पोषण करके बाल क्रीड़ा कराने का सुख अनुभव नहीं किया और ये कृष्ण वासुदेव भी छः २ महीने मेरे पास मेरे चरणों को नमस्कार करने के लिये शीघ्रता से आते हैं। जिससे उन माताओं को धन्य है वे पवित्रआत्मा, पुण्यशालिनी, कृतार्थ, शुभ लक्षणा हैं। ऐसा मैं मानती हूँ कि जिनकी कुक्षि से उत्पन्न हुए बालक माता के स्तन के दूध पीने में लुब्ध, मधुर २ वचन बोलने वाले, मन्मन् अर्थात् टूटे फूटे अस्पष्ट और

स्खलना वाले शब्द बोलने वाले तथा थोड़े २ हँसने वाले वचनों का उच्चारण करके स्तन को छोड़ कांख में रूड़क जाने वाले, मुग्ध और अत्यंत अव्यक्त ज्ञान वाले ऐसे उन पुत्रों को जो माताएँ अपने कोमल कमल के समान हाथों में लेकर उत्संग (गोद) में बैठाती हैं जिससे वे पुत्र गोद में बैठे हुए पुनः पुनः अति मधुर उल्लाप×करते हैं और बार २ मधुर शब्दों का उच्चारण करते हैं। ऐसा अपने जन्म दिये हुए पुत्रों का सुख अनुभव करने वाली उन माताओं को धन्य है। परन्तु मैं तो अधन्य हूँ, अपवित्र हूँ, पुण्य रहित हूँ, अकृतार्थ और लक्षण रहित हूँ कि जिससे उपरोक्त गुण वाले पुत्रों में से ऐसे एक भी पुत्र को मैं प्राप्त कर सकी नहीं अर्थात् एक भी पुत्र का सुख मेरे को मिला नहीं। इस प्रकार विचार करते हुए उस देवकी देवी के मनका संकल्प नाश होगया और पृथ्वी पर नीची दृष्टि रख कर हथेली के अन्दर मुंह रखकर ध्यान करने लगी।

मूल—इमं च णं कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव विभूसिए देवइए देवीए पायवंदते हव्वमागच्छाति।

अर्थ—उस समय कृष्ण वासुदेव ने स्नान किया और अनुक्रम से विभूषित होकर देवकीदेवी के चरणों को वंदना करने के लिए आये।

×–यहां पर मधुर उल्लाप और मधुर वचन ये दो कहने से पुनरुक्ति दोष आता है परन्तु देवकी ने भ्रम में आकर कहा है जिससे दोष रूप नहीं है।

मूल—तते णं से कण्हे वासुदेवे देवइं देविं पासति, पासित्ता देवइए देवीए पायग्गहणं करेति, करित्ता देवइं देविं एवं वयासी—अन्नया णं अम्मो ! तुब्भे ममं पासेत्ता हट्ठ जाव भवह ! किण्णं अम्मो ! अज्ज तुब्भे ओहय जाव झियायह ?

अर्थ—तब कृष्ण वासुदेव ने देवकीदेवी को देखा, देख कर देवकी देवी के चरणों में नमस्कार किया। नमस्कार करने के बाद देवकी से इस प्रकार कहा:- हे माता ! पहले तो जब २ तुम मुझको देखती थी तब २ हृष्ट, तुष्ट होकर आनन्द मग्न होती थी, परन्तु हे माता ! आज तुम मेरे को देखने पर भी संकल्प विकल्प करती हुई क्या विचार कर रही हो ?

मूल—तए णं सा देवइ देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता ! सरिसए जाव समाणे सत्त पुत्ते पयाया, नो चेव णं मए एगस्स वि बालत्तणे अणुब्भूते, तुमं पि य णं पुत्ता ! ममं छण्हं छण्हं मासाणं ममं अंतियं पादवदंते हव्वमागच्छसि, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव झियामि।

अर्थ—तब देवकी देवी ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि इसी तरह निश्चय करके हे पुत्र ! मैंने एक सरीखे यानी नल-कूबर जैसे सात पुत्रों को उत्पन्न किया परन्तु उनमें से एक भी पुत्र का बाल सुख अनुभव नहीं

किया और हे पुत्र ! तू भी मेरा पुत्र होने पर भी छः छः महीने में मेरे चरण वंदन करने के लिये आता है। मुझसे तो वे माताएँ धन्य हैं जो अपने पुत्रों का अपने हाथों से पालन पोषण करती हैं। इसलिये मैं यही विचार कर रही हूं।

मूल—तए णं से कण्हे वासुदेवे देवतिं देविं एवं वयासी–मा णं तुब्भे अम्मो ! ओहय जाव झिया–यह, अहण्णं तहा वत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोदरे कणीयसे भाउए भविस्सतीतिकट्टु देवइं देविं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेति, समासासित्ता ततो पडिनिक्खमाति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हति जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी–इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सहोदरं कणीयसं भाउयं विदिण्णं।

अर्थ—उसके बाद कृष्ण वासुदेव ने देवकी देवी से इस प्रकार कहा—हे माता ! तुम चिन्तातुर होकर दुःख से ऐसा ध्यान मत करो, तुम्हारे मेरा सहोदर लघुबंधु उत्पन्न होगा वैसा मैं प्रयत्न करूंगा। इस प्रकार देवकी देवी को इष्ट-कांत-मनोज्ञ बात कह कर आश्वासन दिया, आश्वासन देकर वहां से निकले। निकल कर जहां पौषधशाला थी वहां आये, आकर जिस प्रकार 'ज्ञाता सूत्र' में अभय कुमार ने अट्ठम तप करके अपने पूर्वभव के मित्रदेवकी आ–राधना की थी। उसी प्रकार कृष्ण वासुदेव ने भी हरिणेगमेषी देव की आराधना निमित्त अट्ठम तप किया। जिससे

हरिणेगमेषीदेव प्रसन्न होकर प्रकट हुआ। तब उसके पास दोनों हाथ जोड़ कर कृष्ण वासुदेव ने इस प्रकार कहा:- मैं इच्छा करता हूँ कि हे देवानुप्रिय! मुझे सहोदर लघु भाई प्रदान करो।

मूल—तएणं से हारिणेगमेसी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-होहिति णं देवाणुप्पिया! तव देवलोयचुए सहोदरे कणीयसे भाउए, से णं उम्मुक्कबालभावे जाव अणुप्पत्ते अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडे जाव पव्वइस्सति, कण्हं वासुदेवं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदति, वदित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

अर्थ—उसके बाद उस हरिणेगमेषी देवने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहा:— हे देवानुप्रिय! देवलोक से च्यवकर एक उत्तम जीव आपका सहोदर (छोटा) भाई होगा। वह बाल्यावस्था को पूर्ण कर यावत् योवन अवस्था को प्राप्त होगा, तब अरिहंत अरिष्ठनेमि भगवान् के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा अंगीकार करेगा। इस प्रकार उसने कृष्ण वासुदेव को दो वार, तीन बार कहा, कह कर वो देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था उसी दिशा में वापिस चला गया।

मूल—तएणं से कण्हवासुदेवे पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव देवइं देविं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता देवइए देवीए पायग्गहणं करेइ २ त्ता एवं वयासी-होहितिणं अम्मो! मम सहोदर कणीयसे भाउत्ति-

कट्टु देवइदेवीए इट्ठाहिं जाव आसासेति २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

अर्थः—उसके बाद कृष्ण वासुदेव पौषधशाला से बाहर निकले, निकल कर, जहां पर देवकी देवी थी, वहां पर आये, आकर देवकी देवी के पैरों में नमस्कार किया, नमस्कार करके इस प्रकार बोले— हे माता! हारिणेगमेषी देव के कथनानुसार तेरे मेरा सहोदर लघुबंधु होगा, ऐसा कह कर देवकी देवी को इष्ट–कांत मनोज्ञ वचनों से संतोष देकर जिस दिशा से आये थे उसी दिशा में पीछे चले गये।

मूल—तए णं सा देवइ देवी अन्नदा कदाइं तंसि तारिसगंसि जाव सीहं सुमिणे पासेत्ता पडिबुद्धा जाव पाढया हट्ठहियया परिवहति।

अर्थः—उसके बाद जब देवकी देवी एक समय उसी प्रकार की श्रेष्ठ शय्या में सोई हुई थी तब स्वप्न में, सिंह को देख कर जागृत हुई। हृष्ट तुष्ट होकर स्वप्न का विचार किया। फिर शय्या से पाद पीठ द्वारा नीचे उतर कर राजा वसुदेव के पास जाकर स्वप्न का वर्णन किया, वसुदेवजी ने उत्तम पुत्र की प्राप्तिरूप उस स्वप्न का फल कहा और प्रातः काल में स्वप्न पाठकों को बुलाया। उन्होंने भी उसी प्रकार स्वप्न का फल कहा, जब वसुदेवजी ने उनका कहा हुआ स्वप्न फल देवकी को सुनाया, तब वह हर्षित हृदय वाली देवकी देवी सुख पूर्वक गर्भ रक्षा करती हुई समय व्यतीत करने लगी।

मूल— तते णं सा देवइ देवी नवण्हं मासाणं जासुमणारत्तबंधुजीवतलक्खारससरसपारिजातकतरुण-दिवाकरसमप्पभं सव्वनयणकंतं सुकुमालं जाव सुरूवं गयतालुयसमाणं दारयं पयाया, जम्मणं जहा मेह-कुमारे जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए गयतालुसमाणे तं होउ णं अम्ह एयस्स दारगस्स नामधेज्जे गयसु-कुमाले गयसुकुमाले ।

अर्थः—उसके बाद उस देवकी देवी के नौ महीने पूर्ण हुए तब जासुके पुष्प, लाल बन्धु जीवक के पुष्प (बंधु-जीवक के पुष्प पांच रंग के होते हैं; इसलिये यहां लाल शब्द दिया है), लाख का रस, विकस्वर पारिजातक सुरद्रुम के पुष्प समान और उदय होते हुए सूर्य के समान प्रभावाला, सब लोगों के नेत्रों को मनोहर, अत्यन्त कोमल हाथ पैर वाला यावत् अधिक रूप लावण्य मय और हाथी के तालवे के समान सुकुमाल पुत्र को जन्म दिया। उसका जन्म महोत्सव मेघ कुमार के समान किया। यावत् जिस कारण से हमारा यह बालक हाथी के तालवे के समान सुकोमल है, इस लिये हमारे इस बालक का नाम गजसुकुमाल गजसुकुमाल हो।

मूल—तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामं करेंति गयसुकुमालो त्ति सेसं जहा मेहे जाव अलं भोग-समत्थे जाए यावि होत्था ।

अर्थः— उसके बाद उस बालक के मात-पिता ने गजसुकुमाल नाम स्थापन किया। शेष सब अधिकार मेघ कुमार की तरह कहना यावत् योवनावस्था में भोग भोगने के लिये समर्थ हुआ।

मूल—तत्थ णं वारवइए नगरीए सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे रिउव्वेद जाव सुपरिनिट्ठिते यावि होत्था।

अर्थः— उस द्वारिका नगरी में सोमिल नामक ब्राह्मण रहता था। वह समृद्धिवान् तथा ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, और अथर्ववेद इनचार वेदों को आंगोपांग सहित अभ्यास करने वाला और मनन करने में पारांगत विद्वान् तथा अत्यन्त श्रद्धा रखने वाला था।

मूल—तस्स सोमिलमाहणस्स सोमासिरी नामं माहणी होत्था सुकुमाला जाव सुरूवा।

अर्थ— उस सोमल नामक ब्राह्मण के सोमश्री नामक स्त्री थी, वह अत्यन्त सुकोमल और सुरूपा थी।

मूल—तस्स णं सोमिलस्स धूआ सोमासिरीए माहणीए अत्तया सोमा नामं दारिया होत्था सुमाला जाव सुरूवा रूवेणं जाव लावण्णेणं उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था।

अर्थः— उस सोमिल ब्राह्मण की पुत्री तथा सोमश्री ब्राह्मणी की आत्मज सोमा नामक कन्या थी, वह अति

कोमल यावत् अत्यन्त रूप वाली, रूप द्वारा यावत् लावण्य द्वारा श्रेष्ट और उत्कृष्ट शरीर की शोभा वाली थी।

मूल—तए णं सा सोमा दारिया अन्नया कदाइ ण्हाया जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छाति, उवगच्छित्ता रायमग्गंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणी कीलमाणी चिट्ठाति।

अर्थः— उसके बाद वह सोमा कन्या एक समय स्नान कर वस्त्रादि से विभूषित होकर बहुत सी कुब्जिका और वामनिका वगैरह दासियों के परिवार से परिवृत्त होकर अपने घर से बाहर निकली, निकल कर जहां पर राजमार्ग था वहां पर आई, आकर राज मार्ग में स्वर्ण की गेंद से क्रीड़ा कर रही थी।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठनेमि समोसढे परिसा निग्गया, तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए जाव विभूसिए गयसुकुमालेणं कुमारेणं सद्धिं हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेअवरचामरेहिं उध्धुव्वमाणीहिं वारवइए नयरीए मज्झंमज्झेणं अरहतो अरिट्ठनेमिस्स पायवंदते णिग्गच्छमाणे सोमं दारियं पासति, पासित्ता सोमाए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जाव विम्हए।

अर्थ— उस काल उस समय में अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् वहां सहस्राम्रवन में पधारे। उनको वंदना करने के लिये नगरी में से पर्षदा निकली उस समय कृष्ण वासुदेव ने भगवान् के आगमन की बात सुनी। सुन कर हर्षित हुए, स्नान किया यावत् विभूषित हुए और गजसुकुमाल कुमार के साथ श्रेष्ठ हाथी पर सवार हुए। उनके मस्तक पर कोरंट वृक्ष के पुष्पों की माला का छत्र धारण किया हुआ था। दोनों तरफ श्रेष्ट श्वेत चँवर ढुल रहे थे। इस प्रकार द्वारिका नगरी के मध्य में होकर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना करने के लिये निकले। उस समय मार्ग में क्रीड़ा करती हुई सोमा नामक कन्या को देखा। देखकर उस सोमा बालिका के रूप यौवन और लावण्य को देखते २ आश्चर्यान्वित होगये।

मूल—तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सोमिलं माहणं जायइत्ता सोमं दारियं गेण्हह, गेण्हित्ता कन्नंतेउरंसि पक्खिवह, तते णं एसा गयसुकुमालस्स कुमारस्स भारिया भविस्सति। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पक्खिवंति।

अर्थ:—उसके बाद कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुला कर इन्होंने इसप्रकार कहा कि:- हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और सोमिल नामक ब्राह्मण के पास याचना (मांग) करके सोमा नामक इस पुत्री को लाओ और लाकर कन्याओं के महल में उसको रखो। यह सोमा गजसुकुमालकुमार की स्त्री होगी। उसके बाद उन

कौटुम्बिक पुरुषों ने उनके कथनानुसार सोमा को लाकर कन्याओं के महल में रक्खा।

मूल— तते णं से कण्हे वासुदेवे वारवतीए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जाव पज्जुवासति।

अर्थः— उसके बाद वे कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य २ भाग में होकर बाहर निकले बाहर निकल कर सहस्राम्रवन नामक उद्यान में आये आकर यावत् भगवान् की सेवा करने लगे।

मूल—तते णं अरहा अरिट्ठनेमि कण्हस्स वासुदेवस्स गयसुकुमालस्स कुमारस्स तीसे य धम्मक-हाए, कण्हे पडिगए।

अर्थ— उसके बाद अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् ने उन कृष्ण वासुदेव और गजसुकुमाल कुमार को तथा बड़ी पर्षदा को धर्म देशना दी, उसको सुन कर कृष्ण वासुदेव आदि अपने २ घर गये।

मूलः—तते णं से गयसुकुमाले कुमारे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं धम्मं सोच्चा जं नवरं अम्मा-पियरं आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वुड्ढियकुले।

अर्थ—उसके बाद गजसुकुमाल कुमार अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास धर्मदेशना सुन कर हर्षित हुआ और वैराग्य पाया। यहां पर इतना विशेष यह है कि उसने भगवान् से कहा कि मैं अपने माता-पिता की आज्ञा लूं। मेघ कुमार की तरह स्त्री का नाम छोड़ कर कहना यावत् कुल की वृद्धि कर। जिस प्रकार ज्ञाता सुत्र के पहले अध्ययन में मेघ कुमार ने अपने माता पिता को दीक्षा की आज्ञा मांगने के लिये कहा था, उसी प्रकार इन्होंने भी कहा, माता पिता को समझाया। विशेष यह है कि मेघकुमार से उसकी माता ने कहा था कि:- "ये तेरी स्त्रियें समान अवस्था वाली और समान राजकुल से आई हुई हैं। इनके साथ तू विषय सुख को भोग इत्यादिक कहा था वह यहां पर नहीं कहना चाहिये, क्योंकि मेघकुमार व्याह किया हुआ था और गजसुकुमाल कुंवारा था। तब क्या कहना चाहिये? वह कहते हैं कि:-" तू हमारा इष्ट पुत्र है, तेरा वियोग सहन करने के लिये हमारी इच्छा नहीं होती, इसलिये जब तक हम जीवित रहें, तब तक तू भोग को भोग इत्यादि यावत् हम स्वर्ग में जावें उस वक्त यौवनावस्था को प्राप्त हुआ तू कुल की वृद्धि करके फिर अपेक्षा रहित होकर दीक्षा ग्रहण करना" इत्यादि कहना।

मूल—तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसुकुमाले कुमारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता गयसुकुमालं कुमारं आलिंगति, आलिंगित्ता उच्छंगे निवेसेति, निवेसित्ता एवं वयासी— तुमं ममं सहोदरे कणीयसे भाया, तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए

मुंडे जाव पव्वयाहि । अहण्णं वारवतीए नगरीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिस्सामि ।

अर्थः—उसके बाद कृष्ण वासुदेव गजसुकुमाल के दीक्षा लेने संबंधी बात को सुन कर जहां गजसुकुमाल कुमार था वहां आये। आकर गजसुकुमाल को आलिंगन किया, आलिंगन करके अपने गोद में उसे बैठाया, बैठा कर इस प्रकार कहाः- " तू मेरा सहोदर छोटा भाई है, इसलिये तू हे देवानुप्रिय ! अभी अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण मत कर। मैं तुझे द्वारिका नगरी में बड़े २ राज्याभिषेक करूंगा " ।

मूल—तते णं से गयसुकुमाले कुमारे कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति ।

अर्थः—उसके बाद जब तक कृष्ण वासुदेव ने इस प्रकार कहा तब तक वह गजसुकुमाल कुमार मौन रहा ।

मूल—तए णं से गयसुकुमाले कुम्हारे कण्हं वासुदेवं अम्मापियरो य दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! माणुस्सया कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा भविस्संति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वइत्तए ।

अर्थः— उसके बाद उस गजसुकुमाल कुमार ने कृष्ण वासुदेव तथा माता-पिता को दो बार तीन बार इस

प्रकार कहा:— "इस प्रकार निश्चय करके हे देवानुप्रियो! मनुष्य सम्बन्धी काम भोग खेल के आश्रव जैसे हैं यावत् वीर्य के आश्रव तथा रक्त के आश्रव हैं। इससे वे त्याग करने योग्य हैं। इसलिये हे देवानुप्रियो! मैं तुम्हारी आज्ञा से अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास यावत् दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा करता हूं।

मूल—तते णं तं गयसुकुमालं कण्हे वासुदेवे अम्मापियरो य जाहे नो संचाएति बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए ताहे अकामाइं चेव एवं वयासी—तं इच्छामो णं ते जाया! एगदिवसमविरज्जसरिं पासित्तए, निक्खमणं जहा महाबलस्स जाव तमाणाए तहा तहा जाव संजमित्तते, से गयसुकुमाले अणगारे जाए इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी।

अर्थ:—उसके बाद उस गजसुकुमाल कुमार को कृष्ण वासुदेव तथा उसके माता–पिता जब बहुतसे अनुकूल यावत् प्रेम वाले वचनों द्वारा भी गजसुकुमाल को घर में रखने में असमर्थ हुए, तब इच्छा नहीं होते हुए भी इस प्रकार कहा कि— जो तू न मानता हो तो हे पुत्र! तेरी एक दिन की भी मात्र राज्य लक्ष्मी देखने के लिये हम इच्छा करते हैं इस प्रकार कह कर उसका राज्याभिषेक किया और महाबल कुमार की तरह उसका दीक्षा महोत्सव किया, उसने दीक्षा ली, यावत् प्रभु की आज्ञा से उस प्रकार यावत् संयम मार्ग में उद्यम करने लगा। इस प्रकार गज–

सुकुमाल अणगार हुआ इर्यासमिति वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य्य को पालन करने वाले हुए। जिस प्रकार भगवतीसूत्र में महाबल कुमार का राज्याभिषेक किया उसके बाद पालकी में बिठला कर दीक्षा महोत्सव किया था। उसी प्रकार यहां पर भी सब कहना वह कहां तक ? सो कहते हैं:—दीक्षा लेने के बाद भगवान् ने उनको इस प्रकार उपदेश दिया कि हे देवानुप्रिय ! इस प्रकार यत्ना से चलना, इस प्रकार खड़े रहना, इस प्रकार बैठना, इस प्रकार करवटें बदलना, इस प्रकार आहार करना, इस प्रकार बोलना, इस प्रकार उद्यमवान् होकर प्राण, भूत, जीव और सत्त्व की रक्षा करने में प्रयत्न करना चाहिये। इस विषय में कुछ भी प्रमाद नहीं करना। इसके बाद गजसुकुमाल अणगार ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से इस प्रकार के धार्मिक उपदेश को अच्छी तरह से ग्रहण किया और भगवान् की आज्ञानुसार चलने लगे, उसी प्रकार यत्ना से खड़े रहने लगे, बैठने लगे, उसी प्रकार करवटें बदलने लगे, उसी प्रकार आहार करने लगे, तथा उसी प्रकार उद्यमशील होकर प्राण, भूत, जीव और सत्त्व की रक्षा के लिये संयम मार्ग में प्रयत्न करने लगे।

मूल—तते णं से गयसुकुमारे अणगारे जं चेव दिवसं पव्वतिए तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकाल—समयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो. आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए

समाणे माहकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरेत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि।

अर्थः—उसके बाद गजसुकुमाल अणगारने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन पहले और पिछले समय के मध्य में अर्थात् दो पहर को जहां पर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् विराजे थे वहां पर आये। आकर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को तीन वक्त प्रदक्षिणा की। प्रदिक्षणा करके वंदना की, नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके इस प्रकार कहाः- 'हे भगवन्! आपकी आज्ञा हो तो मैं महाकाल नामक श्मशान में एकरात्रि की महाप्रतिमा को अंगीकार करके विचरूं, ऐसी मेरी इच्छा है। तब भगवान् ने कहा 'हे देवानुप्रिय! तुमको जिस प्रकार सुख उत्पन्न हो वैसा तेरी इच्छानुसार कर' इसमें विलंब नहीं करना चाहिये। (यहां पर गजसुकुमाल ने जिस दिन दीक्षा ग्रहण की उसी दिन प्रतिमा अंगीकार करने का जो कहा है, वह सर्वज्ञ तीर्थंकर अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञानुसार होने से विरुद्ध नहीं, अन्यथा प्रतिमा अंगीकार करने में यह नियम है "पडिवज्जई एयाओ, संघयणधिइजुओ महासत्तो। पडिमाओ भावियप्पा, सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥ गच्छे चिय निम्माओ, जा पुव्वा दसभवे असंपुन्ना। नवमस्स तइयवत्थु, होई जहन्नो सुयाभिगमो ॥२॥ अर्थात् पहिले संघयण और धैर्य युक्त, महा सत्ववान् और भावितात्मा साधु गुरु की आज्ञा से इस प्रतिमा को अंगीकार कर सकता है। वह साधु गच्छ में बहुत समय तक रहा हुआ हो यावत् कुछ

न्यून दश पूर्व के ज्ञान वाला अथवा जघन्य से नवम पूर्व की तीसरी वस्तु तक का श्रुत ज्ञान वाला होना चाहिये)।

मूल—तते णं से गयसुकुमाले अणगारे अरहता अरिट्ठनेमिणा अब्भणुन्नाए समाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिआओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव महाकाले सुसाणे तेणेव उवगते, उवागच्छित्ता थंडिल्लं पडिलेहेति, पडिलेहित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेति पडिलेहित्ता, ईसिंपब्भारगएणं काएणं जाव दो वि पाए साहट्टु एगराइं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति।

अर्थः— उसके वाद गजसुकुमाल अणगार ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् की आज्ञा प्राप्त कर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से और सहस्राम्रवन नामक उद्यान से बाहर निकले, निकल कर जहां पर महाकाल नामक श्मशान था वहां पर आये। आकरके स्थंडिल (निर्जीव पृथ्वी) की पडिलेहणा की (दृष्टि से देखा), पडिलेहणा करके ठल्ले मात्रे की भूमि की पडिलेहणा करके थोड़ासा शरीर नमाकर और मस्तक नीचे नमा कर यावत् लंबे हाथ रख कर नेत्रों को निमेष रहित एक टक लगा कर तथा एक श्वेत पुद्गल पर दृष्टि रख कर दोनों पावों को मिला कर इस प्रकार खड़े रहकर

एक रात्रि की महाप्रतिमा को अंगीकार करके रहे।

मूल—इमं च णं सोमिले माहणे समिधेयस्स अट्ठाए बारवतीओ नगरीओ बहिया पुव्वणिग्गते समिहातो य दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हति गेण्हित्ता ततो पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता महाकालस्स सुसाणस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे वीईवयमाणे संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि गयसुकुमालं अणगारं पासति, पासित्ता तं वेरं सरति, सरित्ता आसुरुत्ते एवं वयासी—एस णं भो ! से गयसुकुमाले कुमारे अपत्थिय जाव परिवज्जिते, जे णं मम धूयं सोमसिरीए भारियाए अत्तयं सोमं दारियं अदिट्ठदोसपइयं कालवत्तिणिं विप्पजहेत्ता मुंडे जाव पव्वतिए ।

अर्थः—इसवक्त वह सोमिल नामक ब्राह्मण समिध (होम) की सामग्री इकट्ठी करने के लिये द्वारिका नगरीके बाहर पहिले से ही निकला हुआ था उसने समिध की लकड़ी, डाभ, कुश तथा वृक्ष की शाखा के अग्र भाग के पत्ते ग्रहण किये, ग्रहण करके वहां से पीछा फिरा, तब महाकाल नामक श्मशान के निकट आते २ सायंकाल का समय होगया। मनुष्यों का आवागमन बहुत कम होगया इतने में उस स्थान पर गजसुकुमाल अणगार को देखे, देख कर उसको वह

होगया और क्रोध पूर्वक इस प्रकार बोला:—अहो यही तू गज-
वर याद आया। याद आते ही वह शीघ्र ही क्रोधातुर होगया और क्रोध पूर्वक इस प्रकार बोला:—अहो यही तू गज-
सुकुमाल कुमार मृत्यु की प्रार्थना करने वाला यावत् निर्लज्ज है कि जिसने मेरी पुत्री और सोमश्री नामक स्त्री की
आत्मज सोमा नामक बालिका का कुछ भी चौरी वगैरह दोष देखे विना ही वह पतित और जाति वगैरह से अलग
नहीं अर्थात् चौरी वगैरह दोषों से मुक्त तथा भोग भोगने के समय में आई हुई अर्थात् युवावस्था होने पर उसका
विना कारण त्याग कर तू मुंड हो यावत् साधु हुआ है।

मूल—तं सेयं खलु मम गयसुकुमालस्स कुमारस्स वेरनिज्जायणं करेत्तए, एवं संपेहेति, संपेहित्ता दिसापडिलेहणं करेति, करित्ता सरसं मट्टियं गेण्हाति, गेण्हित्ता जेणेव गयसुकुमाले अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता गयसुकुमालस्स कुमारस्स मत्थए मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता जलंतीओ चिययाओ फुल्लियकिंसुयसमाणे खयरंगारे कहल्लेणं गेण्हइ, गेण्हित्ता गयसुकुमालस्स अणगारस्स मत्थए पक्खिवति पक्खिवित्ता भीए, तओ खिप्पामेव अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

अर्थ:—इससे मुझे गजसुकुमाल कुमार से उस वैरका बदला लेना श्रेयस्कर है। इस प्रकार उस ब्राह्मण ने विचार किया, विचार करके सब दिशाओं में देखा। देखकर पानी से गीली की हुई मिट्टी को ग्रहण की। ग्रहण

करके जहां गजसुकुमाल अणगार थे वहां आया। आकर गजसुकुमाल कुमार के मस्तक पर मिट्टी की-पाल बाँधी, बांधकर चितामें से जाज्वल्यमान खांखरे के पुष्प अर्थात् केसूडे के सामान लाल खैरकी लकड़ी के अंगारे एक ठीवरे में ग्रहण किये। ग्रहण करके गजसुकुमाल अणगार के मस्तक पर रक्खे। रखकर भयातुर होकर (त्रासित होकर) वहां से शीघ्रता से भगा। भागकर जिस दिशा में से आया था उसी दिशा में वापस चला गया।

मूलः—तते णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स सरीरयंसि वेयणा पाउभूआ उज्जला जाव दुरहियासा।

अर्थः—उसके वाद उन गजसुकुमाल अणगार के शरीर के अन्दर अत्यन्त देदीप्यमान् यावत् विपुल, तीव्र, प्रचंड, गाढ, कटुक, कर्कश और दुःख से भी सहन नहीं हो सके ऐसी वेदना उत्पन्न हुई।

मूलः—तते णं से गयसुकुमाले अणगारे सोमिलस्स माहणस्स मणसा वि अप्पदुस्समाणे तं उज्जलं जाव अहियासेति।

अर्थः—उसके वाद वे गजसुकुमाल अणगार सोमिल नामक ब्राह्मण पर मनसेभी द्वेष नहीं करते हुए, अत्यंत देदीप्यमान अग्नि की वेदना को (दुःखको) सहन करने लगे।

मूलः—तए णं तस्स गयसुकुमालस्स अणगारस्स तं उज्जलं जाव अहियासेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं

पसत्थज्झवसाणेणं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे जाव केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे, ततो पच्छा सिद्धे जाव प्पहीणे ।

अर्थः—उसके बाद उस उज्वल (प्रवल) वेदना को सहन करते हुए ऐसे तथा कर्मरूपीरज को बिखेर डालने वाले अपूर्वकरण नामक गुणस्थान में पहुँचे हुए, ऐसे अर्थात् क्षपकश्रेणि में चढे हुए, गजसुकुमाल अणगार ने आत्मा के शुभ परिणामोंद्वारा तथा प्रशस्त अध्यवसाय द्वारा ज्ञानावर्णीय, दर्शनावर्णीय, मोहनीय और अंतराय इन चार कर्मोंका क्षय कर डालने से अनन्त, अनुत्तर, यावत् व्याघात रहित, आवरण रहित, समग्र और परिपूर्ण श्रेष्ठ केवल ज्ञान और केवल दर्शन उत्पन्न किया। उसके बाद वे सिद्ध हुए, यावत् बुद्ध हुए, मुक्त हुए, सर्वदा के लिये निवृत हुए और सब दुःखों से रहित हुए ।

मूलः—तत्थ णं अहासंनिहितेहिं देवेहिं सम्मं आराहितं तिकट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदए वुट्ठे, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिते, चेलुक्खेवे कए, दिव्वे य गीयगंधव्वनिनाय कए यावि होत्था ।

अर्थः—उसके बाद पास में रहने वाले देवोंने "इन मुनि ने सम्यक् प्रकार से चारित्र की आराधना की" इस प्रकार कहकर दिव्य सुगन्धित गंधोदक की वृष्टि की। पांच प्रकार के पुष्पों की वर्षा की। वस्त्रोंका उत्क्षेप

किया तथा दिव्यगायन गंधर्व अर्थात् मृदंगादिक शब्द सहित गायन किया।

मूलः—तते णं कण्हे वासुदेवे कल्लं पाउप्पभायाए जाव जलंते ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं सेयवरचामरेहिं उध्धुव्वमाणीहिं महया भडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते वारवतिं णगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणेव पहारेत्थगमणाए।

अर्थः—उसके बाद वह कृष्णवासुदेव दूसरे दिन प्रातःकाल प्रगट हुआ, यावत् सूर्य देदीप्यमान हुआ। उस समय स्नान कर यावत् विभूषित होकर श्रेष्ठ हाथी के स्कंध पर बैठे, उनके मस्तक पर कोरंट वृक्ष के पुष्पों की माला से शोभित छत्र धारण किया हुआ था, उनकी दोनों तर्फ श्वेत और श्रेष्ठ चॅवर ढुल रहे थे, सुभटों के समूह सहित इसप्रकार द्वारिका नगरीके मध्य २ भागमें होकर जहां अरिहन्त अरिष्टनेमि भगवान् थे वहां जानेको निकले।

मूलः—तते णं से कण्हे वासुदेवे वारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणे एक्कं पुरिसं पासति जुन्नं जराजज्जरियदेहं जाव किलंतं महातिमहालयाओ इट्टगरासीओ एगमेगं इट्टगं गहाय वहियारत्थापहातो अंतोगिहं अणुप्पविसमाणं पासति।

अर्थः—उसके बाद कृष्णवासुदेव द्वारिका नगरी के मुख्य २ बाजारों से निकले तब उन्हों ने एक पुरुष को

देखा। वह पुरुष वृद्ध था, उसका शरीर वृद्धावस्थाके कारण जीर्ण होगया था यावत् आतुर, बुभुक्षित, तृषातुर और ग्लानी पाया हुआ था। वह एक अत्यन्त बडे ईंटों के ढेर में से एक २ ईंट बाहर की गली के रास्ते से लेकर घर के अन्दर प्रवेश करता था। ऐसे पुरुष को देखा।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स पुरिसस्स अणुकंपणट्ठाए हत्थिखंधवरगते चेव एगं इट्टगं गेण्हाति, गेण्हित्ता वाहिया रत्थापहाओ अंतोगिहं अणुप्पवेसेति।

अर्थः—उसके बाद उन कृष्णवासुदेव ने उस वृद्ध पुरुष के ऊपर दया आने से श्रेष्ठ हाथी के स्कंध पर रहे हुए ही एक ईंट लेकर बाहर की गली के रास्ते से उसके घर के अन्दर प्रवेश किया अर्थात् हाथी पर बैठे हुए ही सेवक द्वारा एक ईंट मँगवाकर अपने हाथ में लेकर उसके घर में डाल दी।

मूल—तए णं कण्हेणं वासुदेवणं एगाए इट्टगाए गहिताए समाणीए अणेगेहिं पुरिससएहिं से महालए इट्टगस्स रासी वाहिया रत्थापहाओ अंतोघरंसि अणुप्पवेसिए।

अर्थ— उसके बाद जब कृष्ण वासुदेव ने एक ईंट ग्रहण की तब उनके साथके अनेक-सैकड़ों पुरुषों ने भी एक २ ईंट ग्रहण कर वह बड़ा ईंटों का ढेर बाहरके मार्ग से लेकर उसके घर में रख दिया।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे वारवतीए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमि तेणेव उवागते, उवागच्छित्ता जाव वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता गयसुकुमालं अणगारं अपासमाणे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–कहि णं भंते ! से ममं सहोदरे कणीयसे भाया गयसुकुमाले अणगारे जाणं अहं वंदामि नमंसामि ? ।

अर्थः—उसके बाद कृष्ण वासुदेव द्वारिका नगरी के मध्य २ होकर निकले। निकल कर जहाँ पर अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहाँ आये। आकर भगवान् को यावत् वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर गजसुकुमाल अणगार को न देखने से अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् को वंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोलेः— हे भगवन् ! वह मेरा सहोदर छोटा भाई गजसुकुमाल अणगार कहाँ है, उसको मैं वंदना करूँ, नमस्कार करूं ? ।

मूलः—तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–साहिए णं कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् ने कृष्ण वासुदेव को इस प्रकार कहाः—हे कृष्ण वासुदेव ! गजसुकुमाल अणगार ने अपनी आत्मा का अर्थ साधन कर लिया है।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी–कहण्णं भंते ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्ठे ?

अर्थः—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेवने अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् से इस प्रकार पूछा:—हे भगवन् ! गजसुकुमाल अणगार ने अपनी आत्मा का अर्थ किस प्रकार साधन किया ? ।

मूलः—तते णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु कण्हा ? गयसुकुमालेणं अणगारेणं ममं कल्लं पुव्वावरण्हकालसमयंसि वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा:—इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण वासुदेव ! गजसुकुमाल अणगारने मेरे को कल दिन के पूर्व भाग पिछले भाग के बीच अर्थात् दोपहर के समय वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर इस प्रकार कहा:— हे भगवन् ! आपकी आज्ञा से एकरात्रि की महाप्रातिमा को वहन करने की मैं इच्छा करता हूँ । यावत् मैंने उसे आज्ञा दी, उससे वह उस महा प्रातिमा को धारण कर महाकाल श्मशान में जाकर कायोत्सर्ग ध्यान में खड़ा रहा ।

मूलः—तए णं तं गयसुकुमालं अणगारं एगे पुरिसे पासति, पासित्ता आसुरुत्ते जाव सिद्धे । तं एवं खलु कण्हा ! गयसुकुमालेणं अणगारेणं साहिते अप्पणो अट्ठे साहिते अप्पणो अट्ठे ।

अर्थः—उसके बाद उस गजसुकुमाल अणगार को एक पुरुष ने देखा । देख कर वह तत्काल क्रोधातुर हो गया यावत् उसने गजसुकुमाल के साथ पूर्व कथनानुसार उपसर्ग किया और उसके परिणाम से अंत में वह गजसुकुमाल अणगार केवल ज्ञान प्राप्त कर सिद्धि पद को प्राप्त हो गया । इस कारण से इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण ! उस गजसुकुमाल अणगार ने अपनी आत्मा का अर्थ साधन किया है २ ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी—केस णं भंते ! से पुरिसे अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिते जे णं ममं सहोदरं कणीयसं भायरं गयसुकुमालं अणगारं अकाले चेव जीवियातो ववरोविते ? ।

अर्थः—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेवने अरिहन्त अरिष्ठनेमि भगवान् से इस प्रकार पूछा कि—हे भगवन् ! मृत्यु की चाह करने वाला यावत् लज्जाहीन वह ऐसा कौन पुरुष है कि जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई गजसुकुमाल अणगार की अकाल मृत्यु की है ? ।

मूल—तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी – मा णं कण्हा! तुमं तस्स पुरिसस्स पदोसमावज्जाहि, एवं खलु कण्हा! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स साहिज्जे दिन्ने।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि हे कृष्ण! तुम उस पुरुष पर द्वेष धारण मत करना; क्योंकि इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण! उस पुरुष ने गजसुकुमाल अणगार को कर्म क्षय करने के लिये सहायता दी है।

मूल—कहण्णं भंते! ते णं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स णं साहिज्जे दिन्ने?।

अर्थः—कृष्ण वासुदेव ने पूछा कि हे भगवन्! किस प्रकार उस पुरुष ने गजसुकुमाल अणगार को सहायता दी।

मूल—तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–से नूणं कण्हा! तुमं ममं पायवंदए हव्वमागच्छमाणे वारवतीए नयरीए एगं पुरिसं पाससि जाव अणुपविसिते। जहा णं कण्हा! तुमं तस्स पुरिसस्स साहिज्जे दिन्ने, एवमेव कण्हा! तेणं पुरिसेणं गयसुकुमालस्स अणगारस्स अणेगभवसयसहस्ससंचियं कम्मं उदीरेमाणेणं बहुकम्मणिजरत्थं साहिज्जे दिन्ने।

अर्थः—उसके वाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहाः—हे कृष्ण ! अभी तुम निश्चय करके मेरे चरण में वंदना करने के लिये शीघ्रता से आरहे थे, उस वक्त द्वारिका नगरी के बीच तुमने एक वृद्ध पुरुष को ईंटें उठाता देखा था यावत् उसकी सव ईंटों का ढेर तुमने उसके घर में रख दिया, तो हे कृष्ण ! जिस प्रकार तुमने उस पुरुष की सहायता की, उसी प्रकार हे कृष्ण ! उस पुरुष ने गजसुकुमाल अणगार के अनेक लाखों भवों संचय किये हुए (एकत्रित किये हुए) कर्म वंधकी उदीरणा करके वहुत कर्मोंका नाश करने में सहायता दी है।

मूल—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी–से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे?

अर्थः—उसके वाद उन कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्ठनेमी भगवान् से पूछा–कि हे भगवन् ! उस पुरुष स प्रकार जानूँ अर्थात पहचानूँ ? ।

मूल—तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–जे णं कण्हा ! तुमं वारवतीए नयरीए पविसमाणे पासेत्ता ठितए चेव ठितिभेएणं कालं करिस्सति, तण्णं तुमं जाणेज्जासि एस णं से पुरिसे ? ।

अर्थः—उसके वाद अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि–हे कृष्ण ! तुम नगरी में प्रवेश करते समय तुम को देख कर उसी जगह दरवाजे में खड़ा हुआ ही भयके कारण अध्यव-

सायरूप उपक्रमण द्वारा आयुष्य पूरा होने से मृत्यु प्राप्त करेगा, उस वक्त तुम जानना कि वह यही पुरुष है।

मूल—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदाति नमंसाति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव आभिसेयं हत्थिरयणं तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता हत्थिं दुरूहति, दुरूहित्ता जेणेव वारवती णयरी जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

अर्थः—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर जहां पट्टाभिषेक हाथी रत्न था वहां आये। आकर हाथी के उपर चढ़े। चढ़ कर जहां द्वारिका नगरी थी और जहां अपना घर था, उसी तरफ चलने की तैय्यारी की।

मूल—तएणं तस्स सोमिलमाहणस्स कल्लं जाव जलंते अयमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पन्ने—एवं खलु कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं पायवंदए निग्गते, तं नायमेयं अरहता विणायमेयं अरहता सुतमेयं अरहता सिद्धमेयं अरहता भविस्सइ कण्हस्स वासुदेवस्स, तं न नज्जति णं कण्हे वासुदेवे ममं केण वि कुमारणेणं मारिस्सति त्ति कट्टु भीते सयातो गिहातो पडिनिक्खमति, कण्हस्स वासुदेवस्स वारवतिं नगरिं अणुपवि-समाणस्स पुरतो सपक्खिं सपडिदिसिं हव्वमागते।

अर्थः—उसके बाद उस सोमिल ब्राह्मण के मनमें दूसरे दिन प्रातःकाल यावत् सूर्य देदीप्यमान हुआ तब उसको इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि इस प्रकार निश्चय करके कृष्ण वासुदेव आज अरिहंत अरिष्टनेमी भगवान् के चरण वंदन करने के लिये निकले हैं। इस से अरिहंत तो यह बात जानते हैं, अरिहंत तो विज्ञानी हैं, अरिहंत ने यह बात सुनी है और सिद्धही हैं तो अरिहंत ने यह बात कृष्ण वासुदेव से कही होगी इससे मैं नहीं जानता कि कृष्ण वासुदेव मुझे किस कुमरण द्वारा मारेंगे? इस प्रकार विचार करके भयभीत हुआ, घबराता हुआ अपने घर से बाहर निकला और द्वारिका नगरी में प्रवेश करते हुए कृष्ण वासुदेव के सामने यानी बराबरी पर शीघ्रता से आया।

मूल—तए णं से सोमिले माहणे कण्हं वासुदेवं सहसा पासेत्ता भीते ठिते य चेव ठितिभेयं कालं करेति धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसात्ति संनिवाडिते।

अर्थ—उसके बाद वह सोमिल ब्राह्मण कृष्ण वासुदेव को एक दम देख कर भय भीत हुआ और खड़े २ ही अपना आयु पूर्ण होने से कराल काल के मुख में कवलित होकर धड़ाक से पृथ्वी तल पर गिरगया।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे सोमिलं माहणं पासति, पासित्ता एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! से सोमिले माहणे अपत्थियपत्थिय जाव परिवज्जिते जेण ममं सहोयरे कनीयसे भायरे गयसुकुमाले अणगारे अकाले ॥६८॥

चेव जीवियाओ ववरोविए त्ति कट्टु सोमिलं माहणं पाणेहिं कड्ढावेत्ति, कड्ढावित्ता तं भूमिं पाणिएणं अब्भोक्खावेति अब्भोक्खावित्ता, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागते सयं गिहं अणुपविट्ठे ।

अर्थः—उसके बाद उन कृष्णवासुदेव ने सोमिल ब्राह्मण को देखा। देख कर इस प्रकार कहा:—अहो देवानुप्रियों (लोगों)! यह सोमिल नामक ब्राह्मण मृत्यु की चाह करने वाला यही निर्लज्ज है कि जिसने मेरे सहोदर छोटे भाई गजसुकुमाल की अकाल में ही मृत्यु की है। इस प्रकार कहकर उस सोमिल ब्राह्मण के शरीर (लाश) को चाण्डालों के द्वारा बाहर निकलवाया। निकलवा कर उस भूमि पर पानी छिड़कवाया। पानी छिड़कवा कर जहां अपना घर था वहां आये और अपने घर में प्रवेश किया।

मूलः— एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स अट्ठमज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते (सू० ६)

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने आठवें अंग अंतगडदसा के तीसरे वर्ग के आठवें अध्ययन का यह अर्थ कहा है। (सू० ६)

॥ इति अष्टम अध्ययन संपूर्ण ॥ ८ ॥

॥ अथ नवम अध्ययन ॥

मूलः—नवमस्स उ उक्खेवओ ।

अर्थः—जम्बू स्वामीने सुधर्मस्वामी से पूछा कि हे भगवन् ! आठवें अध्ययन का श्रीमहावीर स्वामीने यह अर्थ कहा है तो अब नववें अध्ययन का कौनसा अर्थ कहा है उसे वर्णन करिये ? ।

मूलः—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वारवतीए नयरीए जहा पढमए जाव विहरति । तत्थ णं वारवतीए नयरीए वलदेवे नामं राया होत्था, वन्नओ ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिसकाल तिससमय में द्वारिका नामक नगरी थी वगैरह सर्व वृत्तान्त प्रथम अध्ययन की तरह कहना । यावत् नेमिनाथ भगवान् पधारे । उस द्वारिका नगरी में बलदेव नामक राजेन्द्र थे, उनका वर्णन करना ।

मूलः—तस्स णं वलदेवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था, वन्नओ । तते णं सा धारिणी सीहं सुमिणे जहा गोयमे, नवरं सुमुहे नामं कुमारे, पन्नासं कन्नाओ, पन्नासदाओ, चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति वीसं

वासाइं परियातो, सेसं तं चेव, सेत्तुंजे सिद्धे, निक्खेवओ। एवं दुम्मुहे वि कूवदारए वि, तिन्नि वि बलदेव-धारिणीसुया। दारुए वि एवं चेव, नवरं वसुदेवधारिणीसुते। एवं अणाधिट्ठी वि वसुदेवधारिणीसुते।

अर्थः—उन बलदेव राजेन्द्र के धारणी देवी नामक राणी थी, उसका वर्णन कहना। उसके बाद उस धारिणी राणी ने एक समय स्वप्न में सिंह देखा वगैरह सब गौतम कुमार की तरह कहना। विशेष यह है कि सुमुख नामक कुमार हुआ, उस का पचास कन्याओं के साथ लग्न किया। पचास २ कोटि द्रव्य का दहेज दिया। फिर उसने दीक्षा ग्रहण की। चौदह पूर्वों का अभ्यास किया। बीस वर्ष चारित्रावस्था का पालन किया। शेष सब पहले अध्ययन की तरह कहना। अन्त में शत्रुंजयागिरिराज पर सिद्ध हुए। यह नववें अध्ययन का स्वरूप कहा। इसी प्रकार दुर्मुखकुमार का दसवाँ और कूपदारककुमार का ग्यारहवाँ जानना। ये तीनों बलदेव और धारिणी के पुत्र थे। दारुककुमार का बारहवाँ अधिकार भी इसी प्रकार कहना। विशेष यह है कि यह वसुदेव और धारिणी के पुत्र थे। इस प्रकार अनाधृष्टि तेरहवाँ भी वसुदेव और धारिणी का पुत्र था। सबों का अधिकार एक समान कहना। यावत् ये सब शत्रुञ्जय तीर्थपर मुक्ति पाये हैं।

मूलः—एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं तच्चस्स वग्गस्स

तेरसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नते (सूत्र ७) ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धिपद को पाये हुए श्री महावीर स्वामीने आठवें अंग अंतगडदसा के तीसरे वर्ग के तेरहवें अध्ययन का यह अर्थ कहा है। (सू० ७)

॥ इति त्रयोदश अध्ययनरूप तीसरा वर्ग समाप्तः ॥



॥ अथ चतुर्थ वर्ग ॥

मूलः—तइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं तच्चस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थः—जम्बूस्वामी सुधर्मस्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्ध पदको पाये हुए श्रीमहावीर स्वामीने तीसरे वर्गका यह अर्थ कहा है, तो अब चौथे वर्ग का महावीर स्वामीने कौनसा अर्थ कहा है। वह बतलाइये ?।

मूलः—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा 'जालि १ मयालि २ उवयाली ३ पुरिससेणे ४ य वारिसेणे ५ य । पज्जुन्न ६ संब ७ अनिरुद्धे '८ सच्चनेमी ९ य दढनेमी १० ॥ १ ॥

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्रीमहावीर, स्वामी ने चौथे वर्ग के दश अध्ययन इस प्रकार कहे हैं:—पहला जालि, दूसरा मयालि, तीसरा उवयालि, चौथा पुरुषसेन, पांचवाँ वारिषेण, छट्ठा प्रद्युम्न, सातवाँ शांब, आठवाँ अनिरुद्ध, नववां सत्यनेमि और दशवां दढनेमि इन दश कुमारों के नाम से दश अध्ययन हैं ।

मूल—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नता, पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नते ? ।

अर्थः—हे भगवन् ! जो श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुये श्री महावीर स्वामी ने चौथे वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं तो हे भगवन ! चौथे वर्ग के पहले अध्ययन का कैसा अर्थ कहा है ? ।

मूल—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वारवती णगरी तीसे जहा पढमे कण्हे

वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरति ।

अर्थ—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी थी उस में पहले अध्ययन में कहे अनुसार कृष्ण वासुदेव अधिपतिपना भोगते हुए यावत् रहते थे ।

मूल—तत्थ णं बारवतीए णगरीए वसुदेवे राया, धारिणी देवी, वन्नओ । जहा गोयमो नवरं जालिकुमारे, पन्नासओ दाओ, बारसंगी, सोलस वासा परियाओ, सेसं जहा गोयमस्स जाव सेत्तुंजे सिद्धे।

अर्थ—उस द्वारिका नगरी में वसुदेव नामक राजा थे, उनके धारिणीदेवी नामक राणी थी, उसका वर्णन करना । उस राणी के गौतम कुमार के समान पुत्र हुआ । विशेष यह है, कि उसका नाम जालिकुमार रक्खा, पचास कन्यायों से लग्न कराया और उसको पचास क्रोड़ का दहेज दिया । फिर उसने दीक्षा ग्रहण की, बारह अंगों का अभ्यास किया । सोलह वर्ष तक चारित्र को पालन किया । शेष सब वर्णन गौतम कुमार की तरह कहना यावत् शत्रुंजयगिरि तीर्थराज पर सिद्ध हुआ ॥ १ ॥

मूल—एवं मयाली उवयाली पुरिससेणे य वारिसेणे य, एवं पज्जुन्ने वि त्ति, नवरं कण्हे पिया रुप्पिणी माता । एवं संबे वि, नवरं जंबवती माता । एवं अनिरुद्धे वि, नवरं पज्जुन्ने पिया वेदब्भी माया।

एवं सच्चनेमी, नवरं समुद्दविजये पिता सिवा माता। एवं दढनेमी वि। सव्वे एगगमा। चउत्थवग्गस्स निक्खेवओ (सू०८)

अर्थ—इसी प्रकार २ मयालि, ३ उवयालि, ४ पुरुषसेन, ५ वारिसेण और ६ प्रद्युम्न इन पाँचों कुमारों का अधिकार समान जानना, विशेष है कि इनके पिता कृष्ण वासुदेव और माता रुक्मिणी थी। इसी प्रकार ७ सांब कुमार का अध्ययन कहना। विशेष यह है कि इनका पिता कृष्ण और माता जांबुवती थी। इसी प्रकार ८ अनिरुद्ध कुमार का अध्ययन कहना। विशेष यह है कि इनका पिता प्रद्युम्न कुमार और माता वैदर्भी थी। इसी प्रकार ९ सत्यनेमि कुमार का अध्ययन कहना। विशेष यह है कि इनके पिता समुद्रविजय जी और माता शिवादेवी थी। इसी प्रकार १० दृढनेमिका अध्ययन कहना। सबों का एक समान ही अधिकार है। ये भी सब शत्रुंजय पर मुक्ति गये हैं। इस प्रकार चौथे वर्ग के दशों अध्ययनों का स्वरूप कहा।

॥ इति चौथे वर्ग के दश सम्पूर्ण ॥

॥ अथ पंचम वर्ग ॥

मूल—जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं चउत्थस्स, वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वगस्स अंतगडदसाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?।

अर्थः— जम्बू स्वामी सुधर्मस्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन् ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने चौथे वर्ग का यह अर्थ कहा है तो अब हे भगवन् ! अंतगडदसा के पांचवें वर्ग का श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने किस प्रकार का अर्थ कहकर समझाया है ?।

मूलः—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स वगस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा— 'पउमावती १ य गोरी २ गंधारी ३ लक्खणा ४ सुसीमा ५ य । जंबवई ६ सच्चभामा ७ रुप्पिणि ८ मूलसिरि ९ मूलदत्ता १० वि ॥ १ ॥"

अर्थः— इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् यावत् सिद्धि पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने पांचवें वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं, उनके नाम इस प्रकार हैः— पद्मावती १, गौरी २, गांधारी ३,

लक्ष्मणा ४, सुसीमा ५, जाम्बूवती ६, सत्यभामा ७, रुक्मिणी ८, मूलश्री ९ और मूलदत्ता १० इन दश राणियों के नाम से दश अध्ययन कहे हैं।

मूलः—जइ णं भंते ! पंचमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?।

अर्थः—हे भगवन पांचवें वर्ग के दश अध्ययन श्री महावीर स्वामी ने कहे हैं तो हे भगवन् ! पांचवें वर्ग के पहले अध्ययन का कैसा अर्थ कहा है ?।

मूलः—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वारवती नगरी, जहा पढमे जाव कण्हे वासुदेवे आहेवच्चं जाव विहरति। तस्स णं कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावइ नाम देवी होत्था, वन्नओ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी थी वगैरह पहले अध्ययन की तरह कहना। यावत् उस नगरी में कृष्ण वासुदेव अधिपति बनकर रहते थे। उन कृष्ण वासुदेव की पद्मावती देवी नामक राणी थी उसका वर्णन करना।

मूलः— ते णं काले णं ते णं समए णं अरहा अरिट्ठनेमि समोसढे जाव विहरति। कण्हे वासुदेवे

णिग्गते जाव पज्जुवासति।

अर्थः—तिस काल तिस समय में अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् वहां पधारे, यावत् योग्य स्थान लेकर रहे। उस वक्त उनको वंदना करने के लिये कृष्णवासुदेव नगरी से निकले, यावत् भगवान् की सेवा करने लगे।

मूलः—तए णं सा पउमावती देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ तुट्ठ जहा देवती जाव पज्जुवासति।

अर्थः— उसके बाद वह पद्मावती देवी इस वृतान्त का अर्थ जान कर यानी भगवान् के पधारने की बात सुन कर देवकी देवी की तरह हृष्ट तुष्ट होकर भगवान् के पास जाकर यावत् भगवान् की सेवा करने लगी।

मूलः—तए णं अरिहा अरिट्ठनेमि कण्हस्स वासुदेवस्स पउमावतीए य धम्मकहा, परिसा पडिगया।

अर्थः— उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव तथा पद्मावती देवी वगैरह पर्षदा को धर्म कथा कही। जिसको सुन कर पर्षदा अपने २ स्थान पर गई।

मूलः—तए णं कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—इमीसे णं भंते! वारवतीए नगरीए नवजोयण जाव देवलोगभूयाए किंमूलाते विणासे भविस्सति?।

अर्थः—उसके बाद कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्ठनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर इस प्रकार पूछाः– हे भगवन् ! यह द्वारिका नगरी नव योजन के विस्तार वाली यावत् स्वर्ग के समान है इसके विनाश होने के लिये क्या कारण उत्पन्न होगा ? ।

मूलः—कण्हाति अरहं अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–एवं खलु कण्हा ! इमीसे बारवतीए नयरीए नवजोयण जाव देवलोगभूयाए सुरग्गिदीवायणमूलाए विणासे भविस्सति ।

अर्थः— हे कृष्ण ! ऐसा संबोधन करके अरिहंत अरिष्ठनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहाः– इस प्रकार निश्चय करके हे कृष्ण ! यह द्वारिका नगरी नव योजन विस्तार वाली यावत् देवलोक के समान है। इसके विनाश होने में मद्य (शराब), अग्नि और द्वीपायन ये तीन कारण होंगे, क्योंकि कुमारों को उन्मत्त करने वाली मदिरा; अग्निकुमार देव ने प्रज्वलित की हुई अग्नि और द्वीपायन यानी मदिरा पान से उन्मत्त हुए तुम्हारे कुमारों के दुःख देने से द्वारिका विनाश करने का नियाणा करने वाला उक्त नाम का बालतपस्वी कि जो आयु पूर्ण करके अग्निकुमार देव होगा। ये तीन कारण होंगे अर्थात् अग्निकुमार देव अग्नि लगाने वाला द्वीपापन नामक तपस्वी ही द्वारिका का नाश करने के लिये कारण भूत होगा।

मूलः—तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म एयं

अब्भत्थिए समुप्पन्ने – धन्ना णं ते जालि-मयालि-उवयाली-पुरिससेण-वारिसेण-पज्जुन्न-सांव-अनिरुद्ध-दढनेमि सच्चनेमिप्पभियातो कुमारा जे णं चइत्ता हिरन्नं जाव परिभाएत्ता अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतियं मुंडा जाव पव्वतिया। अहण्णं अधन्ने अकयपुन्ने रज्जे य जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिते नो संचाएमि अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए जाव पव्वतित्तए।

अर्थः— इसके वाद कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत आरिष्टनेमि भगवान् के पास से इस प्रकार की वात सुनकर हृदय में धारण करने से इस प्रकार विचार किया कि वे जालि, मयालि, उवयालि, पुरुषसेन, वारिषेण प्रद्युम्न, शांब, अनिरुद्ध, दृढनेमि और सत्यनेमि वगैरह कुमारों धन्य है कि जिन्होंने राज, स्वर्ण वगैरह का त्याग कर यावत् अपने हिस्से को दान देकर अरिहंत आरिष्टनेमि भगवान् के पास मुंड होकर दीक्षा ग्रहण की है। मैं ही सिर्फ अप्रशंसित एवं अधन्य पुण्य हीन हूं, तथा राज के लिये यावत् अंतःपुर (रणवास) के लिये और मनुष्य सम्बन्धी काम भोग के लिये अनुरागी मुर्छित हूं, जिससे मैं अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास यावत् दीक्षा लेने को असमर्थ हूं।

मूलः—कण्हाइ ! अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेव एवं वयासी– से नूणं कण्हा ! तव अयमब्भत्थिए समुप्पन्ने–धन्ना णं ते जाव पव्वतित्तए से नूणं कण्हा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि।

अर्थः—हे कृष्ण ! ऐसा सम्बोधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके हे कृष्ण ! तुमको यह विचार उत्पन्न हुआ है कि वे कुमार धन्य हैं कि जिन्होंने दीक्षा ग्रहण की है और मैं दीक्षा ले नहीं सकता । तो निश्चय करके हे कृष्ण ! यह बात सची है ? कृष्ण वासुदेवने ने कहा- हां भगवान् यह सच्ची है ।

मूलः—तं नो खलु कण्हा ! तं एवं भूअं वा भव्वं वा भविस्सति वा जन्नं वासुदेवा चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइस्संति ।

अर्थः—तो निश्चय करके हे कृष्ण ! ऐसा हुआ नहीं, हो सकता नहीं और होगा भी नहीं कि जो वासुदेवों ने राज्य का त्याग कर स्वर्ण छोड़ यावत् दीक्षा ग्रहण की हो, ग्रहण करते हो या ग्रहण करेंगे ।

मूलः—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ- न एयं वा जाव पव्वइस्संति ? ।

अर्थ—हे भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहते हो कि ऐसा हुआ नहीं यावत् वासुदेवोंने दीक्षा ग्रहण की नहीं ? ।

मूलः—कण्हाति ! अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी – एवं खलु कण्हा सव्वे वि य णं वासुदेवा पुव्वभवे निदाणकडा, से एतेणट्ठेणं कण्हा ! एवं वुच्चति – न एयं भूयं जाव पव्वइस्संति ।

अर्थः—हे कृष्ण! ऐसा सम्बोधन करके अरिहंत आरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके हे कृष्ण! सब वासुदेवों ने पूर्वभव में नियाणा किया हुआ होता है, नियाणे करने वाले को चारित्र उदय आता नहीं इसलिये इस कारण से हे कृष्ण! मैं ऐसा कहता हूं कि ऐसा हुआ नहीं यावत् वासुदेवों ने दीक्षा ली नहीं।

मूल—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहं अरिट्ठनेमिं एवं वयासी–अहं णं भंते! इतो कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिस्सामि? कहिं उववज्जिस्सामि?।

अर्थः—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् से इस प्रकार कहा कि– हे भगवन्! मैं यहां से आयुष्य को पूरा कर कहां जाऊँगा? कहां उत्पन्न होऊंगा?।

मूल—तए णं अरिहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी– एवं खलु कण्हा! वारवतीए नयरीए सुरदीवायणकोवनिद्दड्ढाए अम्मापिइनियगविप्पहूणे रामेण वलदेवेण सद्धिं दाहिणवेयालिं अभिमुहे जोहिट्ठिल्लपामोक्खाणं पंचण्हं पंडवाणं पंडुरायपुत्ताणं पासं पंडुमहुरं संपत्थिते कोसंववणकाणणे नग्गोहवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टए पीतवत्थपच्छाइयसरीरे जरकुमारेणं तिक्खेणं कोदंडविप्पमुक्केणं इसुणा वामे पादे विद्धे

समाणे कालमासे कालं किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उज्जलिए नरए नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि।

अर्थः—उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा कि निश्चय करके हे कृष्ण! द्वारिका नगरी अग्निकुमार में देव उत्पन्न होने वाले द्वीपायन के कोप से जल कर भस्म हो जायगी तब माता पिता और स्वजन रहित होने से तुम अकेले ही बलदेव के साथ दक्षिण दिशा के समुद्र के किनारे बसी हुई पांडु मथुरा नामक नगरी की तरफ युधिष्ठिर वगैरह पांडु राजा के पुत्र पांचों पाण्डवों के पास जाने के लिये चलोगे। उस वक्त रास्ते में कौशांबी नगरी के जंगल में श्रेष्ठ बड़ वृक्ष के नीचे पृथ्वीशीला पट्टक पर पीले वस्त्र से शरीर को ढक कर सोओगे। उस वक्त जरा कुमार के धनुष में से छोड़ा हुआ तीक्ष्ण बाण द्वारा दाहिना पैर विंध जाने से आयु समय आयुष्य पूरा कर उज्वल वेदना वाली बालुकप्रभा नाम्मक तीसरी नरक पृथ्वी में नर्कावस्था में उत्पन्न होओगे।

मूल—तए णं कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ओहय जाव झियाति।

अर्थ—इस के बाद कृष्ण वासुदेव अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् से यह अर्थ सुन कर तथा हृदय में धारण कर शून्य चित्त से संकल्प विकल्प करते हुए विचार करने लगे।

मूलः—कण्हाति ! अरहा अरिट्ठनेमि कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! तच्चाओ पुढवीओ उज्जलियाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेसीए उस्सप्पिणीए पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे बारसमे अममे नामं अरहा भविस्सासि, तत्थ तुमं बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणेत्ता सिज्झिहिसि ।

अर्थः— इसके बाद हे कृष्ण ! ऐसा सम्बोधन करके अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने कृष्ण वासुदेव से कहा कि हे देवानुप्रिय ! तुम आर्तध्यान (दुःखी मत होओ) मत करो; क्योंकि तुम प्रबल वेदना वाली तीसरी नरक पृथ्वी से अंतरा रहित बाहर निकल कर इसी जम्बु द्वीप नामक द्वीप के भारत वर्ष में आती उत्सर्पिणी काल में पुंड्र देशान्तर्गत शतद्वार नामक नगर में बारहवें अमम नामक अरिहंत होओगे । वहां तुम बहुत वर्षों तक केवली पर्याय को पालकर सिद्ध पद को प्राप्त करोगे । बुद्ध होओगे और कर्म रहित होकर सब दुःखों का अन्त करोगे ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ अप्फोडेति, अप्फोडित्ता वग्गाति, वग्गित्ता तिवतिं छिंदाति, छिंदित्ता सीहनायं करेति करित्ता, अरहं अरिट्ठनेमिं वंदाति णमंसाति, वंदित्ता णमंसित्ता तमेव अभिसेक्कं हत्थिं दुरूहाति, दुरूहित्ता जेणेव बारवती णगरी जेणेव

सए गिहे तेणेव उवागते, अभिसेयहत्थिरयणातो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सए सीहासणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थः— इसके बाद उन कृष्णवासुदेव ने अरिहंत अरिष्ठनेमि भगवान् के पाससे यह अर्थ कान द्वारा सुन कर हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट होकर भुजाओं का आस्फालन किया, करके उछाल मारी, उछाल मारकर त्रिपदी यानी रंगभूमि ऊपर रहे हुए योद्धा के समान तीन डगले स्थापन किये अर्थात् तीन फलांग कूदकर सिंहनाद किया। सिंह नाद करके अरिहंत अरिष्ठनेमि भगवान् को वंदना की, नमस्कार किया, वंदना नमस्कार करके अपने पट्टाभिषेक हाथी पर चढ़े। चढ़कर जहां द्वारिका नगरी थी और जहां अपना घर था वहां आये। आकर पट्टाभिषेक हस्ती रत्न से नीचे उतरे, उतर कर जहां अपना सभा मण्डप था और जहां अपना सिंहासन था वहां आये। आकर उस श्रेष्ठ सिंहासन पर पूर्व दिशा तरफ मुंह करके बैठे, बैठ कर कौडुम्बिक पुरुषों को बुलाये, बुला कर इस प्रकार उनसे कहा कि:—

मूलः—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवतीए नयरीए सिंघाडग जाव उवघोसेमाणा एवं वयह—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! वारवतीए नयरीए नवजोयण जाव भूयाए सुरग्गिदीवाणमूलाए विणासे भविस्सति, तं जो णं देवाणुप्पिया ! इच्छति वारवतीए नयरीए राया वा जुवराया वा ईसरे तलवरे माडंविय कोडुंविय इब्भ सेट्ठी वा देवी वा कुमारो वा कुमारी वा अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे जाव पव्वइत्तए, तं नं कण्हे वासुदेवे विसज्जेति, पच्छातुरस्स वि य से अहापवित्तं वित्तिं अणुजाणाति, महता इड्ढीसकारसमुदएण य से निक्खमणं करेति दोच्चं पि तच्चं पि घोसयणं घोसेह, घोसइत्ता मम एयं आणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थः— हे देवानुप्रियो ! तुम जाओ और द्वारिका नगरी के तीनकोन वाले (तीन रास्ते जहां मिले हों) वगैरह सब मार्गों में यावत् उद्घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो कि निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! यह द्वारिका नव योजन के विस्तार वाली यावत् स्वर्ग के समान है, इसका मादिरा, अग्नि और द्वीपायन तपस्वी के निमित्त से नाश होने वाला है इसलिये हे देवानुप्रियो ! इस द्वारिका नगरी में जो कोई राजा, युवराज, राज कुमार, ईश्वर, प्रधान, तलवर (राजा का प्रिय), माडंपिक (पटेल), कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी (सेठ), राणी, कुमार अथवा कुमारी अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास मुंड होकर दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा करते हों, उन सबों को कृष्ण वासुदेव

आज्ञा देते हैं तथा दीक्षा लेने वालों ने अपने शेष कुटुम्ब को छोड़ दिया हो और उनका निर्वाह करने में जिसका मन दुःखी होता हो उनकी जिस प्रकार पहले बंधी हुई आजीविका होगी उसी प्रकार हम देंगे; परन्तु आजीविका को उत्पन्न करने वालों ने दीक्षा लेने से पीछे निर्वाह करने लायक मनुष्यों की आजीविका हम बंद करेगें नहीं और बड़ी समृद्धि तथा सत्कार समुदाय से उनका दीक्षा महोत्सव भी हम ही करेंगे। इस प्रकार दो वार, तीन वार उद्घोषणा करो। उद्घोषणा करके यह मेरी आज्ञा वापस लाओ। तब उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उसी प्रकार करके यावत् उनकी आज्ञा को वापिस कर दिया।

मूलः—तए णं सा पउमावती देवी अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियया अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी – सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं से जहेतं तुब्भे वदह जं नवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिये ! मा पडिबंधं करेहि।

अर्थः—उसके बाद उस पद्मावती देवी ने भी अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास से धर्म देशना को सुन कर हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट होती हुई यावत् हृदय में आनन्द मनाती हुई अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान्

को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली हे भगवन्! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन (साधुधर्म) की श्रद्धा करती हूं कि जो आप ने अभी बतलाया है, विशेषयह कि हे देवानुप्रिय! मैं कृष्ण वासुदेव की आज्ञा लेकर उसके बाद आप महानुभाव देवानुप्रिय के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण करूंगा। प्रभु ने कहा–हे देवानुप्रिया! जिस प्रकार तुम्हें सुख उत्पन्न हो वैसा करो। धर्म कार्य में विलंब नहीं करना चाहिये।

मूलः— तए णं सा पउमावती देवी धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति, दुरूहित्ता जेणेव बारवती नगरी जेणेव सए गिहे तेणेव उवगच्छति, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी – इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिए!

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती देवी श्रेष्ठ धार्मिक वाहन के ऊपर चढ़ी। चढ़ कर जहां द्वारिका नगरी थी और जहां अपना घर था वहां आई। आकर धार्मिक वाहन से नीचे उतरी। नीचे उतर कर जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां आई। आकर दोनों हाथ जोड़ कर यावत् मस्तक पर अंजली लगा कर इस प्रकार कहने लगी– हे देवानुप्रिय! मैं इच्छा करती हूं कि आपकी आज्ञा पाकर मैं अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् के पास मुंड होकर यावत् दीक्षा ग्रहण करूं। यह

सुनकर कृष्ण वासुदेव ने कहा हे देवानुप्रिया ! जिस प्रकार तुमको सुख उत्पन्न हो वैसा कार्य शीघ्र करो ।

मूलः— तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव देवाणुप्पिया ! पउमावतीए देवीए महत्थं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, उवट्ठवित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थः—उसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक मनुष्यों को बुलाये। बुला कर इस प्रकार कहा– हे देवानु–प्रियो ! पद्मावती देवी के लिये अधिक मूल्य वाली दीक्षा महोत्सव के अभिषेक की सामग्री शीघ्रातिशीघ्र तैयार करो । तैयार करके यह मेरी आज्ञा मुझे वापस करो । इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उसी प्रकार सामग्री तैयार करके यावत् उनकी आज्ञा वापस की ।

मूलः—तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमावतीं देवीं पट्टयं दुरुहाति, अट्ठसएणं सोवन्नकलसं जाव महानि–क्खमणाभिसएणं अभिसिंचाति, अभिसिंचित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेति करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सिबियं रदावेति, रदावित्ता तं सिबियं दुरूहाति, दुरूहित्ता वारवतीणगरीमज्झंमज्झेणं निग्गच्छाति, निग्गच्छित्ता

जेणेव रेवतए पव्वए जेणेव सहसंववण उज्जाणे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता सीयं ठवेति, ठवित्ता पउमावती देवी सीयाओ पच्चोरुहाति, पच्चोरुहित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमि तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमीं तिक्खत्तो आयाहिणंपयाहिणं करोति, करित्ता वंदाति णमंसाति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी—

अर्थः—इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने पद्मावती देवी को पाट के ऊपर बैठाया। बैठा करके एकसौ आठ स्वर्ण के कलसों स यावत् अपनी राज्य समृद्धि के अनुसार उसका बडाभारी दीक्षा संबंधी अभिषेक किया। अभिषेक करके सब प्रकार के अलंकारों से सुशोभित की। सुशोभित करके हजार मनुष्यों से उठे ऐसी शिविका तैयार करा कर उस शिविका में बिठलाई। बिठला कर द्वारिका नगरी के मध्य २ होकर निकले। निकल कर जहां रैवतक पर्वत था और जहां सहस्राम्रवन नामक उद्यान (बाग) था वहां आये। आकर शिविका स्थापन किया। स्थापन करके पद्मावती देवी शिविका से नीचे उतरी, उतर कर जहां अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहां सब आये आकर भगवान् को तीन वक्त प्रदाक्षिणा की। करके वंदना की, नमस्कार कर कृष्णवासुदेव ने इस प्रकार कहा—

मूलः—एस णं भंते! मम अग्गमहिसी पउमावई नामं देवी इट्ठा कंता पिया मणुन्ना मणामा अभिरामा जाव किमंग पुण पासणयाए? तन्नं अहं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि, पडिच्छंतु णं

देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं । अहासुहं ।

अर्थः— हे भगवान् ! यह मेरी पटरानी पद्मावती नामक देवी इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मनाम, अभिराम यावत् (गूलर के पुष्प के समान सुनने में दुर्लभ है) वैसी देखने में दुर्लभ हो इसमे क्या कहना ? ऐसी उसको मैं हे देवानुप्रिय ! आपको शिष्या रूप भिक्षा देता हूं । इसलिय हे देवानुप्रिय ! आप इस शिष्यारूप भिक्षा को ग्रहण करो । तब भगवान ने कहा– जिसमें तुमको सुख पैदा हो वैसा करो ।

मूलः—तए णं सा पउमावती देवी उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयति, ओमइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, कारित्ता जेणेव अरहा अरिट्ठनेमिं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वदासी– आलित्ते जाव धम्ममाइक्खितं ।

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती देवी उत्तर और पूरब दिशा के बीच इशान कौन में गई । जाकर स्वतः अपने हाथ से आभूषण (अलंकार) निकाले, स्वतः ही पांच मुष्टि द्वारा लोच किया, लोच करके जहां अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् थे वहां आई । आकर भगवान को वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार कर इस प्रकार बोली–हे भगवन् ! यह संसार आदीप्त जलरहा है यावत् प्रदीप्त अतीव जलरहा है अर्थात् यह संसार राग-

द्वेष-विषय-कषाय-मोहमाया आदि से जन्म जरा मरण आदि दुःखों से व्याप्त है इसलिये इन दुःखों से छुटने के लिये मैं आपके शरणे आई हूँ, इससे मैं इच्छा करती हूं कि आप मुझे दीक्षा दो, यावत् आचार, गौचरी, विनय, वैनियक, करण-सीतरी, चरण सीतरी और प्राणयात्रा (धारण) के लिये जिसमें निर्दोष आजीविका हो ऐसा धर्म मुझसे कहो।

मूलः—तते णं अरहा अरिट्ठनेमि पउमावतीं देवीं सयमेव पव्वावेति, पव्वावित्ता सयमेव मुंडावेति, सयमेव जक्खिणीते अज्जाते सिस्सिणिं दलयति।

अर्थः— उसके बाद अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् ने पद्मावती देवी को दीक्षा दी। दीक्षा देकर मुंड * की और आपने ही यक्षिणी नामक साध्वी को शिष्या रूप में दी।

मूल—तते णं सा जक्खिणी अज्जा पउमावइं देवीं सयं पव्वावेइ जाव संजमियव्वं।

अर्थः— उसके बाद यावत् उस यक्षिणी सध्वी ने पद्मावती देवी को स्वतः दीक्षा दी यावत् धर्मोपदेश दिया कि चारित्र पालन करने के लिये तुझको इस प्रकार यत्न करना चाहिये इत्यादि।

मूलः—तए णं सा पउमावती जाव संजमइ। तते णं सा पउमावती अज्जा जाता ईरियासमिया जाव

* मुख्य शिष्या यक्षिणी साध्वी के हाथ से केश लेने पर रूप लोच किया समझना चाहिये।

गुत्तबंभयारिणी ।

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती देवी यावत् संयम में यत्न करने लगी। जिससे वह पद्मावती साध्वी इर्यासमिति, भाषासमितियुक्त यावत् मनोगुप्ति, वचन गुप्ति, गुप्त इन्द्रिय अर्थात् गुप्त ब्रह्मचर्य पालन करने में तत्पर हुई।

मूलः—तए णं सा पउमावई अज्जा जक्खिणीते अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं आहिज्जति, वहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विविहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरति.

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती साध्वी यक्षिणी साध्वी के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अभ्यास करने लगी। तथा बहुत से उपवास, बेले (दो उपवास), तेले (तीन उपवास), चौला (चार उपवास), द्वादश (पांच उपवास), अर्धमास (पन्द्रह उपवास) और मास क्षमण (एक महीने के उपवास) वगैरह विविध प्रकार की तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को तप-संयम में भावती हुई विहार करने लगी।

मूलः—तए णं सा पउमावई अज्जा बहुपडिपुन्नाइं वीसं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेति, झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइनग्गभावे जाव समट्ठं आराहेति चरिमुस्सासेहिं सिद्धा (सू० ९)। पंचम वग्गस्स पढममज्झयणं सम्मत्तं ॥ ५ ॥ १ ॥

अर्थः—उसके बाद वह पद्मावती साध्वी बहुत परिपूर्ण बीस वर्ष चारित्रावस्था को पालन कर एक मास का अनशन करके अपने शरीर को सुखा दिया। सुखा कर अनशन के साठ भक्त का छेदन किया अर्थात् एक महीने का अनशन पूर्ण किया। अनशन पूर्ण कर जिसके लिये चारित्र ग्रहण किया था यावत् उस कार्य को साधन कर अन्तिम श्वासोश्वाससे सिद्धि पद को प्राप्त किया।

यहां यावत् शब्द से यह जानने का है कि जिसने मोक्ष के लिये चारित्र अंगीकार किया, मुंड हुई, केशों का लोच किया। ब्रह्मचर्य का पालन किया, स्नानादि छोड़े, छत्री वगैरह रखना नहीं, नंगे पैर चलना, पृथ्वी पर शयन, आहार पानी वगैरह के लिये दूसरे घरों में जाना, आहारादि का लाभ तथा अलाभ हो होतो भी हर्ष शोक करना नहीं, मान या अपमान होने पर भी समभाव रखना, दूसरों की की हुई हिलना (आदर न करना), निन्दा (अपने मन में निन्दा करनी) खिंसना (लोगों के सामने जाति वगैरह प्रकट करनी), तर्जना—हे लुचा! तू क्या जानता है? वगैरह वचन द्वारा बकना, ताड़ना (लात वगैरह मारना), घृणा (समक्ष में निन्दा करनी), उच्चावच अर्थात् अयोग्य वचन बोलना (विविधि प्रकारके अनुचित शब्द बोलना), बाईस परिषह उपसर्ग, इन्द्रियों रूपी कांटा वगैरह इन कष्टों को सहन किये और अंतमें उसने अनशन कर कर्म क्षय करके मोक्ष प्राप्त किया।

॥ इति पंचम वर्ग का प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ५ ॥ १ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं वारवई रेवतए उज्जाणे नंदणवणे, तत्थ णं वारतीए णगरीए कण्हे वासुदेवे राया। तस्स णं कण्हवासुदेवस्स गोरी देवी वन्नओ, अरहा अरिट्ठनेमि समोसढे, कण्हे णिग्गए, गोरी जहा पउमावती तहा णिग्गया, धम्म कहा, परिसा पडिगया, कण्हे वि गये। तए णं सा गोरी जहा पउमावती तहा णिक्खंता, जाव सिद्धा।

अर्थः—तिस काल तिस समय में द्वारिका नामक नगरी थी उसमें रैवतक नामक पर्वत और नंदनवन था। उस द्वारिका नगरी में कृष्ण वासुदेव राजा राज्य करते थे, उन कृष्ण वासुदेव के गौरी देवी नामक राणी थी। उसका वर्णन करना। अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् पधारे और कृष्णवासुदेव उनको वंदना करने के लिये गये। पद्मावती देवी की तरह गौरी देवी भी गई। भगवान् ने धर्म कथा कही। पर्षदा अपने २ स्थान पर वापस गई। उसके बाद पद्मावती देवी की तरह गौरी देवी ने भी दीक्षा ग्रहण की यावत् सिद्धि पाई।

इति पंचम वर्ग का दूसरा अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ५ ॥ २ ॥

मूलः—एवं गंधारी, लक्खणा, सुसीमा, जंबवई, सच्चभामा, रुप्पिणी अट्ठ वि पउमावती सरिसाओ अट्ठ अज्झयणा (सू० १०)

अर्थः—इसी प्रकार तीसरी गांधारी, चौथी लक्ष्मणा, पांचवीं सुसीमा, छठी जांबुवती, सातवीं सत्यभामा और आठवीं रुक्मिणी इन सब ही राणियों का दीक्षा लेना और तपश्चर्या करके अंतमें अनशन करके कर्म क्षय कर मोक्ष जाना आदि सब अधिकार पद्मावती के समान कहना, क्योंकि ये सब कृष्ण वासुदेव की राणियों थीं इन आठों के आठ अध्ययन कहने । अन्तिम दो अध्ययन कृष्ण वासुदेव के पुत्र की स्त्रियों के नामके हैं । सू । १० ।

मूलः—ते णं काले णं ते णं समए णं वारवतीए नगरीए रेवतए नंदणवणे कण्हे वासुदेवे । तत्थ णं वारवतीए नयरीए कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्ते जंबुवतीए देवीए अत्तए संबे नामं कुमारे होत्था, अहीण० ।

अर्थः— तिस काल तिस समय में द्वारिका नगरी, रैवतक पर्वत, चंदन वन उद्यान, कृष्ण वासुदेव राजेन्द्र राज्य करते थे । उस नगरी में कृष्ण वासुदेव का पुत्र जाम्बुवती देवी का आत्मज शाम्ब नामक कुमार था । उसके हाथ पैर वगैरह अवयव परिपूर्ण थे ।

मूलः—तस्सणं संबस्स कुमारस्स मूलसिरी नामं भारिया होत्था, वन्नओ । अरहा अरिट्ठनेमी समोसढे, कण्हे निग्गए, मूलसिरी वि णिग्गया जहा पउमावती, नवरं देवाणुप्पिया ! कण्हं वासुदेवं आपुच्छामि, जाव सिद्धा । एवं मूलदत्ता वि ॥ (सू० ११)

अर्थः—उस शाम्ब कुमार की मूलश्री नामक स्त्री थी। उसका वर्णन करना। एक समय अरिहंत अरिष्टनेमि भगवान् पधारे। उनको वंदना करने के लिये कृष्ण वासुदेव गये और मूलश्री भी गई, पद्मावती की तरह सब कहना। विशेष यह है कि उसने प्रभु से कहा कि—हे देवानुप्रिय ! मैं कृष्ण वासुदेव की आज्ञा प्राप्त कर इत्यादि यावत् वह आज्ञा प्राप्त कर दीक्षा लेकर सिद्धि पद को प्राप्त हुई। उसी प्रकार मूलदत्ता भी दीक्षा लेकर सिद्धि पद को प्राप्त हुई। उसका अध्ययन भी इसी प्रकार कहना ॥ सूत्र ० ११ ॥

॥ इति पंचम वर्ग समाप्त ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्ठ वर्ग ॥



मूलः—जइ छट्ठस्स उक्खेवओ, नवरं सोलह अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—" मंकाती १ किंकमे २ चेव मोग्गरपाणी ३ य कासवे ४ खेमते ५ धितिधरे ६ चेव केलासे ७ हरिचंदणे ८ ॥ १ ॥ वीरत्त ९ सुदंसणे १० पुन्नभद्दे ११ सुमणभद्दे १२ सुपइट्ठे १३ मेहे १४ । अइमुत्ते १५ अ अलक्खे १६ अज्झय-

णाणं तु सोलसयं ॥ २ ॥"

अर्थः—जम्बूस्वामीने सुधर्मस्वामी से पूछा कि- हे भगवन्! पांचवे वर्ग का आपने यह अर्थ कहा है तो अब भगवान् महावीर स्वामी ने कथन किया हुआ छट्ठे वर्ग का अर्थ कहो ? तब सुधर्मस्वामी ने कहा कि छट्ठे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे हैं, वे इस प्रकार हैंः—पहला मंकाति, दूसरा किंकम, तीसरा मुद्गरपाणि, चौथा काश्यप, पांचवा क्षेमक, छट्ठा धृतिधर, सातवाँ कैलाश, आठवाँ हरिचन्दन, नववाँ विरक्त, दशवाँ सुदर्शन, ग्यारहवाँ पूर्णभद्र, बारहवाँ स्वम्रभद्र, तेरहवाँ सुप्रतिष्ठ, चौदहवाँ मेघ, पन्द्रहवाँ अतिमुक्त और सोलहवाँ अलक्ष. इन सोलह नामों के सोलह अध्ययन कहे हैं।

मूल—जइ सोलस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?।

अर्थः—हे भगवन्! जो छट्ठे वर्ग के सोलह अध्ययन कहे हैं; तो छट्ठ वर्ग के पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है ?।

मूलः—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिए राया, मंकाती नामं गाहावइ परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूए।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बु ! तिस काल तिस समय में राजगृह नामक नगर था। उसकी ईसाण कोण में गुणशील नामक चैत्य था। उस नगर में श्रेणिक नामक राजेन्द्र राज्य करता था। उस नगर में मंकाति नामक गाथापति रहता था। वह ऋद्धिवान् यावत् कोई भी उससे विजय प्राप्त न कर सके ऐसा समृद्धिशाली और पराक्रमी था।

मूल.—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे आदिकरे गुणसिलए जाव विहरति, परिसा निग्गया।

अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी धर्म की आदि करने वाले गुणशील नामक चैत्य में यावत् पधारे। उनको वंदना करने के लिये नगर में से पर्षदा निकली।

मूलः—तए णं से मंकाती गाहावइ इमीसे कहाए लद्धट्ठे जहा पन्नत्तीए गंगदत्ते तहेव, इमो वि जेट्ठपुत्तं कुंडुंबे ठवेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीए सीयाए णिक्खंते जाव अणगारे जाए इरियासमिए।

अर्थः— उसके बाद वह मंकाति नामक गाथापति भगवान् के आगमन की बात सुन कर प्रसन्न हुआ. जैसे भगवती सूत्र में गंगदत्त भगवान् को वंदना करने को गया था उसका अधिकार है; उसी प्रकार सब यहाँ

पर भी वर्णन करना। फिर यह मंकाति भी अपने बड़े पुत्र को कुटुम्ब पालन का भार सौंप कर हजार पुरुष उठावे ऐसी पालकी में बैठ कर निकला। यावत् वह अणगार हुआ इर्यासमिति युक्त यावत् गुप्त ब्रह्मचारी हुआ।

मूलः— तए णं से मंकाती अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जति, से सं जहा खंदगस्स। गुणरयणं तवोकम्मं, सोलसवासाइं परियाओ, तहेव विपुले सिद्धे। किंकमे वि एवं चेव जाव विपुले सिद्धे। (सू०१२)

अर्थः—उसके बाद उस मंकाति अणगार ने श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के तथाप्रकार के स्थविर मुनियों के पास सामायिक वगैरह ग्यारह अंगों का अभ्यास किया। शेप सब अधिकार स्कंदक मुनि की तरह जान लेना। गुणरत्न संवत्सर नामक तपश्चर्या की, सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया। उसी प्रकार विपुलगिरि पर्वत पर सिद्धि पद को प्राप्त हुए। किंकम नामक दूसरा अध्ययन भी इसी प्रकार कहना वे किंकम अणगार भी यावत् विपुलपर्वत पर सिद्ध हुए। (सू० १२)

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, सेणिय राया, चेल्लणा देवी। ॥१००॥

अर्थः—तिस काल तिस समय में राजगृह नगरी थी। उसकी बाहर ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य

था। उस नगर में श्रेणिक नामक राजेन्द्र राज्य करता था और उसके चेलणा देवी नामक राणी थी।

मूल—तत्थ णं रायगिहे अज्जुणए नामं मालागारे परिवसति, अड्ढे जाव अपरिभूए।

अर्थ:—उस राजगृह नगर में अर्जुन नामक माली रहता था वह ऋद्धिमान् यावत् कोई उससे न जीत सके इस प्रकार का था।

मूल—तस्स णं अज्जुणयस्स मालायारस्स वंधुमती णामं भारिया होत्था, सुमाला।

अर्थ:—उस अर्जुन माली के बन्धुमती नामक स्त्री थी। वह अत्यन्त कोमल सुकुमाल थी।

मूल—तस्स णं अजुणयस्स मालयारस्स रायगिहस्स नगरस्स बहिया एत्थ णं महं एगे पुप्फारामे होत्था, कण्हे जाव निउरंवभूते दसद्धवन्नकुसुमकुसुमिते पासाइए।

अर्थ:—उस अर्जुन माली के राजगृह नगर के बाहर फूलों का एक बड़ा बगीचा था। वह कृष्ण (काला) और कृष्ण कांति वाला, नीला अर्थात् नीली कांति वाला वगैरह विशेषण युक्त यावत् मेघ के समूह के समान था। पांच प्रकार के पुष्पों से प्रफुल्लित और शोभायमान था तथा रमणीय आदि विशेषण वाला था।

मूल— तस्स णं पुप्फारामस्स अदूरसामंते तत्थ णं अज्जुणयस्स मालायारस्स अज्जतपज्जतपिति-

पज्जयागए अणेगकुलपुरिसपरंपरागए मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खायतणे होत्था पोराणे दिव्वे सच्चे जहा पुण्णभद्दे ।

अर्थः— उस पुष्पों के बाग के निकट उस अर्जुन माली के बाप, दादा और पड़ दादा आदि वंश के अनेक मनुष्यों की परंपरा से चला आता हुआ मुद्गरपाणि नामक यक्ष का चैत्य था। वह पूर्ण भद्र नामक चैत्य के समान पुराणा, दिव्य और सत्य वगैरह प्रभाव युक्त था।

मूल—तत्थ णं मोग्गरपाणिस्स पडिमा एगं महं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गहाय चिट्ठति।

अर्थः— उस चैत्य में मुद्गरपाणि यक्ष की प्रतिमा के हाथ में एक हज़ार पल लोहे का बना हुआ बड़ा मुद्गर था।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे बालप्पभितिं चेव मोग्गरपाणिजक्खभत्ते यावि होत्था, कल्ला-कल्लिं पच्छियपिडगाइं गेण्हति, गेण्हित्ता रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुप्फुच्चयं करेति, करित्ता अग्गाइं वराइं पुप्फाइं गहाइ, गाहित्ता जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मुग्गरपाणिस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणयं

करेति करित्ता जानुपायवडिए पणामं करेति, ततो पच्छा रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणे विहरति।

अर्थः—उस समय वह अर्जुन माली बाल्यावस्था से ही मुद्गरपाणि यक्ष का भक्त था जिससे वह हमेशा बांस की छावड़ी लेता था, लेकर राजगृह नगरी से बाहर निकलता, बाहर निकल कर जहां अपना बगीचा था वहां आता, आकर पुष्पों को तोड़ता, तोड़ कर पहले ताजे और श्रेष्ठ पुष्पों को ग्रहण करता। ग्रहण करके जहां मुद्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहां आता। आकर मुद्गरपाणि यक्ष को अधिक मूल्य वाली तथा बड़ों के योग्य हो वैसी पुष्प पूजा करता था। पुष्प पूजा करके दोनों पांव पृथ्वी पर झुका कर उस यक्ष को प्रणाम करता था उसके बाद नगर में जाकर राज्य मार्ग में अपने पुष्प बेच कर अपनी आजिविका का करता हुआ रहता था।

मूल—तत्थ णं रायगिहे नगरे ललिया नामं गोट्ठी परिवसति, अड्ढा जाव अपरिभूता जंकयसुकया यावि होत्था।

अर्थः—उस राजगृही नगर में ललित नामक अर्थात् उद्धत्त मनुष्यों की एक टोली रहती थी। वह ऋद्धिमान् यावत् देदीप्यमान् और अधिक मनुष्यों से भी जिससे विजय न पा सके ऐसी यत्कृत सुकृता थी अर्थात् वे मित्रों की टोली जो कोई कार्य अच्छा अथवा बुरा करे तो भी उनके माता–पिता और अन्य लोग अच्छा कार्य किया ऐसा कहा करते थे।

मूल—तए णं रायगिहे नगरे अन्नदा कदाइ पमोदे घुट्ठे यावि होत्था ।

अर्थः— उसके बाद राजगृह नगर में एक समय कदाचित् महोत्सव होने के लिये उद्घोषणा हुई ।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे कल्लं पभूयतराएहिं पुप्फेहिं कज्जमिति कट्टु पच्चूसकालसमयंसि वंधुमतीए भारियाए सद्धिं पच्छियपिडयातिं गेण्हति, गेण्हित्ता, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं णिगच्छति, णिगच्छित्ता जेणेव पुप्फारामे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वंधुमतीए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेति ।

अर्थः—उसके बाद वह अर्जुन माली कल बहुत फूलों की जरूरत होगी, ऐसा विचार कर प्रातःकाल में बन्धुमती स्त्री के साथ बांस की छावड़ी लेकर अपने घर से निकला । निकल कर राजगृह नगर के बीचोंबीच होकर बाहर जहां अपना बगीचा था वहां आया । आकर बन्धुमती स्त्री के साथ फूल तोड़ने लगा ।

मूल—तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए छ गोट्ठिल्ला पुरिसा जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागता अभिरममाणा चिट्ठंति ।

अर्थः—उस समय उस ललित नामक टोली के छ मित्र मनुष्य जहां मुद्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहां

आये और खेलने लगे।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धिं पुप्फुच्चयं करेति, करित्ता अग्गातिं वरातिं पुप्फातिं गहाए जेणेव मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छाति।

अर्थ—उसके बाद उस अर्जुन माली ने बन्धुमती स्त्री के साथ पुष्पों को एकत्रित किये। एकत्रित करके पहले श्रेष्ठ पुष्पों को लेकर जहां मुद्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहां आया।

मूलः— तए णं ते छ गोट्ठिला पुरिसा अज्जुणयं मालागारं बंधुमतीए भारियाए सद्धिं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी— एस णं देवाणुप्पिया! अज्जुणए मालागारे बंधुमतीए भारियाए सद्धिं इहं हव्वमागच्छाति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अज्जुणयं मालागारं अवओडयबंधणयं करेत्ता बधुमतिए भारियाए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाणं विहरित्तएत्ति कट्टु एयमट्ठं अन्नमन्नस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता कवाडंतरेसु निलुक्कंति निच्चला निप्फंदा तुसिणीया पच्छण्णा चिट्ठंति।

अर्थः—उस समय उन छओं मित्र पुरुषों ने उस अर्जुन माली को उसकी बन्धुमती स्त्री के साथ आता

हुआ देखा। देख कर परस्पर इस प्रकार कहने लगे- हे देवानुप्रियो ! यह अर्जुन माली इसकी बन्धुमती स्त्री के साथ यहां शीघ्र आ रहा है। इससे हे देवानुप्रियो ! अपने इस अर्जुन माली को उल्टी मुश्किरों से बांध कर उसके सामने उसकी स्त्री बन्धुमती के साथ विपुल काम भोग भोगना श्रेष्ठ है। इस प्रकार संकेत करके यह बात परस्पर एक दूसरे ने अंगीकार की। अंगीकार करके चैत्य के पारने की ओट लेकर छिप गये और निश्चल, निष्पंद (बिना हिले) तूष्णी, गूंगे की तरह छुपे रहे।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे बंधुमतिभारियाए सद्धिं जेणेव मोग्गरपाणिजक्खायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेति, करित्ता महरिहं पुप्फच्चणं करेति, करित्ता जानुपायपडिए पणामं करेति।

अर्थ:—उसके बाद यह अर्जुन माली अपनी बन्धुमती स्त्री के साथ जहां मुद्गरपाणि यक्ष का चैत्य था वहां आया। आकर यक्ष की मूर्ति को देखते ही उसने प्रणाम किया। प्रणाम करके अधिक मूल्य वाली पानी वर्षों के योग्य पुष्पों से पूजा की। पूजा करके पृथ्वी पर घुटने नमाकर उस यक्ष को प्रणाम किया। ॥१०६॥

मूल—तए णं ते छ गोट्ठिल्ला पुरिसा दवदवस्स कवाडंतरेहिंतो णिग्गच्छंति, णिग्गच्छित्ता अज्जुणयं

मालागारं गेण्हंति, गेण्हित्ता अवओडगबंधणं करेंति, करित्ता बंधुमतिए मालागारिए सद्धिं विपुलाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

अर्थः—उसके बाद वे छओं मित्र शीघ्र २ बारने की ओड से निकले। निकल कर अर्जुनमाली को पकड़ा। पकड़ कर उल्टी मुश्कियों से बांध दिया। बांध कर बन्धुमती मालन के साथ विपुल काम भोग करने लगे।

मूल—तए णं तस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स अयमज्झत्थिए समुप्पन्ने—एवं खलु अहं बालप्पभिंति चेव मोग्गरपाणिस्स भगवओ कल्लाकल्लिं जाव कप्पेमाणे विहरामि, तं जइ णं मोग्गरपाणिजक्खे इह संनिहिते होंते से णं किं ममं एयारूवं आवइं पावेज्जमाणं पासंते ? तं नित्थ णं मोग्गरपाणि जक्खे इह संनिहिते, सुव्वत्तं तं एस कट्ठे।

अर्थः—उसके बाद उस अर्जुन माली को इस प्रकार विचार उत्पन्न हुआ कि—इस प्रकार निश्चय करके मैं बाल्यावस्था से ही इन पूज्य मुद्गरपाणि यक्ष की हमेशा पूजा करता हूं। यावत् आजीविका चलता हुआ रहता हूं अगर जो यह मुद्गरपाणि यक्ष इस प्रतिमा में प्रत्यक्षावस्था में होता तो मुझे इस आपत्ति दशा में कैसे देखता। इससे तो यह प्रतीत होता है कि यह मुद्गरपाणि यक्ष प्रत्यक्ष नहीं। यह तो काष्ट रूप ही दृष्टिगोचर होता है।

मूल—तएणं से मोग्गरपाणि जक्खे अज्जुणयस्स माणागारस्स अयमेयारूवं अब्भत्थियं जाव वियाणेत्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरय अणुपविसति, अणुपविसित्ता तडतडतडस्स बंधाई छिंदति तं पलसहस्सणिप्फण्णं अयोमयं मोग्गरं गेण्हति, गेण्हित्ता ते इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेति ।

अर्थः—उसके बाद उस मुद्गरपाणि यक्ष ने अर्जुन माली के इस प्रकार के विचार यावत् जान कर अर्जुन माली के शरीर में प्रवेश किया । प्रवेश करके तड़ा तड़ उसके बन्धनों को तोड डाले और हजार पल के बने हुए लोहे के मुद्गर को लेकर स्त्री सहित सातों को काल के कराल मुख में कवलित कर दिये ।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे रायगिहस्स नगरस्स परिपेरंतेणं कल्लाकल्हिं छ इत्थिसत्तमे पुरिसे घातेमाणे विहरति ।

अर्थः—उसके बाद वह अर्जुन माली मुद्गरपाणि यक्ष द्वारा अधिष्टित होकर राजगृह नगरी के बाहर निकट भूमि पर हमेशा छ पुरुष और एक सातवीं स्त्री को मारता हुआ फिरने लगा ।

मूल—रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा अण्णाइट्ठे समाणे रायागिहे णगरे बहिया छ इत्थिसत्तमे

पुरिसे घायेमाणे विहरति।

अर्थः— इसके बाद राजगृह नगर में त्रीकोण रास्ते पर तथा चौपट रास्ते पर बहुत से लोग इकत्रित हुए, होकर परस्पर इस प्रकार कहने लगे। इस प्रकार निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! अर्जुन माली के शरीर में मुद्गर पाणि नामक यक्ष अधिष्ठित हुआ है। उससे वह राजगृह नगर के बाहर छः पुरुष और सातवीं स्त्री को प्रतिदिन मारता हुआ फिरता है।

मूल—तए णं से सेणिए राया इमिसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जुणए मालागारे जाव घातेमाणे विहरति, तं मा णं तुब्भे केइ कट्ठस्स वा तणस्स वा पाणियस्स वा पुप्फफलाणं वा अट्ठाए सतिरं निग्गच्छतु, मा णं तस्स सरीरस्स वावत्ती भाविस्सति त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणयं घोसेह, घोसित्ता खिप्पामेव ममेयं पच्चप्पिणह तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति।

अर्थः—इसके बाद उस श्रेणिक राजा ने इस वार्ता के विषय को जान कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाये। बुला कर इस प्रकार कहाः— निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! अर्जुन नामक माली हमेशा छः पुरुष और एक स्त्री को मारता

हुआ फिरता है। जिससे नगरी में से कोई भी मनुष्य लकड़ी, घास, जल और पुष्प या फल वगैरह लेने के लिये अपनी इच्छानुसार गांव के बाहर जाना नहीं क्योंकि ऐसा करने से उनके शरीर का नाश होना संभव है। इस प्रकार दो वार तीन वार नगर में उद्घोषणा करो। उद्घोषणा करके मेरी इस आज्ञा को मुझे वापिस दे दो। यह सुन कर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने यावत् उसी प्रकार उद्घोषणा की और राजा की आज्ञा वापिस कर दी।

मूल—तत्थ णं रायगिहे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसति, अड्ढे। तए णं से सुदंसणे समणोवासए यावि होत्था अभिगयजीवाजीवे जाव विहरति।

अर्थः—अब उस राजगृह नगर में समृद्धिवान् सुदर्शन नामक एक सेठ रहता है। वह सुदर्शन श्रावक धर्म का आराधन करने वाला है इससे जीवाजीव वगैरह तत्व को जानने वाला यावत् रहता है।

मूल—ते णं काले ण ते णं समए णं समणे भगवं जाव समोसढे विहरति।

अर्थः— तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी यावत् वहां पधारे और साधु के योग्य अवग्रह याच कर रहे हैं।

मूल—तए णं रायगिहे णगरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति—

जाव किमंग पुण विपुलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? एवं तस्स सुदंसणस्स बहुजणस्स अंतिए एयं सोच्चा निसम्म अयं अब्भत्थिए जाव समुप्पन्ने – एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरति, तं गच्छामि णं वंदामि नमंसामि, एवं संपेहेति, संपेहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु अम्मताओ ! समणे जाव विहरति, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि जाव पज्जुवासामि ।

अर्थः—उस समय राजगृह में तीन रास्ते वाले मार्ग में यावत् राज मार्ग में बहुत से मनुष्य इकट्ठे होकर परस्पर एक दूसरे को इस प्रकार कहने लगे:– निश्चय करके हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहां गुणशील चैत्य में पधारे हैं उनका नाम गोत्र सुनने में भी बहुत फल है तो यावत् उनके पास जाकर शास्त्रों के बड़े २ अर्थों को अंगीकार करने में महाफल हो इसमें तो क्या ही कहना ? इस प्रकार बहुत से मनुष्यों से यह बात सुन हृदय में धारण कर सुदर्शन सेठ को यह विचार उत्पन्न हुआ कि:–निश्चय करके श्रमण भगवान् महावीर स्वामी इस नगर में पधारे हैं। नगर के समीप में आये हों तो भी ऐसा कहा जा सक्ता है। इसलिये कहते हैं कि यहां पधारे हैं, यहां समवसरे हैं और यहां समवसर कर धर्म देशना देने के लिये यहां विराजे हैं। अथवा इस नगर में पधारे हैं, यानी इस नगर के इशान

कौण में गुणशील चैत्य में पधारे हैं और साधुओं के योग्य ऐसे अवग्रह में रहे हैं। इसलिये मैं उनके पास जाऊं और उनको वंदना करूं, नमस्कार करू। इस प्रकार विचार करके जहां अपने मात-पिता थे वहां गया। जाकर हाथ जोड़ यावत् इस प्रकार कहने लगाः- निश्चय करके हे मात-पिता ! श्रमण भगवान् महावीर स्वामी यहां पधारे हैं जिससे मैं उनके पास जाऊं और श्रमण भगवान महावीर स्वामी को वंदना - नमस्कार करूं यावत् जाकर उनकी सेवा करूं।

मूल—तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! अज्जुणे मालागारे जाव घाते माणे विहरति, त मा णं तुमं पुत्ता ! समणं भगवं महावीरं वंदए णिग्गच्छाहि, मा णं तव सरीरयस्स वावत्ती भविस्सति, । तुमण्णं इह गते चेव समणं भगवं महावीर वंदाहि णमंसाहि ।

अर्थः—उसके बाद उस सुदर्शन सेठ से उसके मात-पिता ने इस प्रकार कहा निश्चय करके हे पुत्र ! उस ओर अर्जुन नामक माली सात मनुष्यों को मारता हुआ रहता है। इसलिये हे पुत्र ! तू श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना करने के लिये वहां मत जा। जाने से तेरे शरीर को दुःख न हो ऐसा हम चाहते हैं। इसलिये तू यहां पर रह कर के ही श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना-नमस्कार कर।

मूल—तए णं सुदंसणे सेट्ठी अम्मापियरं एवं वयासी-किण्णं अहं अम्मयातो ! समणं भगवं महा-

वीरं इहमागयं इह पत्तं इह समोसढं इह गते चेव वंदिस्सामि ? तं गच्छामि णं अहं अम्मयाओ तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदते।

अर्थः—तब उस सुदर्शन सेठ ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा किः- हे पूज्य मात-पिता ! यहां आये हुए, यहां प्राप्त हुए और यहां पधारे हुए श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को मैं यहां रह कर किस प्रकार वंदना करूँ ? इसलिये हे मात-पिता ! आपकी आज्ञा लेकर मैं श्रमण भगवान् महावीर स्वामी को वंदना करने के लिये वहां जाऊँ।

मूलः—तए णं सुदंसणं सेट्ठिं अम्मापियरो जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहिं जाव परूवेत्तए ताहे एवं-वयासी अहा सुहं देवाणुप्पिया !

अर्थः—उसके बाद सुदर्शन सेठ को उसके मात-पिता जब बहुत प्रकार से समझाने पर भी नहीं रोक सके तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! जिसमें तेरे को सुख उत्पन्न हो वैसा तेरी इच्छानुसार कर।

मूल—तए णं से सुदंसणे अम्मापितीहिं अब्भणुण्णाए समाणे ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमाति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं रायगिहं णगरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति णिगाच्छित्ता मोग्गरपाणिस्स जक्खस्स जक्खाययणस्स अदूरसामंतेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे ॥११३॥

भगवं महावीरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थः—उसके बाद उस सुदर्शन सेठ ने मात–पिता की आज्ञा लेकर स्नान किया और शुद्ध शरीर वाला हुआ, उत्तम वस्त्र धारण किये यावत् बहुत मूल्य वाले अलंकारों से शरीर को सुशोभित किया । फिर अपने घर से बाहर निकला । निकल कर पैदल चलता हुआ राजगृह नगर के बीच होता हुआ नगर के बाहर निकला । निकल कर मुद्गर पाणि यक्ष के चैत्य से बहुत दूर भी नहीं और निकट भी नहीं ऐसा बीच में गुणशील नामक चैत्य का मार्ग था और जहां श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी विराजे थे उस रास्ते प्रयान करने लगा ।

मूल—तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदसणं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं वीतीवयमाणं पासति, पासित्ता आसुरुत्ते तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थः—उसके बाद उस मुद्गरपाणि यक्ष ने सुदर्शन श्रावक को बहुत दूर भी नहीं और निकट भी नहीं ऐसे मार्ग में जाते हुए देखा । देख कर तत्काल क्रोधायमान होकर वह हजार पल लोहे का बना हुआ मुद्गर को हाथ में लेकर उछालता हुआ उछालता हुआ जिधर सुदर्शन श्रावक था उधर चला ।

मूल—तए णं से सुदंसणे समणोवासए मोग्गरपाणिं जक्खं एज्जमाणं पासति, पासित्ता अभीते अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिते अचलिए असंभंते वत्थंतेणं भूमिं पमज्जति, पमज्जित्ता करतल एवं वयासी–नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमो त्थु णं समणस्स जाव संपाविउकामस्स, पुव्विं च णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलते पाणातिवाते पच्चक्खाते जावज्जीवाए, थूलते मुसावाते, थूलते अदिन्नादाणे, सदार–संतोसे कए जावज्जीवाए, इच्छा परिमाणे कए जावज्जीवाए, तं इदाणिं पि णं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणा–इवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, मुसावायं अदत्तादाणं मेहूणं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, जइ णं एत्तो उवसग्गाओ मुच्चिस्सामि तो मे कप्पेइ पारेत्तए अह णो एत्तो उवसग्गातो मुच्चिस्सामि ततो मे तहा पच्चक्खाते चेव त्ति कट्टु सागारं पडिमं पडिवज्जति।

अर्थः—उसके बाद उस सुदर्शन श्रावक ने मुद्‌गरपाणि यक्ष को आते हुए देखा। देख कर भय रहित होकर, त्रास रहित, उद्वेगरहित और क्षोभ का त्याग कर, अचलायमान होकर संभ्रांत रहित उसने वस्त्र के छेड़े से भूमिका

प्रमार्जन किया। प्रमार्जन करके दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक पर तीन वार आवृत्त कर दशों नख इकट्ठे हों ऐसे अंजली बांध कर इस प्रकार बोला कि:—अरिहंतों को यावत् मुक्ति पद को पाये हुए भगवानों को मेरा नमस्कार हो। श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष पद को पाने की इच्छा करने वाले ऐसे श्री महावीर स्वामी को मेरा नमस्कार हो। पहिले मैंने श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास स्थूल प्राणातिपात का जीवनपर्यन्त प्रत्याख्यान किया है। इसी प्रकार स्थूल मृषावाद का और स्थूल अदत्तादान का प्रत्याख्यान किया है। स्वदार सन्तोष व्रत जीवन पर्यन्त ग्रहण किया है तथा जीवन पर्यन्त इच्छानुसार परिग्रह का त्याग किया है तो भी अभी उन्हीं भगवान् की पास मैं उन्हीं की साक्षी से हमेशा के लिये सर्वथा प्राणातिपात का जीवन पर्यन्त त्याग करता हूं। इसी प्रकार जीवन पर्यन्त मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन और परिग्रह का सर्वथा प्रत्याख्यान करता हूं अर्थात् छोड़ता हूं। इसी प्रकार सर्वथा क्रोध का यावत् मिथ्या दर्शन शल्य का जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान करता हूं। इसी प्रकार सब प्रकार के अशन, पान, खादिम और स्वादिम ये चार प्रकार के आहार को भी जीवन पर्यन्त त्याग करता हूं यदि कदाचित् मैं इस उपसर्ग से मुक्त हो जाऊं तो मैं यह प्रत्याख्यान पार सक्ता हूं और इस उपसर्ग से मुक्त न होऊं तो प्रत्याख्यान धारे हैं उसी प्रकार निश्चित हैं। इस प्रकार कह कर उसने सागार प्रतिमा अंगीकार की अर्थात् अभिग्रह सहित काउसग्ग किया।

मूल—तए णं से मोगरपाणीजक्खे तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं उल्लालेमाणे उल्लालेमाणे जेणेव सुदंसणे समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता नो चेव णं संचाएति सुदंसणे समणोवासए तेयसा समभिपडित्तए ।

अर्थः—उसके बाद मुद्गरपाणी यक्ष हजार पल लोह का बना हुआ मुद्गर को उछालता २ जहां सुदर्शन श्रावक था वहां आया, परन्तु सुदर्शन श्रावक के तेज प्रभाव को सहन नहीं कर सका इसलिये उसको उपसर्ग करने को सामर्थवान् हुआ नहीं ।

मूल—तए णं से मोग्गरपाणी जक्खे सुदंसणं समणोवासतं सव्वओ समंताओ परिघोलेमाणे परि-घोलेमाणे जाहे नो चेव णं संचाएति सुदंसणं समणोवासयं तेयसा समभिपाडित्तए, ताहे सुदंसणस्स समणो-वासयस्स पुरओ सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा सुदंसणं समणोवासयं अणिमिसाए दट्ठीए सुचिरं निरिक्खति, निरिक्खित्ता अज्जुणयस्स मालागारस्स सरीरं विप्पजहाइ, विप्पजहित्ता तं पलसहस्सनिप्फन्नं अयोमयं मोग्गरं गहाय जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।

अर्थ:—उसके बाद वह मुद्गरपाणी यक्ष उस सुदर्शन श्रावक की चो तरफ फिरने लगा। फिरता २ जब उस सुदर्शन श्रावक के धर्म प्रभाव के तेज से उसको मारने को समर्थ न हो सका, तब उस सुदर्शन श्रावक के सन्मुख डावे जीमणे पासे अर्थात् दायें बायें समान आवे ऐसे और सप्रातिदिशा अर्थात् विदिशा भी समान आवे इस प्रकार खड़ा होकर सुदर्शन श्रावक को अनिमेष दृष्टि से एक टक लगा कर बहुत समय तक देखता रहा। देख कर घभरा कर अर्जुन माली के शरीर का उसने त्याग किया। त्याग करके वह हजार पल लोहे का बना हुआ मुद्गर को लेकर जिस दिशा से आया था, उसी दिशा में पीछा अपने स्थान को चला गया।

मूल— तए णं से अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं विप्पमुक्के समाणे धसत्ति धरणि-यलंसि सव्वंगेहिं निवडित्तए।

अर्थ:—उसके बाद उस अर्जुन माली को मुद्गर पाणी यक्ष ने छोड़ दिया तब वह धडाक से पृथ्वी पर सब अंगों को विना सम्हाले गिर गया।

मूल—तए णं से सुदंसणे समणोवासए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेति।

अर्थ:—उसके बाद उस सुदर्शन श्रावक ने उपसर्ग दूर हुआ जान कर प्रतिमा का पालन किया अर्थात् काउसग्ग को पार दिया।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे ततो मुहुत्तंतरेणं आसत्थे समाणे उट्ठेति, उट्ठित्ता सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी– तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! के ? कहिं वा संपत्थिया ?

अर्थ:— उसके बाद वह अर्जुन माली जब एक मुहूर्त्त के बाद स्वस्थ हुआ। तब खड़ा होकर उसने सुदर्शन श्रावक से इस प्रकार पूछा:— हे देवानुप्रिय ! तुम कौन हो ? और कहां जाते हो ?

मूल—तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणयं मालागारं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सुदंसणे नामं समणोवासए अभिगयजीवाजीवे गुणासिलए चेइए समणं भगवं महावीरं वंदिते संपत्थिते.

अर्थ:—तब उस सुदर्शन श्रावक ने अर्जुन माली से इस प्रकार कहा:— निश्चय करके हे देवानुप्रिय ! मैं सुदर्शन नामक श्रावक जीव और अजीवादि तत्व का जानने वाला हूं और गुणशील नामक चैत्य में पधारे हुए श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना करने के लिये जाता हूं।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे सुदंसणं समणोवासयं एवं वयासी–तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अहमवि तुमए सार्द्धं समणं भगवं महावीरं वंदित्तए जाव पज्जुवासित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया !

अर्थ:—तब उस अर्जुन माली ने सुदर्शन श्रावक से इस प्रकार कहा कि:- हे देवानुप्रिय ! मैं भी आपके साथ

श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना करने यावत् उनकी सेवा करने के लिये आने की इच्छा करता हूं। तब सुदर्शन श्रावक ने कहा कि:— हे देवानुप्रिय ! जिसमें तुझे सुख उत्पन्न हो वैसा तेरी इच्छानुसार कर।

मूलः—तए णं से सुदंसणे समणोवासए अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अज्जुणएणं मालागारेणं सद्धिं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासाति।

अर्थः—उसके बाद वह सुदर्शन श्रावक अर्जुन माली के साथ जहां गुणशील नामक चैत्य था और जहां श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी थे वहां आये। आकर अर्जुन माली के साथ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को तीन वक्त प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वंदना की – नमस्कार किया यावत् सेवा करने लगे।

मूल—तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स समणोवासयस्स अज्जुणयस्स मालागारस्स तीसे य धम्मकहा। सुदंसणे पडिगए।

अर्थः—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने सुदर्शन श्रावक, अर्जुन माली और उस वृहत् सभा को धर्मोपदेश दिया। उपदेश सुन कर सुदर्शन श्रावक अपने घर गया।

मूलः—तए णं से अज्जुणए मालागारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! ।

अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास धर्म सुन कर हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट होकर कहने लगा कि—हे भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन पर (साधुधर्मपर) श्रद्धा करता हूँ यावत् दीक्षा लेने का मेरा प्रयत्न (विचार है) तब भगवान् ने कहा कि— हे देवानुप्रिय ! जिसमें तुझ को सुख उत्पन्न हो वैसा कार्य कर ।

मूल—तए णं से अज्जुणए मालागारे उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव अणगारे जाए जाव विहरति ।

अर्थ—उसके बाद वह अर्जुन माली उत्तर और पुर्व के बीच में ईशान कोण में गया, जाकर पाँच मुष्टि से केशों का लोच किया । यावत् वह चारित्र ग्रहण कर अणगार हुआ । फिर चारित्र पालने में प्रयत्नवान् होकर इर्यासमिति गुप्त और गुप्त ब्रह्मचर्य्य का पालन करने वाला होकर विहार करने लगा ।

मूल—तए णं से अज्जुणए अणगारे जं चेव दिवसं मुंडे जाव पव्वइए तं चेव दिवसं समणं भगवं

महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता इमं एयारूवं अभिग्गह उग्गिण्हति–कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु अयमेयारूवं अभिग्गहं ओगेण्हति, ओगिण्हित्ता जावज्जीवाए जाव विहराति।

अर्थः— उसके बाद उन अर्जुन अणगार ने जिस दिन मुंड होकर दीक्षा ग्रहण की, उसी दिन श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी को वंदना की नमस्कार किया। वंदना-नमस्कार कर के इस प्रकार का अभिग्रह ग्रहण किया। मुझे आज से लेकर जीवन पर्यन्त निरंतर (अंतर रहित) छट्ठ छट्ठ तप से पारण करके तप–संयम में आत्मा को भावन करते हुए विहार करना कल्पता है। इस प्रकार जीवन पर्यन्त के लिये अभिग्रह ग्रहण किया, अभिग्रह ग्रहण करके विहार करने लगा।

मूल—तए णं से अज्जुणए अणगारे छट्ठक्खमणपारणयंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति, जहा गोयमसामी जाव अडति।

अर्थः— उसके बाद वे अर्जुन माली अणगार छट्ठ तप के पारणे के दिन पहली पोरसी में स्वाध्याय करते। स्वाध्याय करके गौतम स्वामी की तरह आहार पानी के लिये यावत् पर्यटन करते थे।

मूल—तए णं तं अज्जुणयं अणगारं रायगिहे नगरे उच्च जाव अडमाणं बहवे इत्थिओ य पुरिसा य डहरा य महल्ला य जुवाणा य एवं वयासी—इमे णं मे पितामारिए भायामारिए भगिणीमारिए भज्जामारिए पुत्तमारिए धूयामारिए सुण्हामारिए, इमेणं मे अन्नयरे सयणसंबंधिपरिपणे मारिए त्ति कट्टु अप्पेगइया अक्कोसंति, अप्पेगाइया हीलंति निंदंतिं खिंसंति गरिहंति तज्जेंति तालेंति ।

अर्थः—उसके बाद राजगृह नगर में छोटे, बड़े और मध्यम घरों में यावत् पर्यटन करते हुए उन अर्जुन माली अणगार को देख कर बहुतसी स्त्रियें, पुरुष, वृद्ध, बालक और नौ जवान इस प्रकार कहने लगे किः— इस साधु ने पहले मेरे पिता को मारा है, कोई कहता मेरे भाई को मारा है, कोई कहता मेरी बहन को मारी है। कोई कहता मेरी स्त्री को मारी है। कोई कहता मेरे पुत्र को मारा है। कोई कहता मेरी पुत्री को मारी है। कोई कहता मेरी पुत्र वधु को मारी है। इस साधु ने मेरे अमुक स्वजन को, सम्बन्धी को और मित्र को मारा है। इस प्रकार कह कर कितने ही लोग उन मुनि पर क्रोध करने लगते, कितने ही हिलना करने लगते, कितने ही निंदा करने लगते, कितने ही चिड़ने लगते, कितने ही नाराज कर अनुचित शब्द बोलने लगते, कितने ही तर्जना करने लगते और कितने मारने भी लग जाते थे।

मूलः—तए णं से अज्जुणए अणगारे तेहिं बहूहिं इत्थीहि य पुरिसेहि य डहरेहि य महल्लेहि य जुवाणएहि य आकोसेज्जमाणे जाव तालेज्जमाणे तेसिं मणसा वि अप्पउस्समाणे सम्मं सहति सम्मं खमाति तितिक्खति अहियासेति, सम्मं सहमाणे खममाणे तितिक्खमाणे अहियासेमाणे रायगिहे णगरे उच्चणीय-मज्झिमकुलाइं अडमाणे जइ भत्तं लभति तो पाणं ण लभति, जइ पाणं तो भत्तं न लभति, तते णं से अज्जुणए अणगारे अदीणे अविमणे अकलुसे अणाइले अविसाइए अपरितंतजोगी अडति, अडित्ता रायगि-हाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव गुणासिलए चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे जहा गोयमसामी जाव पडिदंसेति पडिदंसित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए अमुच्छिए बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं आहारेति।

अर्थः—उसके बाद उन अर्जुन अणगार पर बहुतसे स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बालक और नवयुवक क्रोध करने लगे, यावत् ताड़ना (मारने) करने लगे, तो भी वह उन पर मन से भी द्वेष किये बिना, भय रहित होकर समता भाव से से उनको सहन करने लगे। क्रोध नहीं करके क्षमा करते थे। दीनता छोड़ कर सहन शीलता धारण की तथा उनकी अत्यन्त बुरी बातें भी सहन की। इस प्रकार क्षमा पूर्वक समभाव से सहन करते हुए राजगृह नगर में छोटे, बड़े और

मध्यम घरों में पर्यटन करते थे। उस समय जो कभी भक्त (आहार) मिलता तो पानी नहीं मिलता और कभी पानी मिलता तो आहार नहीं मिलता तो भी अर्जुन अणगार को शोक नहीं होने से दीन और शून्य चित्त नहीं होने से शान्त, द्वेष नहीं होने से प्रसन्न, क्षोभ रहित होने से अनाविल अथवा जीने की चिन्ता को छोड़कर दुःखी नहीं होते थे, इसी कारण उनकी समाधी में मन, वचन और काया के योग में कोई भी दोष दिखाई नहीं देता था। इस प्रकार वे साधु पर्यटन करते थे। पर्यटन करके राजगृह नगर से बाहर निकले। निकल कर जहां गुणशील चैत्य था और जहां श्रमण भगवान् महावीर स्वामी थे वहां आये, आकर गौतम स्वामी की तरह भगवान् को भात पानी दिखलाते। दिखा कर श्रमण भगवन् श्री महावीर स्वामी की आज्ञा प्राप्त कर मुर्छा को छोड़ कर यानी स्वाद को छोड़ कर जैसे बिल में प्रवेश करता हुआ सर्प पृथ्वी के ऊपर नीचे के भाग को स्पर्श नहीं करता है उसी प्रकार मुंह में स्पर्श किये बिना ही निगल जाते अर्थात् राग रहित होकर आहार करते थे।

मूल—तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिं जणवयविहारं विहरति।

अर्थः—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी एक समय कदाचित् राजगृह नगर में से बाहर निकले। बाहर निकल कर बाहर के देशों में विहार करने लगे।

मूल—तए णं से अज्जुणए अणगारे तेणं ओरालेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणति, अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेति तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव सिद्धे (सू०१३)॥ ३ ॥

अर्थः—उसके बाद वे अर्जुन अणगार उस उदार प्रयत्न से ग्रहण किये हुए और विस्तीर्ण ऐसी तपश्चर्या में समता पूर्वक अपनी आत्मा को भावन करते हुए पूर्णरूप से छः महीने तक चारित्र का पालन किया। फिर अर्ध मास (पंद्रह दिन का) अनशन करके शरीर को सुखा दिया और तीस भक्त अनशन पूरा किया। अनशन पूरा करके जिस के लिये चारित्र अंगीकार किया था उस अर्थ को साधन कर यावत् सिद्धि पद प्राप्त किया (सूत्र० १३)

॥ इति तीसरा अध्ययन संपूर्ण ॥ ३ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, तत्थ णं सेणिए राया, कासवे णामं गाहावइ परिवसति जहा मंकाति, सोलस वासा परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥ ४ ॥

अर्थ—तिस काल तिस समय में राजग्रह नामक नगर था, उसकी ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य था, उस नगर में श्रेणिक राजा था। काश्यप नामक गाथापति निवास करता था वगैरह मंकाति की तरह सब वर्णन

करना। काश्यप गाथापति ने सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया, यावत् विपुलगिर ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए.

॥ इति चौथा अध्ययन संपूर्ण ॥ ४ ॥

मूलः—एवं खेमते वि गाहावइ, नवरं काकंदी नगरी, सोलस परियाओ, विपुले पव्वए सिद्धे ॥ ५ ॥

अर्थ—इसी प्रकार क्षेमक गाथापति का अध्ययन कहना, विशेष यह है कि वह काकंदी नगरी में निवास करता था। सोलह वर्ष तक चारित्र पालन किया यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धिपद को प्राप्त हुए।

॥ इति पाँचवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥५॥

मूल—एवं धितिहरे वि गाहावइ, नवरं काकंदीए णगरीए, सोलस वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे ॥६॥

अर्थ—इसी प्रवार धृतिधर गाथापति का वर्णन करना। विशेष यह है कि वह काकंदी नगरी का निवासी था। सोलह वर्ष तक चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरी ऊपर सिद्ध हुए ॥ इति छट्ठा अध्ययन संपूर्ण ॥ ६ ॥

मूल—एवं केलासे वि गाहावइ, नवरं सागेए णगरे, बारस वासाइं परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥७॥

अर्थ—इसी प्रकार कैलाश गाथापति का वर्णन कहना। विशेष यह है कि–यह साकेत नगरी के निवासी थे। बारह वर्ष चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरी ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त किया।

॥ इति सातवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥ ७ ॥

मूल—एवं हरिचंदणे वि गाहावइ साएए, वारस वासा परियाओ विपुले सिद्धे ॥ ८ ॥

अर्थ—इसी प्रकार हरिचन्दन गाथापति का वर्णन करना। ये साकेत नगर के निवासी थे। बारह वर्ष का चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए। ॥ इति आठवॉ अध्ययन संपूर्ण ॥ ८ ॥

मूल—एवं वारत्तए वि गाहावइ, नवरं रायगिहे नगरे. वारस वासा परियाओ, विपुले सिद्धे ॥ ९ ॥

अर्थः—इसी प्रकार वारत्तक गाथापति का वर्णन करना विशेष यह है कि ये राजगृह नगर के निवासी थे बारह वर्ष का चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धि पद को प्राप्त हुए। ॥ इति नववॉ अध्ययन ॥ ९॥

मूल—एवं सुदंसणे वि गाहावइ, नवरं वाणियगामे नगरे दुइपलासए चेइए, पंचवासा परियाओ विपुले सिद्धे। १०

अर्थः— इसी प्रकार सुदर्शन गाथापति का वर्णन करना। विशेष यह है कि ये वाणिज्य ग्राम के निवासी थे। वहां दूतिपलाश नामक चैत्य था। पांच वर्ष चारित्र पालन कर विपुलगिरी पर सिद्ध हुए। इति दशवाँ अध्ययन ॥

मूल—एवं पुन्नभद्दे वि गाहावइ, वाणियगामे नगरे पंचवासा विपुले सिद्धे ॥ ११ ॥

अर्थः—इसी प्रकार पूर्णभद्र गाथापति का वर्णन करना। ये भी वाणिज्य ग्राम में निवास करने वाले थे

बहुत वर्षों तक चारित्र पालन कर यावत् सिद्ध हुए ॥ इति ग्यारहवाँ अध्ययन संपूर्ण ॥ ११ ॥

मूल—एवं सुमणभद्दे वि सावत्थीए नगरीए बहुवासपरियातो सिद्धे । १२

अर्थः—इसी प्रकार सुमनोभद्र सार्थवाह का वर्णन करना ये भी श्रावस्ति नगरी के रहने वाले थे। बहुत वर्षों तक चारित्र पालन कर यावत् सिद्ध हुए ॥ इति बारहवाँ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १२ ॥

मूल—एवं सुपइट्ठे वि गाहावइ, सावत्थीए नगरीए, सत्तावीसं वासा परियाओ जाव विपुले सिद्धे । १३॥

अर्थ—इसी प्रकार सुप्रतिष्ठ गाथापति का वर्णन करना। ये भी श्रावस्ति नगरी में निवास करते थे। सत्ताईस वर्ष तक चारित्र पालन कर यावत् विपुलगिरि ऊपर सिद्धिपद को पाये। ॥ इति तेरहवाँ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १३

मूल—एवं मेहे, रायगिहे नगरे, बहूइं वासाइं परियाओ जाव विपुल सिद्धे ॥ १४ ॥

अर्थः—इसी प्रकार मेघ गाथापति का वर्णन करना। ये राजग्रह नगर के रहने वाले। बहुत वर्षों तक चारित्र पालन करके यावत् विपुलाचल पर सिद्ध हुए (सू० १४) ॥ इति चौदहवाँ अध्ययन संपूर्ण १४ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं पोलासपुरे नगरे, सिरिवणे उज्जाणे, तत्थ णं पोलासपुरे नगरे विजये नामं राया होत्था । तस्स णं विजयस्स रन्नो सिरि नामं देवी होत्था, वन्नओ । तस्स णं विजयस्स रन्नो

पुत्ते सिरीए देवीए अत्तए अतिमुत्ते नामं कुमारे होत्था, सूमाले।

अर्थः—तिस काल तिस समय में पोलासपुर नामक नगर था। उसके बाहर इशान कोण में श्रीवन नामक उद्यान था। उस पोलासपुर नगर में विजय नामक राजा राज्य करता था। उस विजय राजा के श्रीदेवी नाम रानी थी, उसका वर्णन करना। उस विजय राजा का पुत्र तथा श्रीदेवी का आत्मज अतिमुक्तक नामक कुमार था वह यावत् सुकोमल था।

मूल— ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीर जाव सिरिवणे। विहरति।

अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी यावत् श्रीवन नामक उद्यान में आकर विराजे।

मूल— ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइ जहा पन्नत्तीए जाव पोलासपुरे नगरे उच्च जाव अडइ।

अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के बड़े शिष्य गौतम स्वामी भगवती सूत्र में कहे अनुसार यावत् पोलासपुर नगर में छोटे बडे, और मध्यम घरों में यावत् आहार पानी के लिये पर्यटन करते थे।

मूल—इमं च णं अइमुत्ते कुमारे ण्हाए जाव विभूसिए बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि

य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सर्द्धि संपरिवुडे सओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव इंदट्ठाणे तेणेव उवागते, तेहिं बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य संपरिवुडे अभिरममाणे अभिरममाणे विहरति ।

अर्थः—उस समय अतिमुक्तक नामक कुमार स्नान करके यावत् विभूषित होकर बहुत से दारक, दारिका, डिंभ, डिंभिका, कुमार और कुमारिकाओं के साथ अपने राज महल से बाहर निकले। बाहर निकल कर जहां इन्द्रध्वज खडा करने का स्थान था वहां आये। आकर उन बहुत से दारक, दारिकाएँ, डिंम, डिंभिकाएँ, कुमार और कुमारिकाओं के साथ क्रीड़ा करते हुए खेलते हुए वहां पर रहे थे ।

मूलः—तए णं भगवं गोयमे पोलासपुरे नगरे उच्चनीय जाव अडमाणे इंदट्ठाणस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयति ।

अर्थः—उस समय भगवान गौतम स्वामी पोलासपुर नगर में बडे, छोटे और मध्यम घरों में यावत् आहार पानी के लिये पर्यटन करते हुए उस इन्द्रध्वज खड़े रहने के स्थान से बहुत दूर भी नहीं और बहुत निकट भी नहीं ऐसे रास्ते से निकले ।

मूल—तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणं पासाति, पासित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागते, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी–के णं भंते! तुब्भे? किं वा अडह?।

अर्थः—उसके बाद वह अतिमुक्तक कुमार भगवान् गौतम स्वामी को अपने पास भी नहीं और दूर भी नहीं ऐसे मार्ग से जाते हुए देखे। देख कर जहां भगवान् गौतम स्वामी थे वहां आया। आकर उसने भगवान् गौतम स्वामी से पूछा कि हे भगवन्! आप कौन हैं? और किस कारण पर्यटन करते हैं?।

मूल—तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी– अम्हे णं देवाणुप्पिया! समणा णिग्गंथा इरियासामिया जाव बंभयारी उच्चनीय जाव अडामो।

अर्थः—तब भगवान् गौतम स्वामी ने अतिमुक्तक कुमार से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय! हम श्रमण निर्ग्रंथ इर्यासमिति वाले यावत् गुप्त ब्रह्मचर्य पालन करने वाले और बडे, छोटे एवं मध्यम घरों में भिक्षा के लिये पर्यटन करते हैं।

मूल— तए णं अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमे एवं वयासी– एह णं भंते! तुब्भे जा णं अहं तुब्भं भिक्खं दवावेमीति कट्टु भगवं गोयमं अंगुलीए गेण्हति, गेण्हित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागते।

अर्थः—उसके वाद अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार कहाः—हे भगवान ! आप मेरे घर पर पधारें तो मैं आपको भिक्षा दूं। ऐसा कह कर भगवान् गौतमं स्वामी की अंगुली पकड़ी *, पकड़ कर अपना घर था वहां गौतम स्वामी को ले आया।

---

* ऊपर के अधिकार मे अइमत्ता कुमार गौतम स्वामी की अंगुली पकड़ कर अपने राज महल में ले आया, ऐसा खुलासा मूल पाठ मे है परन्तु रास्ते मे बातें करते चले थे ऐसा नहीं लिखा जिस पर भी स्थानकवासी महाशय रास्ते में बातें करते चलने का वहाना लेकर गौतम स्वामी के मुंहपर मुंहपत्ति बांधी रखने का ठहराते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। साधु को रास्ते में चलते हुए बातें करना कल्पता नही। इस शास्त्राज्ञा का उल्लंघन करके गौतम स्वामी रास्ते में चलते हुए कभी बाते नहीं कर सकते। और स्थानकवासियो के मंतव्य मुजब तथा आचारांगादि सूत्रा ज्ञानुसार जब साधु को छींक-उबासी आदि होने लगे तब हाथो से नाक मुंह दोनो की यत्ना करके पीछे छींक वगैरह करना कल्पता है। अब स्थानकवासियो के कथनानुसार यहां पर विचार करने का अवसर है कि गौतम स्वामी के एक हाथ में पात्रे और दूसरे हाथ की अंगुली अइमत्ताकुमार ने पकड़ रक्खी है उस समय गौतम स्वामी को छींक वगैर होने लगे तब हाथों से नाक और मुंह दोनों की यत्ना करके छींकादि किस तरह कर सकते थे। ऐसे अवसर पर मुंहपर मुंहपत्ति बांधी रखना बेकार ठहरा ! यह विषय खास विचार करने योग्य है। और जिस प्रकार छींक वगैरह करते समय नाक तथा मुंह दोनों की यत्ना करके किये जाते हैं। उसी प्रकार रास्ते में चलते समय कभी खास कारण वश वार्तालाप करने का काम पड़ जावे तो खड़े रह

मूल—तए णं सा सिरिदेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठ तुट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागया, भगवं गोयमं तिक्खुत्तो आयाहिणंपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति नमंसति. वंदित्ता नमंसित्ता विउलेणं असणपाणखादिमसादिमेणं पडिलाभेड जाव पडिविसज्जेति ।

अर्थः—उसके बाद उस श्रीदेवी ने भगवान् गौतम स्वामी को आते हुवे देखे । देख कर हृष्ट-तुष्ट होकर आसन से खड़ी होगई । खड़ी होकर जहां भगवान् गौतम स्वामी थे वहां आई । आकर भगवान् गौतम स्वामी को तीन वार प्रदक्षिणा करके वंदना की, नमस्कार किया । वंदना नमस्कार करके बहुत विस्तार वाले अशन, पान, खादिम और स्वादिम पदार्थ वहोराये । वहोरा कर यावत् उनको विदा किये ।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी— कहि णं भंते ! तुब्भे परिवसह ?

कर मुंहपत्ति से या साधु के खंधे पर कंबल होती है उसको मुंह के आगे आडी डाल कर मुंह की यत्ना करके बातें कर सकते हैं । इस में मुंहपत्ति हमेशा मुंहपर बांधी रखने की कोई आवश्यकता नहीं है । इस बात का विशेष खुलासा सब तरह से शंका समाधान सहित हमारा बनाया " आगमानुसार मुंहपत्ति का निर्णय " और जाहिर उद्घोषणा नंबर १-२-३ में विस्तार से लिखा गया है, पाठक गण उसको मंगवा कर अवश्य पढें अमूल्य भेट मिलता है जैन प्रेस, कोटा में ।

अर्थः—उसके बाद अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार पूछा— हे भगवन् ! आप कहां रहते हो ?।

मूल—तए णं भगवं गोयमे अइमुत्तं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम धम्मायरिए धम्मोवएसए भगवं महावीरे आदिकरे जात्र संपाविउकामे इहेव पोलासपुरस्स नगरस्स बाहिया सिरिवणे उज्जाणे अहापडिग्गहं उग्गहं उग्गिणिहत्ता संजमेणं जाव भावेमाणे विहरति, तत्थ णं अम्हे परिवसामो ।

अर्थः—तब भगवान् गौतम स्वामी ने उस अतिमुक्त कुमार से इस प्रकार कहा:- निश्चय करके हे देवानुप्रिय ! मेरे धर्माचार्य धर्म का उपदेश करने वाले भगवान् महावीर स्वामी धर्म की आदि करने वाले यावत् मोक्ष पद पाने की इच्छा वाले हैं । वे यहां पोलासपुर नगर के बाहर श्रीवन नामक उद्यान मे यथायोग्य अवग्रह को ग्रहण करके संयम और तप में अपनी आत्मा को भावन करते हुए रहे हैं, वहां पर हम रहते हैं ।

मूल—तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोयमं एवं वयासी— गच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं सद्धिं समणं भगवं महावीरं पायवंदते । अहासुहं देवाणुप्पिया ! ।

अर्थः—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने भगवान् गौतम स्वामी से इस प्रकार कहा – हे भगवान् !

में आपके साथ श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के चरणों को नमस्कार करने की इच्छा करता हूं। तब गौतम स्वामी ने कहा:— हे देवानुप्रिय ! तेरे को सुख उत्पन्न हो वैसा कर।

मूलः—तए णं से अइमुत्ते कुमारे भगवं गोतमेणं सर्द्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणंपयाहिण करेति, करित्ता वंदति जाव पज्जुवासति।

अर्थः—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार भगवान् गौतम स्वामी के साथ जहां श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी थे वहां आया। आकर श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी को तीन बार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वंदना की। यावत् भगवान् की सेवा करने लगा।

मूल— तए णं भगवं गोयमे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागते जाव पडिदंसेति पडिदंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति।

अर्थः—उसके बाद भगवान् गौतम स्वामी जहां श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी थे, वहां आये। यावत् इरियावही पडिक्कमी, भक्त पान की आलोचना की यावत् भगवान् को आहार दिखलाया। दिखा कर यावत् संयम

तप में आत्मा भावन करते हुए रहे।

मूल—तए णं समणे भगवं महावीरे अइमुत्तस्स कुमारस्स तीसे य धम्मकहा।

अर्थः—उसके बाद श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी ने उस अतिमुक्त कुमार को तथा उन बडी जन समुदाय को धर्म देशना दी।

मूल—तए णं से अइमुत्ते कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।

अर्थः—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार श्रमण भगवान् श्री महावीर स्वामी के पास से धर्म देशना सुन कर हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट होकर इस प्रकार बोला कि हे देवानुप्रिय! भगवान्! मैं मेरे मात-पिता की आज्ञा प्राप्त कर लेऊं, उसके बाद मैं देवानुप्रिय! आपके पास यावत् दीक्षा ग्रहण करूंगा। तब भगवान् ने कहा कि:- हे देवानुप्रिय! तुझको सुख उत्पन्न हो वैसा कर, धर्म कार्य में विलम्ब मत कर।

मूल—तए णं से अइमुत्ते जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागते जाव पव्वातित्तए, अइमुत्तं कुमारं

अम्मापियरो एवं वयासी– बालेसि ताव तुमं पुत्ता! असंबुद्धे सि तुमं पुत्ता! किं नं तुमं जाणसि धम्मं ?।

अर्थ—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार जहां अपने मात-पिता रहते थे वहां आया। यावत् मैं आप की आज्ञा से दीक्षा लेने की इच्छा करता हूं ऐसा कहा। तब अतिमुक्त कुमार को उसके मात-पिता ने कहा:- हे पुत्र! पाहिले तो तू बालक है, हे पुत्र! तू अज्ञानी है, इसलिये तू संयम धर्म को क्या जानता है ?।

मूल—तए णं से अइमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी–एवं खलु अम्मयाओ! जं चेव जाणामि तं चेव न याणामि, जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि।

अर्थ— उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहा– इस प्रकार निश्चय करके हे मात-पिता! मैं जिसको जानता हूं उसको ही नहीं जानता और जिसको नहीं जानता उसको जानता हूं।

मूल—तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी–कहं नं तुमं पुत्ता! जं चेव जाणासि जाव तं चेव जाणासि ?।

अर्थः—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार से उसके मात-पिता ने कहा:-हे पुत्र! तू जो जानता है उस को ही तू नहीं जानता और जो तू नहीं जानता है उसको जानता है, यह बात किस प्रकार है ?।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापियरो एवं वयासी- जाणामि अहं अम्मयाओ ! जहा जायणं अवस्स मरियव्वं, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! काहे वा कहिं वा कहं वा केचिरेण वा ?, न जाणामि अहं अम्मयाओ ! केहिं कम्मायणेहिं जीवा नरइयातिरिक्खजोणिमणुस्सदेवेसु उववज्जंति, जाणामि णं अम्मयाओ ! जहा सएहिं कम्मायाणेहिं जीवा नेरइय जाव उववज्जंति, एवं खलु अहं अम्मयाओ ! जं चेव जाणामि, तं चेव न याणामि जं चेव न याणामि तं चेव जाणामि, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए ।

अर्थः—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार ने अपने मात-पिता से इस प्रकार कहाः- हे मात-पिता ! मैं जानता हूं कि जन्म धारण किये हुए जीव अवश्य मरने वाले हैं परन्तु हे मात-पिता ! मैं नहीं जान सकता कि कब, किस समय (प्रातः काल, मध्यान, शाम, या रात्रि) में, किस क्षेत्र में, किस प्रकार रोगादि से और कितने अल्प या दीर्घ समय को पूरा करके मरना होगा ? और हे मात-पिता ! कौन से कर्मों के आदान से यानी ज्ञानावरणीयादि कर्मों को ग्रहणकरके (ज्ञानावरणी आदि कर्मों के आयतन अथवा आदान यानी बंधन के हेतुओं से और पाठांतर में कर्मापतन यानी जिसके द्वारा आत्मा में कर्म आकर पड़ें-संभवें-मिलें ऐसा प्रत्यंतर में पाठ है) अर्थात् कौन २

कर्मों से जीव नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव योनी में उत्पन्न होते हैं वह मैं जान सकता नहीं, परन्तु हे मात-पिता! यह तो मैं जानता हूं कि अपने २ कर्मानुसार सब जीव नरक वगैरह में यावत् उत्पन्न होते हैं। इस कारण से निश्चय करके हे मात-पिता! मैं जो जानता हूं वह मैं नहीं जान सकता और जो मैं नहीं जानता उसको जानता हूं ऐसा मैं आप से कहता हूं इस कारण से हे मात-पिता! तुम्हारी आज्ञा लेकर मैं यावत् दीक्षा लेने की इच्छा करता हूं।

मूल—तए णं तं अइमुत्तं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणेंहिं तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रायसिरिं पासेत्तए।

अर्थः—उसके बाद उस अतिमुक्त कुमार को उसके मात-पिता जब बहुत प्रकार से समझाने पर भी घर में रखनें में असमर्थ हो गये। तब वे बोले कि हे पुत्र! एक दिन भी तेरी राज्य लक्ष्मी देखने के लिये हम इच्छा करते हैं अर्थात् एक दिन के लिये ही तू राजेन्द्र बन कर राज्य सुख का उपभोग कर।

मूल—तए णं से अतिमुत्ते कुमारे अम्मापिउ वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति, अभिसेओ जहा महाबलस्स, निक्खमणं जाव अणगारे जाए जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जाति बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं गुणरयणं संवच्छरं तवोकम्मं जाव विपुले सिद्धे। (१५)

अर्थः—उसके बाद वह अतिमुक्त कुमार अपने मात-पिता के वचन को मान करके मौन रहा तब भगवती सूत्र में कहे हुवे महाबल की तरह उसका बड़ा भारी राज्याभिषेक किया उसके बाद यावत् उसने दीक्षा अंगीकार की यावत् सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया। बहुत वर्षों तक चारित्रावस्था को पालन कर गुण रत्न संवत्सर वगैरह तप करके यावत् विपुलाचल पर्वत पर सिद्धि पद को प्राप्त हुए (१५)॥ इति पंद्रहवाँ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १५ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेइए, तत्थ णं वाणारसीइ अलक्खे णामं राया होत्था।

अर्थः—तिसकाल तिस समय में बनारसी नामक नगरी थी उसके बाहर ईशान कोण में महाकामवन नामक चैत्य था। उस बनारसी नगरी में अलक्ष नामक राजेन्द्र राज करता था।

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे जाव विहराति, परिसा निग्गया तए णं अलक्खे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ तुट्ठ जहा कूणिए जाव पज्जुवासति, धम्मकहा।

अर्थः—तिस काल तिस समय में श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी यावत् उस चैत्य में आकर विराजे, उनको वंदना करने के लिये नगरी में से पर्षदा निकली। उस वक्त अलक्ष राजेन्द्र भी भगवान् का आगमन सुनकर हृष्ट तुष्ट

होकर कौणिक राजेन्द्र की तरह राज ऋद्धि सहित बड़े आडम्बर पुर्वक वंदना करने के लिये आया यावत् भगवान् की सेवा करने लगा। तब भगवान् ने धर्म देशना दी, उसको सुन कर लोग वापस अपने २ घर गये।

मूल—तए णं से अलक्खे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए जहा उदायणे तहा णिक्खंते, णवरं जेट्ठपुत्तं रज्जे अभिसिंचति, एक्कारस्स अंगा, बहू वासा परियाओ, जाव विपुले सिद्धे ॥ (१६)

अर्थः—उसके बाद उस अलक्ष राजेन्द्र ने श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी के पास उदायन राजा की तरह दीक्षा अंगिकार की। विशेष यह है कि–उसने अपने बड़े पुत्र को राज गादी पर स्थापन किया, फिर ग्यारह अंगो का अभ्यास कर बहुत वर्षों तक चारित्रावस्था को पालन की यावत् विपुलचल पर्वत पर ❀ सिद्धि पद को प्राप्त हुए॥१६॥

❀- इस सूत्र में जगह २ पर वारंवार शत्रुंजय और विपुलाचल पर सिद्ध होने का अधिकार आया है, पाठक गण यह अपने अनुभव सिद्ध और शास्त्रानुसार प्रत्यक्ष बात है कि- संसारी प्राणियों के जैसे २ निमित्त कारण मिलते है वैसे ही मन के परिणाम होते हैं। उसी के अनुसार शुभ या अशुभ कर्मों का बंधन होता है। जैसे किसी शत्रु का नाम, स्थान, मूर्ति आदि देखने से कषाय उत्पन्न होकर द्वेष से अशुभ कर्म बंधते हैं। मात-पिता, विद्या गुरु, दुःख में आश्रय दाता आदि उपकारी के नाम, स्थान, मूर्त्ति देखने से स्नेह भाव उत्पन्न होने से मोहनीय कर्म बंधते हैं। उसी तरह तीर्थंकर गणधर महामुनि आदि के नाम, गोत्र सुनने से तथा केवल उत्पन्न और मुक्ति गमन स्थान पर जाने से उन महान् पुरुषों ने राजऋद्धि संपदा और सुन्दर रमणियाँ आदि छोड़ कर तप संयम में रमणता करके उग्रपरिषह उपसर्ग सहन करते हुए कर्म क्षय करके मुक्ति गये जन्म-मरणादि ८४ लक्ष जीवायोनिरूप संसार से छुटे और अनत ज्ञानादि

मूल—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । (सू० १५)

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष पद को पाये हुए श्री महावीर स्वामी के छट्टे वर्ग का यह अर्थ प्रकाशित किया है ॥ सू० १५ ॥ ॥ इति सोलहवाँ अध्ययन सम्पूर्ण ॥ १६ ॥

निज आतम गुण संपन्न हुए इत्यादि उन्हों के गुणानुवाद याद आकर उनके स्मरण- ध्यान से वैराग्य भाव उत्पन्न होता है। असार संसार की मोह माया का प्रपंच कम होता है, छुटता है उस समय आश्रव-कपाय मंद होते हैं। शुभ भावों की वृद्धि होती है उससे अशुभ कर्मों की निर्जरा होकर शुभ कर्मों का बंध होता है और यदि आपाढ़ भूति मुनि तथा इला पुत्र की तरह शुभ भावना बढ जाय तो घनघाति कर्मों का सर्वथा नाश कर केवल ज्ञान केवल दर्शन की प्राप्ति होजावे। इस प्रकार महान् पुरुषों के मुक्ति गमन स्थान पर जाने से संसार का पार होता है इसलिये उन स्थानों को तीर्थ कहे गये हैं। ऐसे तीर्थ स्थानों में जाने से साधु-साध्वियों के तप-संयम में विशेष शुद्ध वृद्धि होती है। और गृहस्थों के भी ऐसे तीर्थ में दर्शन-पूजन-स्मरण-ध्यान-दान-तप-शील आदि महान् लाभ मिलता है। दुकानदारी, गृहव्योपार, कुशील सवन आदि आरंभ समारंभ छुटता है। विपय वासना कम होती है। साधु-साध्वियों के दर्शन वंदनादि का विशेष लाभ मिलता है-और भगवान् की पूजा सेवा गुणग्राम करने का निरूपाधिक अवसर अधिक मिलता है। इत्यादि ऐसे महान् लाभ के हेतु भूत तीर्थ यात्रा का निषेध करके भव्य जीवों के धर्म कार्यों में अंतराय देना किसी प्रकार उचित नहीं है। इसका विशेष निर्णय "आगमानुसार मुंहपत्ति का निर्णय" और जाहिर उद्घोषणां न० १-२-३ में तथा "श्रीजिन प्रतिमा को वंदन-पूजन करने की अनादि सिद्धि"। आदि ग्रंथों में देखें।

॥ इति छठा वर्ग सम्पूर्ण हुआ ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम वर्ग ॥

मूल—जइ णं भंते ! सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा– नंदा १ तह नंदमती २ नंदोत्तर ३ नंदसेणिया ४ चेव। मरुया ५ सुमरुय ६ महमरुय ७ मरुद्देवा ८ य अट्ठमा। १। भद्दा ९ य सुभद्दा १० य, सुजाता ११ सुमइ य १२। भूयदिन्ना १३ य बोद्धव्वा, सेणियभज्जाण नामाइं ॥२॥

अर्थः— जम्बू स्वामी सुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि– हे भगवन् छट्टे वर्ग का उपरोक्त अर्थ भगवान् ने फरमाया वैसा आपने कहा अब सातवें वर्ग का क्या अर्थ है सो बतलावें? तब सुधर्मस्वामी ने कहा यावत् सातवें वर्ग के तेरह अध्ययन कहे हैं। वे इस प्रकार हैः– पहला नंदा, दूसरा नंदमती, तीसरा नन्दोत्तरा, चौथा नंदसेना, पांचवाँ मरुता, छट्टा सुमरुत्ता, सातवॉ महामरुत्ता, आठवॉ मरुद्देवी, नौवाँ भद्रा, दशवाँ सुभद्रा, ग्यारहवाँ सुजाता, बारहवॉ सुमति और तेरहवॉ भूतदिन्ना. ये तेरह श्रेणिक राजेन्द्र की राणियों के नाम के तेरह अध्ययन कहे हैं।

मूल—जइ णं भंते तेरस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?।

अर्थः—जम्बू स्वामी सुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन्! सातवें वर्ग के तेरह अध्ययन कहे हैं, तो श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष को पाये हुए श्रीमहावीर स्वामी ने पहले अध्ययन का किस प्रकार अर्थ वर्णन किया है?।

मूल—एवं खलु जंबू! ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए सेणिए राया वन्नओ। तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था वन्नओ। सामी समोसढे, परिसा निग्गया।

अर्थः—श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं:- इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू! तिस काल तिस समय में राजग्रह नामक नगर था। उसके बाहर ईशान कोण में गुणशील नामक चैत्य था। उस नगर में श्रेणिक नाम के राजेन्द्र राज्य करते थे। उनका वर्णन करना। उन श्रेणिक राजेन्द्र के नदा देवी नामक राणी थी, उसका वर्णन करना। एक समय श्रीमहावीर स्वामी पधारे। उनको वंदना करने के लिये नगर में से पर्षदा निकली।

मूल—तए णं सा नंदा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता जाणं जहा पउमावइ जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता वीसं वासाइं परियाओ जाव सिद्धा। एवं तेरस वि देवीओ णंदागमेण णेयव्वाओ। (सू०१६)॥ सत्तमो वग्गो सम्मत्तो ॥ ७ ॥

अर्थः—उसके वाद उन नंदादेवी ने यह वृत्तान्त जान कर कौटुम्बिक मनुष्यों को बुलाये. बुला कर उनके पास वैठने का वाहन (रथ) मंगा कर उसमें बैठ कर पद्मावती राणी की तरह भगवान् को वंदना करने के लिये गई यावत् धर्मोपदेश सुन कर वैराग्य मय होकर दीक्षा अंगीकार की। ग्यारह अंगों का अभ्यास कर बीस वर्ष चारित्र अवस्था को पालन कर यावत् सिद्धि पद को प्राप्त हुई। इसी प्रकार तेरह राणियों का वृतान्त नंदा राणी की तरह जान लेना ॥ (सू० १६)

॥ इति सप्तम वर्ग समाप्त ॥ ७ ॥

॥ अथ अष्टम वर्ग ॥



मूल—जइ णं भंते! अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-काली १ सुकाली २ महाकाली ३ कण्हा ४ सुकण्हा ५ महाकण्हा ६। वीरकण्हा ७ य वोद्धव्वा रामकण्हा ८ तहेव य ॥ १ ॥ पिउसेणकण्हा ९ नवमी दसमी महासेणकण्हा १० य।

अर्थः—जम्बू स्वामी सुधर्म स्वामी से पूछते हैं कि हे भगवन्! सातवें वर्ग का अर्थ आपने कहा अव आठवें

वर्ग का अर्थ कहिए। श्री सुधर्म स्वामी कहते हैं कि हे जम्बू! आठवें वर्ग में दश अध्ययन कहे हैं वे इस प्रकार हैं:- पहिला काली, दूसरा, सुकाली, तीसरा महाकाली, चौथा कृष्णा, पाँचवाँ सुकृष्णा, छट्टा महा कृष्णा, सातवाँ वीर कृष्णा, आठवाँ रामकृष्णा तथा नौवाँ पितृसेन कृष्णा और दशवाँ महासेन कृष्णा ये दशों श्रेणिक राजेन्द्र की राणियों नाम के दश अध्ययन हैं।

मूल—जइ णं भंते! अट्ठमस्स वग्गस्स दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नते?।

अर्थः—हे गुरुदेव! वीर भगवान् ने आठवें वर्ग के दश अध्ययन कहे हैं तो हे भगवन्! श्रमण भगवान् यावत् मोक्ष के पाये हुए श्री महावीर स्वामी ने पहले अध्ययन का अर्थ किस प्रकार कहा है?।

मूल—एवं खलु जंबू! ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा नाम नगरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए राया, वण्णओ।

अर्थः—इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू! तिस काल तिस समय में चंपा नामक नगरी थी। उसके बाहर ईशान कोण में पूर्ण भद्र नामक चैत्य था। उस चंपा नगरी में कौणिक नामक राजा राज्य करता था। उसका वर्णन करना।

मूल— तत्थ णं चंपाए नगरीए सेणियस्स रन्नो भज्जा कोणियस्स रन्नो चुल्लमाउया काली नामं देवी होत्था, वण्णओ। जहा नंदा जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जति, वहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमेहिं जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति।

अर्थः—उस चंपा नगरी में श्रेणिक राजेन्द्र की स्त्री और कौणिक राजा की छोटीमाता कालीदेवी नामक राणी थी, उसका वर्णन करना। उसने नंदा की तरह दीक्षा ग्रहण की, सामायिकादि ग्यारह अंगों का अभ्यास किया तथा वहुत उपवास, छट्ठ और अट्ठम आदि तप द्वारा यावत् अपनी आत्मा को तप संयम में भावती हुई रही।

मूल—तए णं सा काली अज्जा अण्णया कदाइं जेणेव चंदणा अज्जा तेणेव उवागता, उवागच्छित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भे हिं अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं तवं उवसंपज्जेत्ताणं विहरेत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिवंधं करेह।

अर्थ—उसके वह काली साध्वी अन्यदा (एक समय) जहां आर्य चंदनवाला नामक साध्वी (अपनी गुरुणी) रहती थी वहां आई। आकर इस प्रकार कहने लगी:– हे साध्वीजी! तुम्हारी आज्ञा लेकर मैं रतावली नामक तप को अंगीकार करके विचरने की इच्छा करती हूं। तव चंदनवाला साध्वी ने कहा:— हे देवानुप्रिया! जिसमें तुझको

होता हो उसमें विलम्ब मत करो।

विशेषार्थः—इस आठवें वर्ग में क्या विशेषता है वह कहते हैं:- यहां तप का नाम रत्नावली कहा है। गले में पहरने की वस्तु (हार) वह आभूषण विशेष है। कारण जो रत्नावली के सामान जो तप है वह तप भी रत्नावली तप कहलाता है। जैसे रत्नावली नामक आभूषण दोनों तरफ से प्रथम शुरुआत में पतला और फिर अधिक २ जाड़ा होता है, उसके बाद दोनों काहलिका नामक दो अवयव (चकदे) स्वर्णमय होते हैं। उसके बाद दोनों तरफ लम्बी २ सर होती हैं, उसके बाद हार के मध्य में अधिक मूल्य वाली बड़ी २ मणियां विभूषित रहती हैं। उसी प्रकार जो तप पट्टादिक में दिखाने में आता है। वह तप इस आकार को धारण करना है। इससे यह तप का नाम रत्नावली तप कहा है। इसमें पहले चतुर्थ (एक उपवास), फिर छट्ट (दो उपवास) फिर अट्टम (तीन उपवास) द्वारा उसका मस्तक बनता है। उसके बाद आठ छट्ठ (आठ वार दो दो उपवास) आते हैं। इसकी स्थापना करते दो पंक्ति में चार खड़े खाने कर आठ छट्ठ स्थापन करने चाहिये। अथवा तीन पंक्ति से नव खाने कर मध्य खाने में शून्य स्थापन कर बाकी के आठ खानों में आठ छट्टके २-२ अंक रखने, इसके बाद एक पंक्ति मे खड़े सोलह खाने कर उसमें अनुक्रम से चौथ भक्त (एक उपवास) से आरंभ कर चौतीस भक्त (सौलह उपवास) तक स्थापन करने। इसके बाद रत्नावली के मध्य भाग की

कल्पना कर चौतीस छट्ट स्थापन करने के हैं; क्योंकि उसमें अधिक मूल्य वाली मणियों के समान मणियों की कल्पना की है। उसमें पहले दो छट्ट, उसके नीचे तीन छट्ट, फिर अनुक्रम से चार, पांच, छ छट्ट स्थापन कर उसके नीचे २ अनुक्रम से उतरते हुए पांच, चार, तीन और दो छट्ट स्थापन करने। अथवा आठ खड़ी और छ आड़ी रेखा करके पेंतीस खाने कर मध्य के खाने मे शून्य रख बाकी चौंतीस छट्ट स्थापन करने। इसी प्रकार दूसरी तरफ भी नीचे से ऊपर जाते पहले सौलह उपवास से लेकर एक उपवास पर्यन्त सौलह खाने स्थापन करने। इसके बाद उसकी ऊपर आठ छट्ट स्थापन करने। उसकी स्थापना पहिले के अनुसार करनी। इसके बाद उसके ऊपर अनुक्रम से अट्ठम (तीन उपवास), छट्ट (दो उपवास) और चतुर्थ (एक उपवास) स्थापन करना।



रत्नावली तप का यंत्र

१ । २ । ३

२	२	२
२	०	२
२	२	२

१ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६

(दो बार)

अथवा

१ । २ । ३

२	२
२	२
२	२
२	२

१ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६

(दो बार)

।२।२।
।२।२।२।
।२।२।२।२।
।२।२।२।२।२।
।२।२।२।२।२।२।
।२।२।२।२।२।
।२।२।२।२।
।२।२।२।
।२।२।

२	२	२	२	२	२	२
२	२	२	२	२	२	२
२	२	२	०	२	२	२
२	२	२	२	२	२	२
२	२	२	२	२	२	२

तप करने वाले इन दोनों में से एक प्रकार से करें.

इस पहली परिपाटी में सब काम गुणित पारना करना चाहिये। इसमें सब काम गुणों अर्थात् इच्छानुसार प्रिय रसादि वाला आहार जिसमें हो उसे सब काम गुणित कहा जाता है। यानी तपस्वी की इच्छानुसार पारने में छ प्रकार के विगय वाला आहार कर सकता है। तोभी चारों परिपाटियों में पारणे संबंधी विशेष कर यह नियम है, कि– पहली परिपाटी में सब काम गुणित पारना करना, दूसरी परिपाटी में विकृति वर्जित (छः प्रकार की विगय रहित) पारना करना, तीसरी परिपाटी में अलेपकृत (सूखा भोजन जो हाथ के लेप नहीं लगे) पारना करना। और चौथी परिपाटी में आंबिल से पारना करना। दूसरी वाचना में पहली परिपाटी में सब गुण वाला पारना करना ऐसा कहा है।

मूल— तते णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी रयणावलिं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं जहा—

चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति। छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति। अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठ छट्ठाइं करेति। अट्ठ छट्ठाइं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति। चउत्थं करित्ता सव्व कामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति। छट्ठं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता

दसमं करेति, दसमं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति। दुवालसमं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति। चोद्दसमं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति। सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठारसमं करेति, अट्ठारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति। वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकाम गुणियं पारेत्ता बावीसइमं करेति। बावीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउवीसइमं-करेति। चउवीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छव्वी सइमं करेति। छव्वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठावसिइमं करेति। अट्ठावीसइमं करेत्ता सव्वकाम गुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता तीसइमं करेति। तीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता बत्तीसइमं करेति। बत्तीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइमं करेति। चोत्तीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसं छट्ठाइं करेति। चोत्तीसं छट्ठाइं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइमं करेति। चौत्तीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता बत्तीसं करेति। बत्तीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता तीसं करेति। तीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठावीसं करेति। अट्ठावीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,

सव्वकामगुणियं पारेत्ता छव्वीसं करेति। छव्वीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउवीसं करेति। चउवीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता बावीसं करेति। बावीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसं करेति। वीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठारसं करेति। अट्ठारसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति। सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति। चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता बारसमं करेति। बारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति। दसमं करेता सव्व कामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति। अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठ छट्ठाइं करेति, अट्ठ छट्ठाइं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता, अट्ठमं करेति। अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति। छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति।

चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, एवं खलु एसा रयणावलीए तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी

एगेणं संवच्छरेणं तिहिं मासेहिं बावीसाए य अहोरत्तेहिं अहासुत्ता जाव आराहिया भवति ।

अर्थः—उसके बाद वह काली साध्वी चंदनबाला साध्वी की आज्ञा लेकर रत्नावली नामक तप को अंगीकार करके विचरने लगी। वह इस प्रकार है-पहिले चतुर्थभक्त (एक उपवास) करे, चतुर्थ भक्त करके सर्वकामगुणित पारना करे, छट्ठ (दो उपवास) करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारणा करके अट्ठम (तीन उपवास) करे। अट्ठम करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकाम गुणित पारना करके फिर अट्ठम (तीन उपवास) करे, आठ छट्ठ करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके आठ छट्ठ (यानी आठ बार दो दो उपवास) करे। सर्व काम गुणित पारना करके छट्ठ (दो उपवास) करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकाम गुणित पारना करके अट्ठम (तीन उपवास) करे , अट्ठम करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्वकाम गुणित पारना करके दशम (चार उपवास) करे। दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकाम गुणित पारना करके द्वादश (पांच उपवास) करे। द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्दश (छः उपवास) करे। चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकामगुणित पारना करके षोडष (सात उपवास) करे, षोडष करके सर्वकाम गुणितपारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश (आठ उपवास) करे। अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे।

सर्वकामगुणितपारना करके विंशाति (नव उपवास) करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकाम गुणित पारना करके द्वाविंशाति (दश उपवास) करे, द्वाविंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्विंशाति (ग्यारह उपवास) करे। चतुर्विंशाति करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्वकामगुणति पारणा करके पड्विंशाति (वारह उपवास) करे। पड्विशाति करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकाम गुणित पारना करके अष्टाविंशाति (तेरह उपवास) करे। अष्टविंशाति करके सर्वकाम गुणित पारना करे। सर्वकामगुणित पारना करके त्रिंशत् (चौदह उपवास) करे। त्रिंशत करके सर्व कामगुणित पारना करे। मर्वकाम गुणित पारना करके द्वात्रिंपत् (पंद्रह उपवास) करे। द्वात्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकाम गुणित पारना करके चतुर्त्रिंशत् (सोलह उपवास करे। चतुर्त्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकाम गुणित पारना करके चौतीस छट्ट (चौतीस वेले) करे, चौतीश छट्ठों में सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकामगुणित पारणा करके चतुर्स्त्रिशत् (सोलह उपवास) करे। चतुर्स्त्रिशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकामगुणित पारणा करके द्वात्रिंशत् (पंद्रह उपवास) करे। द्वात्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकामगुणित पारना करके त्रिंशत् (चौदह उपवास) करे। त्रिंशत् करके सर्वकामगुणित पारना करे। सर्वकामगुणित पारना करके अष्टाविंशाति करे, अष्टविंशाति करके सर्वकामगुणित पारना करें, सर्वकामगुणित पारना करके पड्विशाति (वारह उपवास) करे। पड्विंशाति करके सर्वकामगुणित पारना करे।

सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्विंशाति (ग्यारह उपवास) करे । चतुर्विंशाति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वाविंशाति (दस उपवास) करे । द्वाविंशाति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके विंशाति (नव उपवास) करे । विंशाति करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादस (आठ उपवास) करे । अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके षोडश (सात उपवास) करे । षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश (छः उपवास) करे । चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश (पांच उपवास) करे । द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके दशम (चार उपवास) करे । दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अष्टम (तीन उपवास) करे । अष्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके छट्ठ (दो उपवास) करे । छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके आठ छट्ठ (आठ बेले) करे । आठ छट्ठ करके प्रत्येक पारणे में सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके अट्ठम (तेला) करे । अट्ठम करके सर्वकामगुणित पारना करे । फिर छट्ठ करे, छट्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे । सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके सर्वकामगुणित

पारना करे। इस प्रकार निश्चय करके रत्नावली तपश्चर्या की पहली परिपाटी एक वर्ष तीन महीने और बाईस अहो-रात्रि में सूत्र में कहे अनुसार आराधन की जाती है। इस एक परिपाटी में ३८४ उपवास और ८८ पारणे के दिन मिलाकर सब ४७२ दिन होते हैं।

मूल—तयाणंतरं च णं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता विगइवज्जं पारेति, विग-इवज्जं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करित्ता विगइवज्जं पारेति, एवं जहा पढमाए परिवाडीए तहा बीआए वि, नवरं सव्वपारणए विगइवज्जं पारेति जाव आराहिया भवति।

अर्थः—उसके बाद दूसरी परिपाटी में पहले चतुर्थ (एक उपवास) करे। चतुर्थ करके विगई बिना पारना करे। विगई बिना पारना करके छट्ठ (दो उपवास) करे। छट्ठ करके विगई बिना पारना करे। इसी प्रकार पहली परिपाटी की तरह सब कहना। विशेष यह है कि सब पारनों में विगई को त्याग कर पारने करे। इस प्रकार दूसरी परि-पाटी आराधन की जाती है।

मूल—तयाणंतरं च णं तच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता अलेवाडं पारेति, सेसं तहेव. एवं चउत्था वि परिवाडी, नवरं सव्वपारणए आयंबिलं पारेति, सेसं तं चेव। गाहा—पढमंमि सव्वकामगुणं

पारे, वीतियंमि विगइ वज्जं । तइयंमि अलेवाडं, आयंबिलंमि चउत्थं ॥ १ ॥

अर्थः—उसके बाद तीसरी परिपाटी में पहिले चतुर्थ (एक उपवास) करे । चतुर्थ करके अलेपकृत पारना करे । बाकी सब पूर्व की तरह जान लेना चाहिये । इसी प्रकार चौथी परिपाटी को भी जानना परन्तु इसमें प्रत्येक पारने के दिन आयंबिल करे, बाकी सब पहिले की तरह जानना । चारोंही परिपाटी के पारने की संग्रह की हुई गाथा का अर्थ इस प्रकार है " पहिली परिपाटी में सर्वकामगुण यानी सब इच्छित कल्पनीय वस्तुओं से पारना करे, दूसरी परिपाटी में विगई को त्याग कर पारना करे, तीसरी परिपाटी में लेपरहित वस्तुओं से पारना करे । और चौथी परिपाटी में आयंबिल से पारणा करे । "

मूल—तए णं सा काली अज्जा तं रयणावलीतवोकम्मं पंचहिं संवच्छरेहिं दोहि य मासेहिं अट्ठावीसाए य दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागता, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता बहूहिं चउत्थ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरति ।

अर्थः— उसके बाद वह काली साध्वी रत्नावली नामक तपश्चर्या को पांच वर्ष, दो महीने, और अट्ठावीश दिने सूत्र में कहे अनुसार यावत् आराधन कर जहां आर्य चंदनबाला साध्वी थी वहां आई । आकर आर्य चंदन

बाला साध्वी को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर बहुत उपवास वगैरह तप करती हुई यावत् अपनी आत्मा को तप संयम में भावन करती हुई विचरने लगी।

मूल—तए णं सा काली अज्जा तेणं ओरालेणं जाव धमणिसंतया जाया यावि होत्था, से जहा इंगालसगडी वा जाव सुहुयहुयासणे इव भासरासिपलिच्छणा तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अतीव उवसोभेमाणी २ चिट्ठति।

अर्थः— उसके बाद वह काली साध्वी इस प्रकार उदार तपश्चर्या करने से यावत् शरीर में नसों से व्याप्त होरही थी-(शरीर की नसें दिखती थीं)। जैसे कोई कोयलों की भरी हुई गाडी हो, यावत् अच्छी तरह से होम की हुई तेज अग्नि हो और राख (भस्मी) से ढकी हुई हो, उसी प्रकार वह काली साध्वी आत्मा के अन्दर रहा हुआ तप तेज से और तपश्चर्या रूपी लक्ष्मी से अत्यन्त शोभायमान् हो गई। यहां तप संबन्धी उदार शब्द के पास यावत् शब्द है उसका आशय इसप्रकार है-'पयत्त' यानी गुरु का दिया हुवा, अथवा प्रयत्नवाला यानी प्रमाद रहित, 'प्रगृहीत' यानी बहुत आदर पूर्वक उत्साह से ग्रहण कियाहुआ, कल्याण कारक, 'शिव' यानी मोक्ष का कारण रूप, 'धन्य' यानी सर्व प्रकार की संपदा को देने वाला, 'मांगल्य' यानी पाप का नाश करने वाला, 'सश्रीक' यानी शोभायमान, 'उदग्र' यानी तीव्र, 'उत्तम' यानी श्रेष्ठ और 'उदार' यानी निस्पृह होने से उदारता वाली तपश्चर्या द्वारा वह काली साध्वी शुष्क यानी शरीर के रस रहित, भूक्ष यानी क्षुधा वाली, निर्मांस यानी मांस रहित हो गई, और

अस्तिचर्मावनद्धा यानी मात्र अस्थियें, चर्म से मढी हुई रह गई जिससे बैठने में तथा उठने में उसके हाड़ के कड़ कड शब्द करने लगे अर्थात् वह शरीर से कृष हो गई और उस का शरीर नशों से व्याप्त रहगया था। इस प्रकार उसकी अवस्था होगई तो भी वह अपने जीव के बल द्वारा चलती थी और जीव के ही बल से खडी रहती थी। वह काली साध्वी भाषा-वचन बोलने के बाद ग्लानि पाती। भाषा का उच्चारण करते वक्त भी ग्लानि करती थी, मैं भाषा का उच्चारण करूंगी ऐसा विचार आते ही यानी भाषा बोलने के पहले भी ग्लानि को प्राप्त होती थी जैसे कोई लकड़ी की भरी हुई गाड़ी या पत्तों की भरी हुई गाड़ी, या कोयले की भरी हुई गाड़ी धूपमें रखकर सूखी हुई खड़ खड शब्द करती हुई चलती है और शब्द करती हुई खडी रहती है, इसी प्रकार वह कालीसाध्वी भी हाडकों के खड खड शब्द द्वारा चलती व खडी रहती थी और उग्र तप द्वारा और तपके तेजद्वारा वृद्धि पाती थी। मांस रुधिर से शरीर में हानि होने लगी। भस्म से ढकी हुई अग्नि की तरह तपश्चर्या द्वारा, तेज द्वारा और तपश्चर्या रूपी लक्ष्मी की संपदा द्वारा अधिकाधिक शोभायमान् होकर रहने लगी। यहां तपश्चर्या के जो विशेषण कहे हैं वे एक ही अर्थ के द्योतक हैं तो भी विशेष अर्थ की विवक्षा करने के लिये ज्ञाता सूत्र के पहिले अध्ययन की टीका के अनुसार जान लेना चाहिये।

मूल-तए णं तीसे कालीए अज्जाए अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरतकाल समयंसि अयं अब्भत्थिए जहा खंदयस्स

चिंता जहा जाव अत्थिमे उट्ठाणे (कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धाधिईसंवेगे) ताव ताव मे सेयं कल्लं जाव जलंते अज्जचंदणं अज्जं आपुच्छित्ता अज्जचंदणाए अज्जाए अब्भणुन्नायाए समाणीए संलेहणा झूसणा भत्तपाणपडियाइक्खे कालं अणवकंखमाणे विहरेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं संपेहित्ता कल्लं जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी इच्छामि णं अज्जो ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणा जाव विहरेत्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह । तओ काली अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी संलेहणाझूसिया जाव विहरति ।

अर्थः— उसके बाद उस काली साध्वी को एक समय मध्य रात्रि को धर्म ध्यान करते हुए इस प्रकार का अध्यवसाय–विचार उत्पन्न हुआ–स्कंदक मुनि की तरह इसने विचार किया कि जहां तक मेरी उठने की शक्ति है (क्रिया करने की शक्ति है जहां तक बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम, श्रद्धा–वांछा, धृति–संतोष और संवेग है) वहां तक मुझे कल सुबह यावत् सूर्य प्रकाशमान् होवे तब आर्या चन्दनबाला साध्वी से पूछ कर आर्य चन्दनबाला साध्वी की आज्ञा लेकर संलेखना को ग्रहण कर, आहार पानी का प्रत्याख्यान कर, मृत्यु की वांछा नहीं रखकर विहार करना कल्याणकारी है। इस प्रकार उसने विचार किया। इस प्रकार विचार करके दूसरे दिन सवेरे जहां

आर्या चन्दनबाला साध्वी थी वहां आई, आकर आर्या चन्दनबाला साध्वी को वंदना की, नमस्कार किया। वन्दना-नमस्कार करके इस प्रकार कहने लगीः-हे साध्वी! आपकी आज्ञा हो तो संलेखना ग्रहण कर यावत् मैं विचरने की इच्छा करती हूं तब आर्या चन्दनबाला सध्वी ने कहा कि-हे देवानुप्रिया! तुमको जिस प्रकार सुख उत्पन्न हो उसमें विलंब मत करो। इसके बाद वह काली साध्वी आर्या चन्दनबाला की आज्ञा लेकर संलेखना कर यावत् विचरने लगी।

मूल—तए णं सा काली अज्जा अज्जचंदणाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता बहु पडिपुन्नाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अपाणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ जाव चरिमुस्सासनीसासेहिं सिद्धा। णिक्खेवो अज्झयणं। (सू० १७)

अर्थः—उसके बाद वह काली साध्वी आर्या चन्दनबाला के पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अभ्यासकर पूर्ण आठ वर्ष चारित्र पालन कर एक महीने की संलेखना द्वारा आत्मा (शरीर का) क्षय कर अनशन द्वारा साठ भक्त को छेदकर यानी एक महीने का अनशन पूरा करके जिस कार्य के लिये चारित्र ग्रहण किया था उस कार्य को साधन कर अन्तिम श्वासोच्छवास सम्पूर्ण कर सिद्धिपद को प्राप्त किया। (सू० १७) यह प्रथम अध्ययन का अर्थ हुआ.

॥ इति आठवां वर्ग का प्रथम अध्ययन सम्पूर्ण ॥ ८ ॥ १ ॥

मूल—ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा नाम नगरी, पुन्नभद्दे चेइए, कोणिए राया, तत्थ णं सेणियस्स रन्नो भज्जा, कोणियस्स रण्णो चुल्लमाउया सुकाली नाम देवी हात्था। जहा काली तहा सुकाली वि णिक्खंता जाव भावेमाणे विहरति।

अर्थः—उस काल उस समय में चंपा नामक नगरी के बाहर पूर्णभद्र नामक चैत्य था वहां पर कौणिक नामक राजा राज्य करता था। वहां श्रेणिक राजेन्द्र की स्त्री कौणिक राजा की छोटी माता सुकाली नामक राणी थी। काली की तरह सुकाली ने भी दीक्षा ग्रहण की यावत् उग्र तप करती हुई तप-संयम में अपनी आत्मा को भावती हुई विचरने लगी।

मूल—तए णं सा सुकाली अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव अज्जचंदणा अज्जा जाव इच्छामि णं अज्जो तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी कणगावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरेत्तए। एवं जहा रयणावली तहा कणगावली वि, नवरं तिसु ठाणेसु अट्ठमाइं करेति जहा रयणावलीए छट्ठाइं, एक्काए परिवाडीए संवच्छरो पंच मासा बारस य अहोरत्ता, चउण्हं पंच वरिसा नव मासा अट्ठारस दिवसा, सेसं तहेव। नव वासा परियातो जाव सिद्धा। (सू० १८)

अर्थः— उसके बाद वह सुकाली साध्वी एक समय जहां आर्या चन्दन बाला साध्वी थी वहां गई और इस प्रकार कहने लगी:—हे साध्वी जी ! आपकी आज्ञा लेकर मैं कनकावली नामक तपश्चर्या को ग्रहण करके विहार करने की इच्छा करती हूं। इसी प्रकार रत्नावली तप के समान ही कनकावली तप जान लेना चाहिये। विशेष यह है कि रत्नावली तपश्चर्या में तीन स्थानों पर आठ आठ और चौतीस छट्ठ करने का कहा है। उनके बदले यहां कनकावली तपमें आठ आठ और चौतीस इन तीनों स्थानों पर अट्ठम करने के हैं इसलिये एक परिपाटी में एक वर्ष, पांच महीने और बाहर अहोरात्री होती हैं और चारों परिपाटी मिलकर पांच वर्ष, नौ महीने और अठारह रात्री दिन होते हैं। दूसरा सब अधिकार उसी प्रकार यानी रत्नावली की तरह जान लेना चाहिये। यावत् नव वर्ष का चारित्र पालन कर यावत् अनशन कर के उसने सिद्धि पदको प्राप्त किया। (सूत्र १८)

सूचनाः—स्वर्ण का मणिवाला अलंकार की तरह यह तपश्चर्या करने में आती है जिससे यह तप भी कनकावली नामक कहाजाता है इसकी स्थापना पृष्ठ १६६ में दी है, वहां से देखें।



कनकावली तप का यंत्र

१
२
३

३	३	३	३	३	३
३	०	३	३	०	३
३	३	३	३	३	३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ (two columns)

।३।३।
।३।३।३।
।३।३।३।३।
।३।३।३।३।३।
।३।३।३।३।३।३।
।३।३।३।३।३।
।३।३।३।३।
।३।३।३।
।३।३।

अथवा

१
२
३

३	३	३	३
३	३	३	३
३	३	३	३
३	३	३	३

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ (two columns)

३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	०	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३	३

तप करने वाले इन दोनों में से एक प्रकार से करें.

मूल—एवं महाकाली वि, नवरं खुड्डागं सीहानिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति तं जहा—चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता छट्ठं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चउत्थं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेता छट्ठं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दुवालसं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्दसं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता वारसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्दसं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता वीसतिमं करेति, करेत्ता सव्वकाम—गुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता वीसइमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठारसमं करेति,

करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता सोलसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता बारसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चोद्दसमं करेति, करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता बारसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता दसमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता छट्ठं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता अट्ठमं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चउत्थं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता छट्ठं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, पारेत्ता चउत्थं करेति, करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति। तहेव चत्तारि परिवाडिओ, एक्काए परिवाडीए छम्मासा सत्त य दिवसा, चउण्हं दो वरिसा अट्ठावीसा य दिवसा जाव सिद्धा। (सू० १९).

अर्थ— इसी प्रकार महाकाली साध्वी का भी वर्णन करना चाहिये। विशेष यह है कि—वह लघु सिंहनिष्क्रीडित नामक तप को अंगीकार कर विहार करने लगी। वह तप इस प्रकार है:—पहले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके

सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके छट्ट करे, छट्ट करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके फिर चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके अट्टम करे, अट्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके छट्ट करे, छट्ट करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके अट्टम करे, अट्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके द्वादशम करे, द्वादशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके द्वादशम करे, द्वादशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके पोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके विंशति करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके विंशति करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके

द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके अट्टम करे, अट्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके छट्ट करे, छट्ट करके सर्वकामगुणित पारना करे पारना करके अट्टम करे, अट्टम करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके छट्ट करे, छट्ट करके सर्वकामगुणित पारना करे, पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे, यह एक परिपाटी हुई। इसी प्रकार चार परिपाटी करे, एक परिपाटी में छ महीने और सात दिन होते हैं और चार परिपाटी में दो वर्ष और अट्टावीश दिन लगते हैं। यावत् इस प्रकार उग्र तप-संयम का पालन करके अंत में एक महीने का अनशन कर यावत् वह महाकाली साध्वी सिद्ध पद को प्राप्त हुई। (सू० १९)

विशेषार्थ—क्षुल्लक यानी आगे बडा कहने का है इसलिये यह तप छोटा कहा है। सिंह का निष्क्रीडित यानी सिंह का विहार या गमन वह सिंह निष्क्रीडित कहलाता है। इसके समान जो तपश्चर्या होती है वह सिंह निष्क्रीडित नामक तपश्चर्या कहलाती है अर्थात् जैसे चलता हुआ सिंह आगे जाकर उलांगे हुए पृथ्वीतल को पीछा फिर कर देखता है, उसी प्रकार इस तप में भी उलांगी हुई तपश्चर्या को यानी पहिले की हुई तपश्चर्या को

फिरसे करते हुए आग आगे तपश्चर्या की वृद्धि करने में आती है। वह सिंह निष्क्रीडित तपश्चर्या कहलाती है। इस तपश्चर्या की स्थापना इस प्रकार है:—पहली पंक्ति में एक से प्रारंभ कर नौ तक क अंक अनुक्रम से स्थापन करने। फिर उलटे लौटकर दूसरी पंक्ति में नौ से आरंभ कर एक तक के अंक अनुक्रम से स्थापन करने। फिर पहली पंक्ति में दो से नौ तक के अंक भरने। (दो, दो के पीछे तीन, तीन के पीछे यावत् नौ, नौ के पीछे एक से आठ तक के अंक भरने। इसके बाद नौ से एक तक दूसरी पंक्ति में आठ से लेकर दो के अंक पर्यन्त (आठ के पहले सात, सात के पहले पांच यावत् दो के पहले एक) अर्थात् सात से आरंभ कर इस प्रकार अंक स्थापन करने १।२।१।३।२।४।३।५।४।६।५।७।६।८।७।९॥८॥-।९।७।८।६।७।५।६।४ ५।३।४।२।३।१।२।१। यहां एक से नौ तक दो पंक्ति हैं इसका जोड करने पर ४५+४५=मिलकर ९० होते हैं। पहली पंक्ति में दो से नौ तक बीच बीच में एक से लगाकर आठ अंक रखे हैं उसका जोड ३६ होता है और दूसरी पंक्ति में एक से लगा कर सात तक का जोड लगाने से २८ होते हैं तथा पारने के दिन ३३ होते हैं। इन सब का जोड १८७ होता है। इतने दिन तपश्चर्या के होने से छ महीने, और सात दिन की यह तपश्चर्या की एक परिपाटी पूर्ण होती है। इसी प्रकार चार परिपाटी होने से इन चारों का जोड दो वर्ष और अट्ठावीश दिन में यह तपश्चर्या पूर्ण होती है। इस तप की स्थापना:— पृष्ट २७२ में है, वहां से समझ लेना।

सिंहनिष्क्रीडित तप में नव उपवास तक करने के हैं और बडे सिंहनिष्क्रीडित तप में सोलह उपवास तक करने के हैं और उसी प्रकार पीछे हट कर दूसरी पंक्ति में लेने का है। उसमें पहली परिपाटी में एक वर्ष, छः महीने और अठारह दिन लगते हैं तथा चारों परिपाटी मिला कर छः वर्ष, दो महीने और बारह अहोरात्र होते हैं। शेष सब अधिकार काली साध्वी की तरह कहना यावत् वह अनशनकर सिद्धि पद को प्राप्त हुई। (सू० २०)

इस प्रकार महा सिंहनिष्क्रीडित तपश्चर्या को भी जानना चाहिये। विशेष यह है कि एक से सोलह पर्यन्त और सोलह से एक पर्यन्त अंक स्थापन करने। फिर पहली पंक्ति में दो से सोलह पर्यंत स्थापन किये हुए प्रत्येक अंक के पीछे अनुक्रम से एक से पन्द्रह तक के अंक रखने और दूसरी पंक्ति में जो सोलह से एक तक के अंक रखे हैं उसमें पन्द्रह से दो तक के प्रत्येक अंक के पूर्व अनुक्रम से चौदह से एक पर्यन्त अंक रखने। इस तप के दिन का प्रमाण इस प्रकार है:— एक से सोलह और सोलह से एक, ऐसे दो पंक्ति हैं। उस में एक से सोलह तक का जोड १३६ होते हैं। (दूसरी पंक्ति का भी १३६ होते हैं), एक से पंद्रह तक का जोड १२० होते हैं, एक से चौदह का जोड १०५ होते हैं और पारने के दिन ६१ होते हैं ये सब मिल कर ४४८ दिन होते हैं। इसमें एक वर्ष, छः महीने और अठारह दिन होते हैं.



१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	
महासिंहनिष्क्रीडित तप की स्थापना का यन्त्र																														१५
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	

मूल— एवं सुकण्हा वि, णवरं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे सत्तए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिगाहेति एक्केक्कं पाणयस्स, दोच्चे सत्तए दो दो भोयणस्स दो दो पाणयस्स पडिगाहेति, तच्चे सत्तए तिन्नी भोणयस्स तिन्नि पाणयस्स, चउत्थे चउ, पंचमे पंच, छट्ठे छ, सत्तमे सत्तए सत्त दत्तिओ भोयणस्स पडिग्गाहेति सत्त पायणस्स, एवं खलु एयं सत्तसत्तमियं भिक्खुपडिमं एगूणपन्नाते रातिंदिएहिं एगेण य छन्नउएणं भिक्खासएणं अहासुत्ता जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागया अज्जचंदणं अज्जं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरेत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेह।

अर्थ—इसी प्रकार कृष्णा साध्वी का भी वर्णन करना। विशेष यह है कि सप्तसप्तमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार करके वह विहार करने लगी। उस में पहली सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा एक २ दत्ति आहार की और एक २ दत्ति पानी की ग्रहण करे। दूसरी सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा दो दो दत्ति भोजन की और दो दो दत्ति पानी की ग्रहण करे। तीसरी सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा भोजन की तीन २ दत्ति और पानी की तीन २ दत्ति ग्रहण करे, चौथी सप्तमिका में चार चार, पांचवीं में पांच पांच, छट्ठी में छः छः और सातवीं सप्तमिका में सात दिन तक हमेशा सात सात दत्ति भोजन की और सात सात दत्ति पानी की ग्रहण करे। इस प्रकार करने से यह सप्तसप्तमिका नामक भिक्षु प्रतिभा को गुण पच्चास रात्रि-दिन और एक सौ छन्नुं दत्तियों से सूत्र में कहे अनुसार यावत् आराधन कर जहां आर्य चंदन बाला साध्वी थी वहां आई, आकर आर्य चंदन बाला साध्वी को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर इस प्रकार कहाः— हे साध्वीजी! आप की आज्ञा हो तो मैं अष्ट अष्टमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार कर विचरने की इच्छा करती हूं। तब साध्वी ने कहा किः—हे देवानुप्रिया! जिस में तुझे सुख उत्पन्न हो वह तप कार्य करने में विलंब मत कर।

मूल—तए णं सा सुकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अब्भणुण्णाया समाणी अट्ठट्ठामियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, पढमे अट्ठए एक्केक्कं भोयणस्स दत्तिं पडिग्गाहेति, एक्केक्कं पाणयस्स जाव अट्ठमे

अट्ठए अट्ठट्ठ भोयणस्स पडिग्गाहेति, अट्ठ पाणगस्स। एवं खलु एयं अट्ठट्ठमियं भिक्खुपडिमं चउसट्ठीए रातिंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहित्ता नवनवमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। पढमे नवए एक्केक्कं भोयणस्स दतिं पडिग्गाहेति एक्केक्कं पाणयस्स जाव नवमे नवए नव नव दतिं भोयणस्स पडिग्गाहेति, नव नव पाणयस्स। एवं खलु नवनवमियं भिक्खुपडिमं एकासीतीराइंदिएहिं चउहिं पंचोत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता जाव आराहित्ता दसदसमियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। पढमे दसए एक्केक्कं भोयणस्स दतिं पडिग्गाहेति एक्केक्कं पाणयस्स जाव दसमे दसए दस दस भोयणस्स दत्तिं पडिग्गाहेति दस दस पाणयस्स। एवं खलु एयं दसदसमियं भिक्खुपडिमं एक्केणं राइंदियसएणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहेति, आराहित्ता बहूहिं चउत्थ जाव मासद्धमासविविहतवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरति।

अर्थः—उसके बाद वह सुकृष्णा साध्वी आर्य चंदन बाला साध्वी की आज्ञा लेकर अष्टअष्टमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार कर विचरने लगी। इस में पहले आठ दिन तक भोजन की एक २ दत्ति

अर्थः—इसी प्रकार महा कृष्णा साध्वी का वर्णन जान लेना चाहिये। विशेष यह है कि वह छोटी सर्व तो भद्रा नामक प्रतिमा को ग्रहण कर विहार करने लगी। वह इस प्रकार है:—पहिले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके फिर छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अठ्ठम करे, अठ्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अठ्ठम करे, अठ्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अष्ठम

मूल—तए णं सुकण्हा अज्जा तेणं ओरालेणं जाव सिद्धा। निक्खेवो अज्झयणं। (सू० २१)।

अर्थः—उस के बाद वह सुकृष्णा साध्वी वैसी उदार तपश्चर्या द्वारा यावत् अनशन कर अष्ट कर्मों का क्षय करके सिद्ध पद को प्राप्त हुई। इस प्रकार इस अध्ययन का निक्षेप यानी व्याख्यान पूर्ण हुआ (सू० २१)

मूल—एवं महाकण्हा वि, णवरं खुड्डागं सव्वओभद्दं पडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा—चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठ करेति, छट्टं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करेति, छट्टं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्टं करेति, छट्टं करेत्ता सव्वकामगुणियं

पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेता, सव्वकामगुणियं पारेति। एवं खलु एवं खुड्डागसव्वतोभद्दस्स तवोकम्मस्स पढमं परिवाडिं तिहिं मासेहिं दसहिं दिवसेहिं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता दोचाए परिवाडीए चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता विगइवज्जं पारेति, विगइवज्जं पारेत्ता जहा रयणावलीए तहा एत्थ वि चत्तारि परिवाडीओ पारणा तहेव। चउण्हं कालो संवच्छरो मासो दस य दिवसा, सेसं तहेव जाव सिद्धा, निक्खेवो अज्झयणं (सू० २२) ॥

और पानी की एक २ दत्ति ग्रहण करे। इसी प्रकार एक २ दत्ति बढ़ाते हुए यावत् आठवीं अष्टमिका में आठ दिन तक भोजन की आठ २ दत्ति और पानी की आठ २ दत्ति ग्रहण करे। इस प्रकार निश्चय करके यह अष्ट अष्टमिका नामक भिक्षु प्रतिमा चौसठ रात्रि दिन से और दो सौ अठ्ठाईश दत्तियों से सूत्र में कहे अनुसार आराधन करके नव नवमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को अंगीकार कर विहार करने लगी। इस में पहले नौ दिन तक भोजन की एक एक दत्ति और पानी की एक २ दत्ति ग्रहण करे। इसी प्रकार हरएक नवमिका में एक २ दत्ति बढ़ाते हुए यावत् नवम नवमिका में नौ दिनों तक भोजन की नौ नौ दत्ति और पानी की नौ नौ दत्ति ग्रहण करे। इस प्रकार निश्चय करके यह नवम नवमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को एकाशी रात्रि दिनों में और चार सौ पांच दत्तियों से सूत्र में कहे अनुसार आराधन करके फिर दशम दशमिका नामक भिक्षु प्रतिमा को ग्रहण करके विहार करने लगी। इस में पहले दश दिन तक भोजन की एक एक दत्ति और पानी की एक २ दत्ति ग्रहण करे, यावत् दशम दशमिका में भोजन की दश दश दत्ति और पानी की दश दश दत्ति ग्रहण करे। इस प्रकार निश्चय करके यह दशम दशमिका नामक भिक्षु प्रतिमा एकसौ रात्रि दिनों में और साढ़े पांच सौ (५५०) दत्तिओं से सूत्र में कहे अनुसार आराधन कर बहुत से उपवास बेले, तैले वगैरह यावत् अर्धमहीना और मासक्षमण (एक महीना) वगैरह विविध प्रकार की तपश्चर्या कर के तप-संयम में अपनी आत्मा को भावती हुई विहार करने लगी।

करे, अट्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकाम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अट्ठम करे, अट्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अट्ठम करे, अट्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, इस प्रकार निश्चय करके इसी तरह छोटी सर्वतोभद्रा नामक तपश्चर्या की पहली परिपाटी तीन महीने और दश दिन की सूत्र में कहे अनुसार यावत् आराधन की, आराधन करके दूसरी परिपाटी में पहिले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके विगई को छोड़ कर पारना करे, विगइ छोड़ कर पारना करने के बाद छठ्ठ वगैरह उपरोक्त तप करे, जैसा रत्नावली तपश्चर्या में कहा है, उसी प्रकार यहां भी चारों परिपाटी में पारना करने का जान लेना। चारों परिपाटी का काल एक वर्ष, एक महीना और दश दिन का होता है।

शेष अधिकार उसी प्रकार यानी काली साध्वी के अनुसार वर्णन करना यावत् वह सिद्ध पद को प्राप्त हुई। इस प्रकार इस अध्ययन का विवरण पूर्ण हुआ (सू० २२)

विशेषार्थः—बड़ी सर्वतोभद्रा प्रतिमा की अपेक्षा यह छोटी होने से लघु सर्वतोभद्रा कहलाती है। सर्व दिशा और विदिशा में भद्रा यानी सम संख्या वाली होने से सर्वतोभद्रा कहलाती है। वह इस प्रकार है-एक से पांच तक के अंक चोतरफ होने से यह प्रतिमा के अन्दर चौतरफ पंदरह २ का जोड़ आता है उसकी स्थापना करने का इस प्रकार है।

सूचना—सम चोरस छः छः लाइन क चौखुणे पांच २ खाने करने यानी कुल पचीश खाने बनाने, फिर पहली लाइन में एक से पांच तक के अंक रखने। जो मध्य का अंक हो उसे दूसरी पंक्ति में पहिले रखकर बाकी के खानों में उसके पीछे के अंक तपके अनुसार अनुक्रम से लिखने, ऐसा करने से छोटी सर्वतोभद्रा प्रतिमा होती है इस प्रतिमा में तपश्चर्या के दिन पिचोत्तर (७५) होते हैं और पारने के दिन पचीस (२५) होते हैं। सब मिलकर एक परिपाटी में सौ दिनऔर चारो परिपाटी के मिल कर चारसौ दिन होते हैं।

लघु सर्वतोभद्रा

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

मूल—एवं वीरकण्हा वि, नवरं महालयं सव्वतोभद्दं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा—चउत्थं करेति, चउत्थं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारित्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करित्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउदसं करेति, चउदसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करेति, सोलसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउदसं करेति, चउदसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करेति, सोलसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता

अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसं करेति, सोलसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुगियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउदसं करेति, चउदसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति. छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति,

चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छंट्ठ करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेनि, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सवव्कामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति,

चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेति, छट्ठं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति। एक्काए लयाए अट्ठ मासा पंच य दिवसा, चउण्हं दो वासा अट्ठ मासा वीसं दिवसा। सेसं तहेव जाव सिद्धा। (सू० २३)

अर्थः—इसी प्रकार वीरकृष्णा साध्वी का भी वर्णन करना चाहिये विशेष यह है कि यह साध्वी महा सर्वतोभद्रा नामक तपश्चर्या को ग्रहण करके विहार करने लगी। वह तपश्चर्या इस प्रकार है:-पहिले चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ करे, छठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अठम करे, अठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित

पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अठ्ठम करे, अठ्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्व काम गुणित पारना कर, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना कर-के छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अठ्ठम करे, अठ्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अठ्ठम करे, अठ्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व कामगुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना

करके, चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छट्ठ करे, छट्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छट्ठ करे, छट्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अष्ठम करे, अष्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके छट्ठ करे, छट्ठ करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके अष्ठम करे, अष्ठम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्व काम गुणित पारना करे, सर्व काम गु-

णित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्थ करे, चतुर्थ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके छठ्ठ करे, छठ्ठ करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अठ्ठम करे, अठ्ठम करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके दशम करे, दशम करके सर्वकामगुणित पारना करे, इस प्रकार एक परिपाटी में आठ महीने और पांच दिन लगते हैं, और चारों परिपाटियों में दो वर्ष, आठ महीने और बीस दिन लगते हैं। शेष सब वर्णन काली साध्वी की तरह यावत् वह बहुत प्रकार का तप कर अनशन कर सर्वकर्मों को क्षय कर अंत में सिद्ध पद को प्राप्त हुई। (सू० २३)

सूचनाः—छोटी सर्वतो भद्रा की तरह यह महा सर्वतो भद्राको भी जान लेना चाहिये। इसमें विशेष यह कि इस तपश्चर्या में एक उपवास से आरंभ कर सात उपवास तक आते हैं। उसकी स्थापना करने की रीति इस प्रकार है:–एक से लेकर सात अंक पर्यंत पहली पंक्ति में लिखने। उसमें जो मध्य का अंक हो वह दूसरी पंक्ति में पहले लिखना और उसके बाद तप के अनुक्रम से शेष अंक लिखने। इस प्रकार महा सर्वतो भद्रा होती है। यहां तपश्चर्या के दिन एक सौ छन्नवे (१९६) होते हैं: और पारने के दिन गुनचास (४९) होते हैं:– इस कारण एक परिपाटी में कुल दो सौ और पैंतालीस (२४५) दिन होते हैं। इस को चार गुणा करने से चार परिपाटी होती हैं। (कुल दिन की संख्या ९८०) महा सर्व तो भद्राकी स्थापना का यंत्र यह है।

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

मूल—एवं रामकण्हा वि, नवरं भद्दोत्तरपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा— दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,

॥१९०॥

सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठारसमं करेति, अट्ठारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति, वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठारसमं करेति, अट्ठारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति, वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति, वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठारसमं करेति, अट्ठारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठा-

रसमं करेति, अट्ठारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति, वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठारसमं करेति, अट्ठारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति, वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसमं करेति, दुवालसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति। एक्काए कालो छम्मासा वीस य दिवसा, चउण्हं कालो दो वरिसा दो मासा वीस य दिवसा, सेसं तहेव जहा काली जाव सिद्धा। (सू० २४)।

अर्थः—इसी प्रकार रामकृष्णा साध्वी का भी वर्णन करना चाहिये विशेष यह है कि- भद्रोतरा नामक प्रतिमा को अंगीकार कर विहार करने लगी। वह तपश्चर्या इस प्रकार है:-पहिले द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश करे,

अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके विंशति करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके विंशति करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके विंशति करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणितपारना करे, सर्व कामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके विंशति करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना

करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके अष्टादश करे, अष्टादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके विंशति करे, विंशति करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके द्वादश करे, द्वादश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चतुर्दश करे, चतुर्दश करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके षोडश करे, षोडश करके सर्वकामगुणित पारना करे, इस एक परिपाटी में छ महीने और वीस दिन का समय लगता है। चारों परिपाटी में दो वर्ष, दो महीने और वीस दिन होते हैं शेष सर्व वर्णन काली साध्वी की तरह कहना चाहिये। यावत् वह सिद्ध पद को प्राप्त हुई। सू० २४

भद्रोत्तरा प्रतिमाकी स्थापना

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

विशेषार्थः—भद्रोत्तरा प्रतिमा को स्थापन करने की विधि इस प्रकार है। पांच उपवास से आरंभ कर नव उपवास तक पहली पंक्ति में पांच से नव तक अंक रखने, फिर जो मध्य का अंक हो उसको दूसरी पंक्ति के शुरूआत में रखना। शेष अंक अनुक्रम से रखने। इस प्रकार पांच पंक्ति करनी. यह छोटी भद्रोत्तरा प्रतिमा जानना।

इस प्रतिमा में तपश्चर्या के दिन एक सौ पिचहत्तर (१७५) हैं और पारने के दिन पचीस (२५) हैं। इससे एक परिपाटी में कुल (२००) दो सौ दिन होते हैं और चारों परिपाटी में चार गुणा करने से (८००) दिन होते हैं।

अथ वाचनान्तर में इन तीनों प्रतिमा के लक्षण की गाथाएँ इस प्रकार प्राप्त होती हैं। दो प्रतिमा के अन्दर अर्थात् छोटी सर्वतोभद्रा में और महा सर्वतोभद्रा में पहले चतुर्थ (एक उपवास) करने का है तथा भद्रोत्तरा नामक तीसरी प्रतिमा में पहिले द्वादश (पांच उपवास) करने के हैं। उसके बाद अनुक्रम से द्वादश (पांच उपवास), षोडश (सात उपवास) और विंशति (नव उपवास), ये तीनों प्रतिमा की पहली पंक्ति के अन्तिम के तप हैं। शेष तपश्चर्या में अनुक्रम से अंक स्थापन करने ॥१॥ अब दूसरी, तीसरी वगैरह पंक्ति की स्थापना के लिये कहते हैं:— पहली पंक्ति में जो तीसरा अंक है उसको दूसरी पंक्ति की रचना में पहले रखना। वह अंक छोटी सर्वतोभद्रा में तीन का है और भद्रोत्तरा में सात का है। इसके बाद अनुक्रम से आगे २ के अंक रखने वह अंक छोटी सर्वतोभद्रा में चार के बाद पांच का है, और भद्रोत्तरा में आठ के बाद नव का अंक है। उसके बाद अन्तिम अंक के बाद जितने खाने खाली रहे हों वे कोठे पहले के एक वगैरह अंकों से पूर्ण कर देने। इस प्रकार करने से सर्वतोभद्रा की दूसरी पंक्ति में अन्तिम पांच के अंक के बाद एक और दो का अंक आता है, और दूसरी भद्रोत्तरा की दूसरी पंक्ति में पांच और छ का अंक आता है। इसी प्रकार दूसरी पंक्ति पूरी होती है। इसी प्रकार ऊपर की अपेक्षा नीचे की पंक्ति करना। ऐसी सब मिलाकर पांच पंक्ति स्थापन करनी, यह रचना छोटी सर्वतोभद्रा और भद्रोत्तरा प्रतिमा के अन्दर जान लेना चाहिये। इस गाथा का अर्थ उपरोक्त कहे हुए

यन्त्र से जान लेना । ॥ २ ॥ अब महा सर्वतोभद्रा की दूसरी, तीसरी वगैरह पंक्ति की रचना करने के लिये उपाय बतलाते हैं महा सर्वतोभद्रा प्रतिमा की दूसरी पंक्ति करनी हो तो पहिली पंक्ति की अपेक्षा चौथे खाने में रहे हुए अंक को आदि में रखना जैसे कि पहिली पंक्ति के चौथे खाने में चार का अंक है वह दूसरी पंक्ति में पहिले रखना । इसके बाद अनुक्रम से दूसरे अंकों को रखने यानी पांच, छ और अन्तिम में सात का अंक रखना । इसके बाद उस पंक्ति में जितने स्थान (तीन) खाली रहे हों उसमें अनुक्रम से (१-२-३) अंक रख कर उस दूसरी पंक्ति को पूरी करनी । इसी प्रकार सात ही पंक्तियां पूर्ण करनी चाहिये । इस प्रकार महा सर्वतोभद्रा प्रतिमा में जानलेना चाहिये ।

मूल—एवं पितुसेणकण्हा वि, नवरं मुत्तावलीतवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तं जहा—चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छट्ठं करेत्ति, छट्ठं करेत्ता सव्वकाम गुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठमं करेति, अट्ठमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दसमं करेति, दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति,

सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता दुवालसं करेति, दुवालसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोद्दसमं करेति, चोद्दसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता सोलसमं करेति, सोलसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठारसमं करेति, अट्ठारसमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकासगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता वीसइमं करेति, वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता बावीसइमं करेति, बावीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउवीसइमं करेति, चउवीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं

करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता छव्वीसइमं करेनि, छव्वीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता अट्ठावीसं करेति, अट्ठावीसं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता तीसइमं करेति, तीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता बत्तीसइमं करेति, बत्तीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चोत्तीसइसं करेति, चोत्तीसइमं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति, सव्वकामगुणियं पारेत्ता बत्तीसइमं करेति। एवं तहेव ओसारेति जाव चउत्थं करेति, चउत्थं करेत्ता सव्वकामगुणियं पारेति। एक्काए कालो एक्कारस मासा पनरस य दिवसा। चउण्हं तिण्हि वरिसा दस य मासा। सेसं तहेव जाव सिद्धा। (सू० २५)

अर्थः—इसी प्रकार पितृसेनकृष्णा साध्वी का वर्णन करना। विशेष यह है कि यह मुक्तावली नामक तपश्चर्या ग्रहण कर विहार करने लगी। यह मुक्तावली तपश्चर्या इस प्रकार है:-पहिले एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके दो उपवास करे, दो उपवास करके सर्वकामगुणित पारना सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित करे, सर्वकामगुणित पारना करके तीन उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक पारना करके तीन उपवास करे, तीन उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करके चार उपवास करे, चार उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, पांच उपवास करके सर्वकामगुणित सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके पांच उपवास करे, पांच उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्व पारंना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित कामगुणित पारना करके छ उपवास करे, छ उपवास करके सर्वकामगुणितपारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके सात पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, उपवास करे, सात उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके आठ उपवास करे, आठ उपवास एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे,

करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके नव उपवास करे, नव उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके दस उपवास करे, दस उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके ग्यारह उपवास करे, ग्यारह उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके बारह उपवास करे, बारह उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके तेरह उपवास करे, तेरह उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके चौदह उपवास करे, चौदह उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके, पंदरह उपवास करे, पंदरह उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना

करे, सर्वकामगुणित पारना करके सोलह उपवास करे, सोलह उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, सर्वकामगुणित पारना करके पंदरह उपवास करे। इसी प्रकार अनुक्रम से घटाते हुए यावत् एक उपवास करे, एक उपवास करके सर्वकामगुणित पारना करे, यह एक परिपाटी का समय ग्यारह महीने और पंदरह दिन होते हैं। चारों परिपाटी में तीन वर्ष और दस महीने लगते हैं। शेष वृतान्त काली साध्वी के अनुसार वर्णन करना यावत् वह सिद्ध पद को प्राप्त हुई। सू० २५.

विशेषार्थः—यह मुक्तावली तपश्चर्या सहज से जानी जासकती है। विशेष यह है कि इसमें प्रथम एक उपवास, फिर दो उपवास से आरंभ कर सोलह उपवास पर्यंत और आंतरे आंतरे एक एक उपवास करना। यह एक बाजू का सिरा हुआ। फिर दूसरे सिरे में पीछे लौटते हुए नीचे एक उपवास, इसके बाद पन्द्रह उपवास से आरंभ कर छठ्ठ पर्यंत एक एक उपवास के आंतरे से करना। फिर अन्त में एक उपवास करना। इस प्रकार गिनने से इस तपश्चर्या का प्रमाण इतना होता है एक से सोलह उपवास तक क दिन १३६, पन्द्रह उपवास से एक उपवास तक के दिन १२०, आंतरा के दोनों सिरे के मिलाकर दिन २८, पारना के दिन ५९, ये सब मिलाकर ११ महीना १३ दिन होते हैं मूल सूत्र में दिन १५ लिखे हैं यह बात समझने में नहीं आती विशेष ज्ञानी गम्य।

जाव आयंबिलसयं करेति, आयंबिलसयं करेत्ता चउत्थं करेति।

अर्थः— इसी प्रकार महासेनकृष्णा साध्वी का वृत्तान्त कहना। विशेष यह है कि—आयंबिल वर्धमान नामक तपश्चर्या ग्रहण करके विहार करने लगी। वह इस प्रकार है:—पहिले एक आयंबिल करे, एक आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके फिर दो आयंबिल करे, दो आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके तीन आयंबिल करे, तीन आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके चार आयंबिल करे. चार आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके पांच आयंबिल करे, पांच आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके छ आयंबिल करे, छ आयंबिल करके एक उपवास करे, एक उपवास करके। इसी प्रकार एक एक उपवास के आंतरे से एक एक आयंबिल को बढाते हुए यावत् सौ आयंबिल करे, सौ आयंबिल करके एक उपवास करे।

मूल— तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा आयंबिलवड्ढमाणं तवोकम्मं चोद्दसेहिं वासेहिं तिहि य मासेहिं वीसेहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेति, जाव आराहेत्ता जेणेव अज्जचंदणा अज्जा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अज्जचंदणं अज्जं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थेहिं जाव भावेमाणी विहरति।

॥२०३॥

अर्थः— उसके बाद उस महासेनकृष्णा साध्वी ने आयंबिल वर्द्धमान नामक तपश्चर्या को चौदह वर्ष, तीन महीने और बीस अहोरात्री से (आयंबिल ५०५० और एक सौ उपवास मिलाकर ५१५० दिन पर्यंत) सूत्र में कहे अनुसार यावत् सम्यक् प्रकार से काया से ग्रहण किये, यावत् आराधन कर जहां आर्य चन्दन बाला साध्वी थी वहां आई। आकर आर्य चंदनबाला साध्वी को वंदना की, नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर बहुत से उपवास यावत् तप-संयम में अपनी आत्मा को भावती हुई विहार करने लगी।

मूल—तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा तेणं आरोलेणं जाव उवसोभेमाणी चिट्ठइ। तए णं तीसे महासेणकण्हाए अज्जाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता जहा खंदयस्स जाव अज्जचंदणं अज्जं पुच्छइ जाव संलेहणा, कालं अणवकंखमाणी विहरति।

अर्थः—उसके बाद वह महासेनकृष्णा साध्वी उस प्रधान तपश्चर्या द्वारा यावत् अतीव २ शोभित होकर रहने लगी। उसके बाद उस महासेनकृष्णा साध्वी को स्कंदक मुनि की तरह एक समय कदाचित् रात्री के पूर्वभाग और अन्तिम भाग के बीच अर्थात् मध्य रात्रिमें विचार उत्पन्न हुवा, यावत् आर्य चंदनबाला साध्वी से उसने पूछा, पूछ कर यावत् संलेखना कर मरने की इच्छा न करती हुई रहने लगी।

मूल—तए णं सा महासेणकण्हा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतिए सामाइयाइं एक्कारस अंगाइं आहिज्जित्ता बहुपडिपुन्नाइं सत्तरस वासाइं सामन्नं परियायं पालइत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरई जाव तमट्ठं आराहेति चरिमउस्सासणीसासेहिं सिद्धा बुद्धा।

अर्थः— उसके बाद उस महासेनकृष्णा साध्वी ने आर्य चन्दनबाला साध्वी के पास सामायिक वगैरह ग्यारह अंग पढकर सम्पूर्ण सत्तरह वर्ष का चारित्र पालन कर एक महीने की संलेखना कर शरीर को क्षीण किया, साठभक्त का (एक महीना) अनशन कर जिस के लिये चारित्र ग्रहण किया था, यावत् उस मोक्ष का आराधन किया, अन्तिम स्वाच्छोश्वास को पूर्ण कर सिद्ध हुई, बुद्ध हुई और मोक्ष को प्राप्त हुई।

अब इस आठवें अन्तिम वर्ग में कही हुई काली वगैरह साध्वियों के दीक्षा पर्याय को प्रतिपादन करने के लिये सूत्र की गाथा कहते हैं।

मूल— अट्ठ य वासा आदी एकोत्तरीयाए जाव सत्तरस। एसो खलु परिआओ सेणियभज्जाणं णायव्वो ॥ १ ॥

अर्थः— पहली काली साध्वी का साठ वर्ष का चारित्र पर्याय था। उसके बाद एक एक वर्ष बढाना यावत् अन्तिम महासेनकृष्णा का सत्तर वर्ष का चारित्र पर्याय था। इस प्रकार श्रेणिक राजेन्द्र की दश स्त्रियोंका दीक्षा पर्याय जानना।

मूल—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवता महावीरेणं आदिगरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स अंगस्स अंतगडदसाणं अयमट्ठे पन्नत्ते। अंगं सम्मत्तं। (सू० २६)

अर्थः— इस प्रकार निश्चय करके हे जम्बू ! श्रमण भगवान् अपने तीर्थ की आदि करने वाले यावत् मोक्ष पद को पाये हुवे श्री महावीर स्वामी ने अन्तगडदशा नामक आठवें अंग का यह अर्थ कहा है। यह आठवां अंग समाप्त हुवा (सू० २६)

मूल— अंतगडदसाणं अंगस्स एगो सुयखंधो अट्ठ वग्गा अट्ठसु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, तत्थ पढमबितियवग्गे दस दस उद्देसगा, तइयवग्गे तेरस उद्देसगा, चउत्थपंचमवग्गे दस दस उद्देसगा, छट्ठवग्गे सोलस उद्देसगा, सत्तमवग्गे तेरस उद्देसगा, अट्ठमवग्गे दस उद्देसगा। सेसं जहा नायाधम्मकहाणं। (सू० २७)

अर्थ:—अन्तगडदशा नामके इस अंग में एक ही श्रुतस्कंध है। उसके आठ वर्ग हैं और आठ दिनों से कहने में आते हैं। इसमें पहिले और दूसरे वर्ग में दस दस अध्ययन हैं, तीसरे वर्ग में तेरह अध्ययन हैं, चौथे और पांचवें वर्ग में दस दस अध्ययन हैं और छट्टे वर्ग में सोलह अध्ययन हैं, सातवें वर्ग में तेरह अध्ययन हैं और आठवें वर्ग में दस अध्ययन हैं। शेष अधिकार ज्ञाताधर्मकथा में कहे अनुसार जान लेना चाहिये। (सू० २७)

। इति अंतगडदसांगसुत्तमट्ठममंगं संमत्तं ।

टीकार्थ— इसमें जिसका व्याख्यान विशेष नहीं किया गया हो वह ज्ञाताधर्मकथा की टीका में से जान लेना चाहिये। इस प्रकार अंतगडदशा सूत्र की यह टीका समाप्त हुई। टीकाकार महाराज अन्त में कहते हैं कि:— अनन्तगमा और पर्याय वाले जिनेश्वर के कहे हुए शासन में सिद्धान्तानुसार जो गमनिका (टीका) कहने में आई है। वह दूसरे गमा को प्राप्त होती है इसलिये इस कृति में जो अशुद्धियां रह गई हों वह सब सत्पुरुषों को संशोधन करलेना चाहिये। इति शुभम्।

॥ इति अंतगडदशा नामक आठवां अंग समाप्त ॥

श्रीहिन्दीजैनागम प्रकाशक सुमतिकार्यालय जैनप्रेस कोटा (राजपूताना) का

—उद्देश—

१—पन्द्रह हजार रुपये सहायता फड में इकट्ठे करके सरल और सुन्दर हिन्दी भाषा में सूत्रों को तथा विशेष उपयोगी ग्रन्थों को प्रकाशित करवाकर हिन्दी भाषी साधु, साध्वी, ज्ञानभण्डार, पुस्तकालय तथा श्री संघ को अल्प मूल्य में या बिल्कुल अमूल्य भेट स्वरूप देने के लिये भगवान् की वाणी का प्रचार करना।

२—दो चार लाख की या मासिक अच्छी आमदनी की बड़ी योजना करके उसके द्वारा हिन्दी अंग्रेजी आदि भाषाओं में जैन सिद्धान्त के तत्व ज्ञान की तथा तमाम जैन उपदेशकों के सार गर्भित मर्मग्राही भाषणों की छोटी छोटी हजारों की संख्या में पुस्तकें प्रकाशित करके भारतवर्ष के तमाम धर्मों की पब्लिक संस्थाओं में और विद्वान् समाज में उनका प्रचार करना जिससे जैनधर्म का प्रचार हो और लाखों जीवों को अभय दान मिले।

३—इस प्रेस में अच्छी सुन्दर और सस्ती छपाई होती है तथा प्रेस की तमाम बचत ज्ञान प्रचार आदि शुभ कार्य में खर्च होगी। अत. अपनी २ छपाई का काम यहां पर भेजने के लिये चतुर्विध श्रीसंघ से प्रार्थना है।

मैनेजर—जैन प्रेस, कोटा.

[illegible]वाचनाप्रकाशनकारिका

श्रीमती आगमोदयसमितिः

स्थापना--श्रीमच्छीतीर्थे २४४१ माघशुक्लदशम्या



वीरसवत २४४६ भाद्रपदशुक्लप्रतिपदा । शास्त्र मर्वत्रग चक्षु, सर्वज्ञानशिरोमणि । विक्रमसवत् १९७६ ख्राइष्टसन १९२०